आध्यात्मिक
युद्धकला
विवरण पुस्तिका

बाइबिल , सुसमाचारी दृष्टिकोण से
(संसोधित और उत्परिवर्तिरत 2021)
'' क्योकि हम शैतान की युक्तियो से अनजान नहीं हैं '' 2 कुरिन्थियों11- 2:5

कॉपीराइट1995 ,2007 , 2010 ,2016 ,2019 ,2021

त्वरित संदर्भ मार्गदर्शिका

परमेशवर का कवच 54 -59
विजय के लिए अधिकार और शक्ति 37
विश्वासी दानवग्रस्त हो सकते हैं 13 -14
उपयोग के लिए बाइबिल आयते 60 -61 , 71 -76
परिभाषित दानवग्रस्ति 13
दानवग्रसित के रास्ते 21 -36
दानवग्रस्ति करने वाले पाप 30 - 31
उद्धार के लिए कदम 38 - 44
दानवग्रस्ति के लक्षण 19
सामयिक सूचकांक 71 - 76

सुझवी प्रार्थनाऐ

छुटकारे के लिए प्रार्थना 30
पैतृक हमले के लिए प्रार्थना 23
यौन पापो के लिए प्रार्थना 29
पापो की क्षमा के लिए प्रार्थना 30
विवाह के लिए प्रार्थना 49
मैंसोनिक (गुप्त संस्था सदयस्ता) भागीदारी के लिए प्रार्थना 34
मनोगत रहसयमय और नए युग के लिए प्रार्थना 35
मनोगत भागीदारी के लिए प्रार्थना 34
गुप्त समाजो के लिए प्रार्थना 34
आत्म-विनश के लिए प्रार्थना 18
पुत्र या पुत्री के लिए प्रार्थना 48
आध्यात्मिक युद्ध के लिए प्रार्थना 64 - 65
परमेशवर के कवच के लिए प्रार्थना 58 - 59
भय पर विजय के लिए प्रार्थना 17
एक कमरे या घर को शुद्ध करने के लिए प्रार्थना 22
दूसरो को क्षमा करने की प्रार्थना 28
दूसरो को क्षमा करने की प्रार्थना 41

रेव . डा . जैरी सिकमौर

क्रिश्चियन ट्रैंनिंग आग्रेनइजेशन -252 w . स्टेट स्ट्रीट - डोलीस्टोन , पा - 18901

jerry@ChristianTrainingOrganization.org

विषयसूची

परिचय
तो तुम एक युद्ध में हो 2
मूल आवश्यकता : परमेशवर से जुड़े - 3
आध्यात्मिक युद्ध क्यों ? 4
I. दानवग्रस्ति के कमान अधिकारी
क . अच्छे दल 5
परमेशवर - हमारा कमान अधिकारी 5
स्वर्गदूत - हमारे सहायक 5 - 6
ख . बुरे दल 7 - 12
शैतान - दुश्मन कमान अधिकारी 7 - 10
दानव- दुश्मन सिपाही 10 - 11
मृत्यु , अंधकार, आत्मिक अंधापन 12
II. दानवग्रस्ति की विशेषताएं
क . परिभाषित दानवग्रस्ति
ख . रक्षित दानवग्रस्ति 13 - 14
ग . दानवग्रस्ति वर्णत14 - 20
मन और विचार 14
सचाई और धोखा 14
अनिवार्यता , मनोग्रस्ति 15
मानसिक रूप से बीमार , खंडित मानसिकता15 -16
भय 16 -17
क्रोध 17
काटना , बदसूरत , आत्महत्या 17 -18
जिम्मेदारी और दानवग्रस्ति 18
दानवग्रस्ति के सबूत 19
III. दानवग्रस्ति के कारण
क . शारीरिक हमला 21 -22
स्थान का पिछला उपयोग 21
स्थान पर व्यक्तिगत संपत्ति 21
ख . इतिहासिक हमला 22 -26
पूर्वजो / माता - पिता के कार्य 22 - 23
अपने खुद के पिछले कार्य 24 -26
यौन संघ , अभिशाप 24
सवीकरण 25
आत्मा जोड़ , तोडना 26

ग . संबंधात्मक हमला 27
घ . आत्मिक हमला 27 - 31
क्रोध आधारित पाप 28
मूर्तिपूजा आधारित पाप 29
अनैतिकता आधारित पाप 29
गलत आत्मछवि के पाप 29
आम अपराधों की सूची 30 - 31
रहस्मय और नया युग 32
रहस्मय आमतौर पर 32 - 34
गुप्त समाज 34
शैतानियत 35
नया युग 35
मार्शल आर्ट 36
IV. दानवग्रस्ति का इलाज
क . छुटकारे का स्रोत 37
ख . छुटकारे के लिए कदम 38 - 44
ग . छुटकारे के बारे विशेष
शारीरक चंगाई 45 -46
उपवास 46 -47
बच्चे 47 -48
पति - पत्नी 49
माता - पिता और बच्चे 50
कलीसिया की भूमिका 50 -51
V. दानवग्रस्ति से आगे लगातार
क . मुशकल : चल रहा युद्ध 52
ख . हल : चल रहा युद्ध 53
आत्मिक रूप से विकास करे 53
पवित्र आत्मा को सम्पर्ण करें 54
कवच पहने 54 - 59
परमेशवर के वचन का उपयोग करें 60 - 61
सामना करें , स्थिर रहे 61 -62
प्रार्थना 62 -65
दूसरो की सहायता करना 65 -67

समाप्ति में 67
शेषसंगृह
1 . मैं कैसे निश्चित कर सकता हूँ कि मैं एक मसीही हूँ ? 68
2 . मैं कैसे निश्चित कर सकता हूँ कि मैं अभी भी मसीही हूँ ? 69 -70
3 . प्रासंगिक सूची 71 - 96
4 .क्या हमे भाषाओ में बोलना चाहिए ? 77 -79
5 . क्या परमेशवर चाहता हैं कि सब चंगाई पाए ? 80 - 83
वर्णमाली सूचि 82 -83

आप एक युद्ध में हैं

एक दिन एक नौजवान बाहर टहल रहा था। जैसे वह गली में गया उसने एक संकेत देखा जो मुफ्त में दुनिया देखने के लिए साइन अप करने को आमंत्रित करता था, भोजन, आवास, सब कुछ प्रदान किया जायेगा। असल में उसे वेतन भी दिया जायेगा। यह ठीक लग रहा था, इतना ठीक की इसे मान लिया जाए। इसलिए उसने अंदर जाकर अपने नाम के हस्ताक्षर कर दिए। उसके आश्चर्य को उसे एक राइफल और सैन्य उपकरण सौपा गया। वह बहुत जल्द समझ गया की वहां सैनिको की पूरी सेना हैं जो अब उसकी दुश्मन हैं और जिसका शपथ उद्देश्य उसे नष्ट करना था। यह वह नहीं था जिसकी उसने उम्मीद की थी ।

आज बहुत से मसीह हैं जिन्होंने यीशु को आपना उद्धारकर्ता स्वीकार किया, और यह जानकार हैरान हुए कि उनका कोई दुश्मन भी हैं। शायद वह यह उम्मीद करते थे कि जीवन अच्छा और पूर्ण होगा सब कुछ ठीक होगा और आगे कोई समस्या नहीं होगी। उद्धार, हालाँकि लड़ाई खत्म नहीं करता। कई मायनो में यह सिर्फ इसकी शुरुआत हैं ।

आप देखे जब आप यीशु को आपना उद्धारकर्ता स्वीकार करते हैं तो आप शैतान को आपना दुश्मन भी मानते हैं, आप ने शैतान कि सेना को छोड़ उसके दुश्मन कि सेना, परमेशवर कि सेना में शामिल हो चुके हैं। वह परमेशवर का विरोध करता हैं , लेकिन परमेशवर के लोगो पर हमला करने से ही वह परमेशवर का नुकसान कर सकता हैं, मुझ पर और आप पर हमला करके।

तो अब आप अपने आप को एक युद्ध में पाते हैं, जिसे आप नहीं चाहते, जिसे आप पसंद नहीं करते जिसे आप समझ नहीं सकते और जिसे जीतने में आप असमर्थ प्रतीत होते हैं । आप क्या करते हैं ? आप आध्यात्मिक युद्ध के लिए एक त्वरित प्रशिक्षण कार्यक्रम कहाँ पा सके हैं ?

आगे पड़े यह जानकारी आप के लिए हैं -------

दर असल, मुक्ति के बाद युद्ध का यह विचार कोई नयी बात नहीं हैं । हम पुराने नियम में यहूदियों के साथ यही होता देखते हैं । शैतान शुरू से ही परमेशवर का विरोध करता आ रहा हैं , परंन्तु उसे कोई ठिकान नहीं मिलता। जब उसने परमेशवर के प्राणियों के माध्यम से उस पर हमला करना शुरू किया तो उसे खासी प्रगति मिली। पहले अदन मे आदम और हवा थे, फिर अब्राहम इज़हाक याकूब और युसफ। परमेशवर के लोगो को 400 साल तक मिसर की दासता में रहना पड़ा जब तक परमेशवर ने उन्हें आजाद नहीं किया। उसने यह सब किया: उनको मौत के फरिशते से बचाने को निर्दोष खून दिया, और लाल सागर बिना किसी नुकसान पार करने को समर्थ प्रदान की। उन्होंने उसके उद्धार को स्वीकार करने को छोड़ कुछ न किया। फिर उनके लिए लड़ाईयां शुरू हुई, अम्लिकियों ने हमला किया फिर कननियो ने और ऐसा चलता रहा। यहुदीओ को लड़ाई करना सीखना पड़ा। जब उन्होंने अपने अगुवा योहशु, (यूनानी में यीशु) के पीछे लड़ना सीखा तो उन्होने जीत लिया और उस भूमि को बसाया जिसको परमेशवर ने उनकी निज भूमि होने का करार किया था। जब हम अपने जनरल यीशु के पीछे होकर लड़ना सीखते हैं, तो हम भी जीवन में विजय हासिल कर सकते हैं ।

सबसे पहले, यह दुश्मन आप के खिलाफ कौन से हथियारों का उपयोग करता हैं ? बाइबिल कहती हैं ये तीन रूपी हैं –संसार, शरीर और शैतान। संसार से भाव हैं शैतानी प्रणाली पर आधारित विचारो, लोगो, गतिविधियों, उदेश्यों, लक्ष्यों, प्राथमिकताओं, मूल्यों की संगठित प्रणाली से हैं (1यूहन्ना 2:15, यूहन्ना 15:19) । संसार प्रकति का उल्लेख नहीं हैं ,परन्तु परमेशवर के मायनो का शैतान के द्वारा लिया गया नकली विकल्प हैं। सहकर्मी, दवाब अस्वीकृति, उत्पीड़न लोगो के साथ होने वाली समस्याएं गर्व, लोकप्रियता,और सफलता की इच्छा ये सभी ऐसे तरीके हैं जिन से शैतान हम पर संसार के माध्यम से हमला करता हैं . (मत्ती 4:8-10,12:26)

जब कि ये हमले बाहर से होते हैं, हमारे खुद के भीतर भी एक शत्रु हैं हमारा आपना शरीर | शरीर से हमारा मतलब हैं हमारा पुराना पापी स्वभाव, स्वाभाविक रूप से आत्मा केंद्रित, पाप से भरी, घमंडी, इच्छाशक्ति और अपरिपकव होने की प्रवत्ति (रोमियो 7:15-25, गलतियों 5:19-20)। यहां तक की शरीर में जिसे हम अच्छा कहते हैं वह गंदे चीथड़ों के सामान हैं (यशयाह 64:6)। इसके फलस्वरूप हम पाप करते हैं। बुरी बातें सोचना और बुरे काम करना पाप हैं, बुरे मकसद के लिए अच्छे काम करना, या वह अच्छे काम न करना जो किये जाने चाहिए, भी पाप हैं। चिंता करना, डरना, क्रोधी होना लालची होना अपनी वासना को पूरा करना, सिर्फ अपने बारे में सोचना आत्मनिर्भर महसूस करना, आत्म सात्विक, ईर्ष्या करना चुगली करना और निंदा करने की अजमाइश प्रलोभन शरीर के माध्यम से आते हैं । (इफिसियो 4: 22-27)

यह पुस्तिका आपको आध्यात्मिक युद्ध में मदद करने के लिए रूपांकित की गयी हैं । यह दुश्मन के साथ आपकी लड़ाई और यीशु में विजय कैसे हासिल करनी हैं उसका सारांश करेगी। यह मेरी आध्यात्मिक युद्ध पुस्तिका 1995 का अध्यतन और विस्तारित संस्करण हैं यह उसकी जगह पर हैं ।

बुनियादी आवश्यकताएं : परमेशवर की सेना में शामिल होने के लिए।

जैसे भौतिक सिद्धांत हमारे चारो ओर ब्रम्हांड को नियंत्रित करते हैं वैसे ही आध्यात्मिक सिद्धांत भी हैं जो परमेशवर के साथ हमारे सम्बन्धो को नियंत्रित करते हैं। पहला और सबसे बुनियादी सिद्धांत हैं कि परमेशवर हमसे प्यार करता हैं और हमारे जीवन के लिए एक अध्भुत योजना रखता हैं (यूहन्ना 3:16) लेकिन जब पाप ने संसार में प्रवेश किया तो इसने मनुष्य को हमारे पवित्र परमेशवर से अलग कर दिया (रोमियो 2:23) । एक न्यायी और धर्मी परमेशवर के द्वारा पाप को अनदेखा नहीं जा सकता, परन्तु इसके लिए भुगतान किया जाना चाहिए और क्यों कि हमारे पापों के लिए भुगतान करने का कोई रास्ता नहीं हैं, परमेशवर खुद अपने महान प्यार में हमारे पापो के लिए भुगतान बना। वह पहला क्रिसमस इस तथ्य को दर्शाता हैं कि उसने स्वेछा से धरती पर एक इंसान के रूप में आने के लिए स्वर्ग छोड़ दिया ।

हालांकि हम क्रिसमस पर यीशु के जन्म का जश्न मनाते हैं । लेकिन हम जानते हैं कि वह सिर्फ हमे त्यौहार देने के लिए पैदा नहीं हुया था जहां हम उसे एक बच्चे के रूप में याद करते हैं- वह हमारे पापो की कीमत चुकाने के रूप में मरने के लिए पैदा हुआ था। हम एक बच्चे के रूप में यीशु की आराधना करते हैं, लेकिन कहानी यहाँ, समाप्त नहीं होती। वही यीशु बड़ा हुआ और उन सब से होकर गुजरा जिन से हम भी जीवन में होकर गुजरते हैं ।

उसे अस्वीकार कर दिया गया और सूली पर चढ़ा दिया गया, लेकिन सूली पर मरते समय उसने हमारे संभवत पापो की अनंत सजा को सहन किया। दूसरे शब्दों में वह हमारे नर्क से होकर गुजरजने की जगह नर्क से होकर गुजरा ताकि हमे न गुजरना पड़े (रोमियो 5:8)। क्योकि वह मनुष्य था वह हमारा प्रतिनिधित्व कर सकता था और हमारी जगह ले सकता था , क्योकि वह परमेशवर था इसलिए उस दंड को सहन कर सकता था जिसका हम कभी भी अनुभव नहीं कर सकते। क्रूस के अंत में यीशु ने कहा **यह पूरा हुआ** और उसकी आत्मा स्वर्ग लौट गयी। उसका शरीर एक कब्र में रखा गया लेकिन तीन दिन बाद जीवन में वापस आ गया, यह साबित करते हुए की पाप और मृत्यु पर हमेशा के लिए विजय प्राप्त की गई थी।

आज वह स्वर्ग में हैं । वहां उसने हमारे लिए एक जगह बनई हैं , अगर हम केवल उस उपहार और आनंद को जो उसने पेश किया हैं स्वीकार करते हैं । मुक्ति हर व्यक्ति के लिए मुफ्त उपलब्ध हैं (इफिसियो 2:8-9) लेकिन यह एक ऐसा उपहार हैं जिसे हमे स्वेच्छा से अपनी आवश्यकता को पहचान कर प्राप्त करना चाहिए और उसे हमारे पापो को क्षमा करने और हमारे जीवन में वास करने की विनती करनी चाहिए। (यूहन्ना 1:12) । तब वो हम मे वास करता है और जीवन में नया अर्थ और क्षमता देता हैं। यदि आपने इस अध्भुत मुफ्त उपहार को ग्रहण नहीं किया हैं तो परमेशवर से उद्धार का उपहार मांग ले।

जबकि कोई विशेष या जादुई शब्द उपयोग करने के लिए नहीं हैं यहां परमेशवर से मुक्ति के लिए मुफ्त उपहार को स्वीकार करने के लिए प्रार्थना करने का विचार हैं । शब्दों का कहा जान नहीं परन्तु उसका मतलब हैं जो अंतर लाता हैं यह प्रार्थना का नमूना हैं जिसका आप उपयोग कर सकते हैं ।

प्रिय यीशु मै पहचानता हूँ की मुझे आपकी आवश्यकता हैं। मै जनता हूँ की मै पाप करता हूँ और आप की दृष्टि में दोषी हूँ। स्वर्ग छोड़ कर पृथ्वी पर आने और मेरे पापो के लिए सूली पर मरने के लिए मै आप का धन्यवाद करता हूँ। मै जानता हूँ आपने क्रूस पर मेरा अनंत लानत को अपने ऊपर ले लिया और उसका मूल्य भुगतान किया । कृपया मुझे पापो की क्षमा दे और अपनी पवित्र आत्मा से भर दे। मै आपके मुफ्त दिए जाने वाले मुक्ति के उपहार को स्वीकार करता हूँ। मै केवल आप के लिए जीना चाहता हूँ। मै अपने जीवन में आपको पहला स्थान देता हूँ और आपकी सेवा करना चाहता हूँ। मैं अन्य हर शक्ति का इंकार करता हूँ और उसका अपने जीवन पर प्रभाव डालने से रोकता हूँ। प्रिय यीशु मुझे भर दे और मेरा उपयोग करे मुझे सुनने और उत्तर देने के लिए मै आपका धन्यवाद करता हूँ। यीशु के नाम पर प्राथना करता हूँ। आमीन

देखे, अगर आप ने पहले कभी यह या इस तरह से प्रार्थना की हैं तो आप नया जीवन पाए हुए परमेशवर के परिवार में हैंऔर कोई आप की मुक्ति को छीन नहीं सकता । शैतान का पहला झूठ हमे अपने कोई उद्धार पर संदेह कराना हैं , यह सवाल करना कि क्या हम परमेशवर की संतान हैं या नहीं। अगर आपको शक हैं की कहीं आपने पहले ऐसा नही कहा हैं , तो अभी प्रार्थना करे, आपना नाम और दिनाक लिखें आप वास्तव में जान लेंगे की आप परमेशवर की संतान हैं और परमेशवर की सेना मे हैं ।

नाम..... दिनांक.....

आध्यात्मिक युद्ध क्यों ?

आज ऐसे लोग है जो कहते हैं की मसीही लोगो का आध्यात्मिक युद्ध में शामिल होना नहीं बनता परन्तु बजाए इसके उन्हें केवल परमेशवर पर भरोसा रखना हैं और उसके बारे में सोच विचार करना हैं । जब की परमेशवर ही हमारा एकमात्र केंद्र हैं , उसने हमे इस क्षेत्र में विजय पाने के लिए उपयोग करने को उपकरण दिए हैं। उसने हमे भौतिक क्षेत्र में उपयोग करने के लिए चिक्त्सियाज्ञान दिया है, आधियत्मिक क्षेत्र में हमारी मदद करने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान भी प्रदान किया हैं । पौलुस ने हमे यह सुनिश्चित करने के लिए कहा हैं कि हम शैतान के उपकरणों से अनजान न रहे। (2 कुरिनिथियो 2:5- 11)। हमे इन संसाधनों को समझना और उनका उपयोग करना हैं, जो उस ने प्रदान किया हैं । मै विश्वास करता हूँ कि परमेशवर हमे आध्यात्मिक युद्ध में शामिल होने की आज्ञा देता हैं (1 तीमुथियुस 6:12)। यहां कुछ कारण हैं :

1. बाइबिल हमे आध्यात्मिक युद्ध का उपयोग करने की आज्ञा देती हैं।

हमारा संघर्ष खून और मांस के खिलाफ नहीं प्रन्तु सिध्दांतो आदि के खिलाफ हैं । इफिसियो 6: 10-12 हम शैतान के उपकरणों से अनजान नहीं हैं (2 कुरिन्थियों 2:11) हमे आपने दुश्मन से लड़ने से पहले उसको समझना हैं (लागत की गिनती) लूका 14:31, इफिसियो 5 में कवच-, अगर वहां कोई आध्यात्मिक लड़ाई चल ही नहीं रही थी तो हमे कवच क्यों दिया जाएग।

अगर परमेशवर संप्रभु हैं तो हमे शैतान से लड़ने की क्यों जरुरत हैं ?

अगर परमेशवर संप्रभु हैं, तो हमे प्रार्थना करने की ,गवाही देने की, विश्वास करने की, आपने पैसो के लिए काम करने की, सावधानी से गाड़ी चलाने की, डॉक्टर के पास जाने की, या इन में से किसी भी काम की क्या जरूरत हैं ? अगर हम परमेशवर पर भरोसा करते हैं ? तो हम रात को अपने दरवाजे कयो बंद करते हैं ? कुछ ऐसी चीज़े हैं जिनको परमेशवर की सामर्थ में हमारे द्वारा किये जाने की परमेशवर उम्मीद करता हैं । ऐसा करने में हम उस पर भरोसा करना सीखते हैं। यहूदियो को कानान की भूमि दी गई थी, परन्तु उसमे रहने के लिए उनको युद्ध सीखना पड़ा। जब हम उनके प्रावधान, पराक्रम और उद्धार को देखते हैं तो हम उसकी अधिक प्रशंसा करते हैं । हम दुसरो के लिए प्रार्थना करने और मार्गदर्शन करने में बेहतर होते हैं। इसके अलावा हम पाप की भयंकरता और उसके परिणामो को देखते हैं ताकि हम इससे आसानी से मुड़ सके। जब वह हमे विजय के लिए इस्तेमाल करता हैं हम उसकी महिमा देखते हैं । अन्य लोग इसे देखते हैं और उनकी द्रष्टि में उसकी महिमा होती हैं ।

2. यीशु ने आध्यात्मिक युद्ध का उपयोग किया।

बाइबिल में यीशु शैतान और राक्षसो के बारे में बात करता है। उसने राक्षसो को निकाला और चेलों को शैतान से लड़ना और राक्षसो को निकाल फेकना सिखाया और इसकी आज्ञा दी | (मत्ती 10:8, लूका 10:1 , 17- 20) वह उदास हो गया जब उसके चेले उसके बिना एक दानवग्रस्त बालक को उद्धार नहीं दे सके। (मरकुस 9: 14-29) । धार्मिक शासको ने यीशु पर दोष लगाया (मरकुस 3: 22) और यूहन्ना बपितस्मा देने वाले पर (लूका 7: 33) कि यह दोनों दानवग्रस्त हैं । उसने भी अपने चेलों को राक्षसो को निकाल फेकने कि आज्ञा दी।

3. दुसरो के उदाहरण जिन्होने आध्यात्मिक युद्ध का उपयोग किया।

दानियेल नबी ने तीन सप्ताह तक आध्यात्मिक युद्ध कि प्रार्थना की (दानिएल 10:2-6 , 12-14)।

यिर्मयाह नबी की पूरी सेवकाई आध्यात्मिक युद्ध में से एक थी।

पौलुस दो बार राक्षसो को निकल फेकने में शामिल हुआ और आध्यात्मिक युद्ध के बारे में काफी कुछ लिखता हैं (प्रेरितो के काम 13: 6-12 , 16:16-18, इफिसियो 4:26-27 , 6:10-13, , गलतियों 2:10-13, आदि)

मूसा को शैतानी ताकतों द्वारा चिनौती दी गई (जॉनस और जैमिब्रज - निर्गमन 7:1-11)

कलीसिया के इतिहास में परमेशवर के लोगों के आध्यात्मिक युद्ध में शामिल होने के कई उदाहरण हैं ।

4. व्यक्तिगत अनुभव आध्यात्मिक युद्ध को मदद देता हैं ।

बहुत लोगो की गवाही, जो आध्यात्मिक युद्ध में शामिल थे, मसीही समाज में इसके महत्व को एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में मान्यता देते हैं । यह हमारा एकमात्र उपकरण नहीं हैं विभिन्न कामो के लिए विभिन्न उपकरणों की जरूरत होती हैं । आध्यात्मिक युद्ध कई उपकरणों में एक हैं (प्रार्थना, गवाही, परामर्श, प्रशंसा आदि) जो परमेशवर हमे उचित समय पर उपयोग करने के लिए देता हैं |

5 . अंतिम दिनो का आध्यात्मिक युद्ध पर जोर ।

जैसे जैसे हर्षोन्माद (कलीसिया का उठाया जान) नजदीक आता हैं आध्यात्मिक युद्ध बड़ेगा । महाकलेश के समय यह और भी बड़ जायेगा जैसे शैतानी ताकतों को छोड़ा जायेगा।

I -कमान अधिकारी (सेनपति)

क-अच्छे दल

परमेशवर - हमारा कमान अधिकारी- (सेनपति)

सब कुछ परमेशवर से शुरू होता हैं । सब कुछ उसी से आया हैं । यदि आप परमेशवर की मौजूदगी के बारे अनिश्चित हैं तो आपको आगे बढ़ते हुए इसे आपने दिमाग में स्थापित करना होगा। कृप्या परिशिष्ठ का पेज 79-------81 पढ़े। बाइबिल सब क्षेत्रो में हमारे लिए सर्वोच्च अधिकार हैं जो आज हमारे लिए परमेशवर की सच्चाइयो को प्राग्ट करती हैं । यदि आप बाइबिल की प्ररेणा और सत्यता के बारे में अनिश्चित हैं तो कृपया परिशिष्ठ पेज 82-86 को पढे। जारी रखने के लिए यह आपके दिमाग में पूरी तरह बसना चाहिए। अंत में आपको एक संदेह की शाया से परे विश्वास करना चाहिए क़ि यीशु परमेशवर हैं जो स्वंय पृथ्वी पर आया। यधि अनिश्चित हो तो परिशिष्ट 3 पेज 87 -91 पढ़े। परमेशवर हमारे आध्यात्मिक युद्ध हर के साथ-साथ जीवन के हर क्षेत्र में भी सेनपति हैं ।

फ़रिश्ते हमारे सहायक

सृष्टि

दुनिया को बनाने से पहले परमेशवर ने स्वर्गदूतो को बनाया था (अय्यूब 38:6-7) उसी समय उसने हम में से प्रत्येक को बनाने की योजना बनाई (और पहले से ही हमे अपने दिमाग में जानता था) उसने अनगिनत संख्या में स्वर्गदूतो को बनाया (इब्रानियों 12:22 प्रकाशितवाक्य 5:11) । तब से कोई भी स्वर्गदूत न बनाया गया हैं और न ही नष्ट किया गया हैं । संख्या बिलकुल वही हैं । जो लोग मरते हैं वह स्वर्गदूत नहीं बनते अनंतकाल में हमारा स्वर्गदूतो की तुलना में अधिक वजूद होगा (कुरिन्थियों 6:3)

व्यक्तित्व

परमेशवर ने अपनी छवि में स्वर्गदूतो और मनुष्यो को बनाया हैं जिसमे हम सभी के पास तर्कसंगत रूप से सोचने और तर्क करने के लिए दिमाग हैं (1 पतरस 1:12) , महसूस करने और अनुभव करने के लिए भावनएं हैं (लूका 2:13) और अपनी किस्मत चुनने के लिए एक स्वतंत्र इच्छा हैं (यहूदा 6)। सृष्टि के तुरंत बाद शीर्षदूत (लूसिफर जिसे अब शैतान कहा जाता हैं (यहेजकेल 28:12-15) ने परमेशवर के खिलाफ विद्रोह करने के लिए अपनी स्वतंत्र इच्छा का उपयोग किया (2 थिस्सलुनीकियो 2:4) और परिणाम के स्वरुप स्वर्ग से बाहर निकाल दिया गया ।(यशयाह 14:12-15, यहेजकेल 28:15-17 ,लूका 10:18)। स्वर्गदूतो के पास शैतान या परमेशवर का अनुसरण करने के चुनाव का एक समय का ही विकल्प था । लगभग एक तिहाई ने शैतान के विद्रोह का अनुसरण किया और आपना पहला स्थान खो दिया जिन्हे अब दानव/दानव कहा जाता हैं (प्रकाशितवाक्य 12:4) यह एक मात्रा समय था जब स्वर्गदूतो को अपनी स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग करने का अवसर मिला। वे अब बंद हैं , और आपने स्थान को नहीं बदल सकते (स्वर्गदूत दानव नहीं बन सकते और न दानव स्वर्गदूत बन सकते हैं) । स्वर्गदूतो को नहीं पता हैं कि उन के जीवन मे परमेशवर के अनुग्रह का अनुभव करना कया है । यही कारण है कि वह हमे देखने मे बहुत रुचि रखते है जैसे हम आपना जीवन जीते हैं (1 पतरस 1:12) और बातचीत करते हैं और परमेशवर के अनुग्रह और प्यार को उस रूप में देखते हैं जिसका अनुभव वह व्यक्तिगत रूप से नहीं करते हैं। वह हम पर परमेशवर की अनर्जित कृपा से और परमेशवर से प्रभावित हैं , जैसे हम तो अयोग्य हैं, और हमरे लिए पर परमेशवर के विशेश प्रेम पर वो आचार्यचकित हैं ।

प्रकृति

स्वर्गदूत आत्मिक प्राणी हैं । वह परमेशवर की तरह नहीं हैं इसलिए सब कुछ नहीं जानते। वे एक समय में एक स्थान पर रहने को सीमित हैं । वह सर्वशक्तिशाली या सर्व ज्ञानी नहीं हैं (भजन सहिता 103:20, 2 थिस्सलुनीकियो 1:7) उनका कोई भौतिक शरीर नहीं हैं , लेकिन कभी कभी एक व्यकित के रूप में दिखाई देते हैं (इब्रानियों 13:1)। यह परमेशवर के लोगो की जरूरत में मदद करने के लिए हैं । कुछ के पास शक्ति और महिमा दिखने के लिए पंख होते हैं , लेकिन सभी के पंख नहीं होते। सभी लक्षणो को रखते हुए , हम मर्दाना और स्त्री लिंग कहेगे , प्रन्तु स्वर्गदूतो को हमेशा मर्दाना ही कहा जाता हैं । पुरुष सर्वनाम ही हमेशा उपयोग किये जाते हैं । स्वर्गदूत भिन्न होते हैं , जैसे लोग भिन्न होते हैं : परमेशवर की सेवा में विभिन लक्षणों और कौशल ,क्षमताएं और कार्य में स्वर्गदूत न जनम देते हैं और न दे सकते हैं (मत्ती 22:30 ,मरकुस 12:25) हालाँकि ऐसा लगता हैं की राक्षसो ने किसी तरह नूह के दिनों में बाढ़ से पहले महिलाओ को गर्वभती कर दिया (उत्पत्ति 6:1-4) स्वर्गदूत कभी नहीं मरते (लूका 20:36)।

संगठन

स्वर्गदूत (और दानव भी) सैन्य जैसे फेशन में आयोजित किए जाते हैं जैसे जनरल , कर्नल , लेफ्टिनेंट, सूबेदार, प्राइवेट आदि। इन्हे प्रदानदूत , राजकुमार , शासक , सेराफिम आदि कहा जाता हैं (रोमियो 8:36 , इफिसियों 3:10 , 6:12 , कुलुस्सियों 1:16 , 2:5 । कुछ के पास भौगोलिक क्षेत्रों पर नेतृत्व हैं , अन्य के पास लोगो के समूह पर, जैसे मीकाईल प्रदान स्वर्गदूत इजराइल की देखभाल करता हैं ।

जाहिर तौर पर विभिन्न विशेषताओ और भूमिकाओ के साथ स्वर्गदूत विभिन्न प्रकार के होते हैं :करुब सेराफिम और प्रदान स्वर्गदूत ,सेराफिम (यशायाह 6:2-3 , यहेजकेल 1:27) का आम तौर पर परमेशवर की उपस्थिती से जुड़े हुए होने के कारण क्रोधित रूप हैं । चेरुबीम (उतपत्ति 3:24 , निगर्मन 25:18-22, इबनियो 9:5) का प्रतिनिधित्व पंख, पैर ,हाथ और एक से अधिक चेहरे से होता हैं (यहेजकेल 41:18 , 10:21 । वे पवित्र चीज़ो की रक्षा करते हैं (जीवन के पेड़ की , उतपत्ति 3:24 , वाचा के संदूक की , 1 शमूएल 4:4) प्रदानदूत सर्वाच्च प्राणी हैं , सबसे बड़ी शक्ति और ऐश्वर्या के साथ बनये गए हैं । लूसिफ़र (यशायाह 14:12) एक प्रदान स्वर्गदूत था। मीकाईल (1 थिस्सलुनीकियो 4:16 , यहूदा 9) और जिबराईल (दानिय्येल 8:15 - 26 , 9 :21 -27 , लूका 1:11 -38) मीकाईल और जिबराईल योद्धा स्वर्गदूत हैं (प्रकाशितवाक्य 12:7) जो युद्ध करते हैं (दानिय्येल 10:13,21,12:1)। जिबराईल यहूदियों की देखभाल का प्रभारी प्रतीत होता हैं । अन्य स्वर्गदूत इनके आधीन प्रधिकरण और कार्य के विभिन्न स्त्रो में मौजूद है (इफिसीयो 6:12)। परमेशवर के पास सैन्य ढंग से संगठित स्वर्गदूत हैं जिनकी जनरलों से लेकर प्राइवेट तक एक सैन्य कमान हैं ।

कर्तव्य

स्वर्गदूत के लिए यूनानी भाषा का शब्द हैं अन्जेलोस । एंजेलस जिसका अर्थ होता हैं संदेशवाहक। वास्तव में यह शब्द हमारी बाइबिल में अनुवादित हैं (अंग्रेजी के अक्षर यूनानी के अक्षरो का स्थान लेते हैं प्रन्तु शब्द समान हैं)। अगर इसका अनुवाद अंग्रेजी मे किया गया होता तो हमारे पास स्वर्गदूत की जगह हर बार संदेशवाहक दिखाई देता। यह मूल रूप से उसका कार्य हैं - परमेशवर के संदेशवाहक

(नौकर) वे परमेशवर के सेवक हैं जो परमेशवर के लोगो की मदद करते हैं (इब्रानियों 1:14)। वयक्तिगत स्वर्गदूत बच्चों और विश्वासियों के लिए नियुक्त किए गये मालूम होते हैं (प्रेरितो के काम 12:12) कि वह उनकी विशेष तरीके से मदद करे, परमेशवर अपनी संप्रभु शक्ति का उपयोग करके ऐसे कार्य कर सकता हैं , जैसे कि एक वाहन दुर्घटना को रोकना या किसी बच्चे को गिरने से चोटिल नहीं होने देना आदि, लेकिन आम तौर पर ऐसे काम करने के लिए उसके पास स्वर्गदूत हैं । वे परमेशवर के लोगो कि रक्षा करते हैं (भजन सहिता 34 : 7, 91 : 12 , मत्ती 18:10)। वे प्रार्थनाओ के जवाब लाते हैं (प्रेरितो के काम 12:7) , हलाकि कभी कभी दुषट आतमाये उनका विरोध करती हैं और जवाब आने में देरी होती हैं (दानिय्येल 10:10-21) । वे हमारे भौतिक , आध्यात्मिक और भावनत्मक जरूरतों कि सेवा करते हैं(इब्रानियों 1:14) स्वर्गदूत विश्वासियों को देखते और सीखते हैं (1 कुरिन्थियों 4:9, 1 तीमुथियुस 5;2)। खतरे में वह हमे उत्साहित करते हैं (प्रेरितो के काम 27:23-24)। वह प्रचार में भी मदद करते हैं (लूका 16:22, प्रेरितो के काम 8:26)। वे परमेशवर के लोगो कि देखभाल करते हैं जब वह मर जाते हैं (लूका 16:22 , यहूदा 9:) वे दानवो के खिलाफ लड़ते हैं (प्रकाशितवाक्य 12)। वे परमेशवर के अनुग्रह के बारे में जानने के लिए परमेशवर के बच्चो को देखते हैं (1 पतरस 1:12)।

स्वर्गदूतो के प्रति हमारी प्रतिक्रिया

स्वर्गदूतो के साथ संचार नहीं किया जा सकता , आदेश नहीं दिया जा सकता या किसी भी तरह से हमारे द्वारा संपर्क नहीं साधा जा सकता। वे परमेशवर कि महिमा को नहीं चुराते। हमे किसी भी तरह उन पर आपन ध्यान केंद्रित नहीं करना हैं ,और न ही उनकी पूजा करनी हैं (प्रकाशितवाक्य 19:10)। सारा श्रेय और गौरव सब उसी को जाता हैं (प्रकाशितवाक्य 4:11 , 5:9-11) सारा ध्यान उसी का हैं । बाइबिल में जब किसी के उन्हें श्रेय देने की कोशिश की तो उन्होंने इसे परमेशवर को दे दिया। हम उनके साथ संवाद करने के लिए नहीं हैं , लेकिन हम परमेशवर से बिनती कर सकते हैं कि वह उन्हें हमारे लिए विभिन्न जरूरतों को पूरा करने के लिए भेजे। और हाँ वह उसी समयप्रगटहोते हैं । बाइबिल में ऐसी कई घटना हैं । कभी कभी वे आध्यात्मिक प्राणी के रूप मेंप्रगटहोते हैं । मुझे लगता हैं कि छोटे बच्चे वयस्कों कि तुलना में उन्हें बहुत आसानी से देख या समझ सकते हैं । वह लोगो के रूप मे भी प्रगट होते है और हमारी मदद करते हैं बिना हमारे इस बात को जाने कि वह स्वर्गदूत हैं । इब्रानियों 13:2 इसके बारे में बात करती हैं । स्वर्गदूत हमेशा हमारी चारो ओर मौजूद होते हैं खासकर जब हम यीशु के नाम में अन्य विश्वासियों से साथ इकट्ठा होते हैं । हलाकि हम उन्हें कभी नहीं देख सकते जब तक परमेशवर हमरी आँखों को एक विशेष तरीके से नहीं खोलता। इसकी बहुत संभावना हैं कि आप ने स्वर्गदूतो को देखा हैं परन्तु लोगो के रूप में ,और इसलिए उन्हें एक स्वर्गदूत के रूप में मान्यता नहीं दी (इब्रानियों 13:2) वह अजनबी जो सही समय पर मदद प्रदान करने के लिए दिखाई देते हैं जिसे हम स्वर्गदूत कहते हैं , वह सही मायने में एक स्वर्गदूत हो सकता हैं ।

ख - बुरे दल

शैतान - दुश्मन सेनापति

शैतान का अस्तित्व - दुर्भाग्य से हम ऐसे समय में रहते हैं जब अधिक लोग शैतान की तुलना एक पौराणिक प्राणी में विश्वास करते हैं । जो लोग उस पर विश्वास करते हैं वह उसे उससे भी ज्यादा छोटा बना देते हैं, जितना छोटा वो है ।

अगर आप शैतान को केवल बुराई से रूप में देखते हैं तो आप का शैतान बहुत छोटा हैं । एक पूँछ, त्रिशूल,लाल सूट में शैतान की तस्वीर प्राचीन काल से आती हैं । जब लाल का अर्थ मृत्यु ,सींग का अर्थ शक्ति और पूछ और खुर पशु का प्रतीक होता था । शैतान न की बुराई का प्रतिक हैं परन्तु एक वास्तविक जीवत व्यक्तित्व है। आपका शैतान बहुत छोटा हैं यदि आप उसे लम्बे समय से पहले या दूर स्थानों के लिए भेजते हैं ,वह बहुत छोटा हैं यदि आप मानते हैं कि वह मसीहीयों को अकेला छोड़ देता हैं (यह उसके सबसे बड़े झुठो में से एक हैं जिसका उपयोग वह अपने रास्तो को शिपाने के लिए करता हैं) यदि आप यह सोचते हैं की वह चमत्कार और शक्ति के अन्य काम करने में सक्षम नहीं हैं , या आप उसे पहिचान सकते और अपने बल पर जीत सकते हैं, तो वह बहुत छोटा हैं । वह शक्तिशाली हैं, और यहां तक की प्रकृति की शक्तियों जैसे बिजली और तेज़ हवा आदि का उपयोग अपनी इच्छा पूरी करने के लिए करता हैं । (अयूब 1:16,19)

दूसरी तरफ कुछ लोग ऐसे हैं जो शैतान को उस से अधिक शक्तिशाली मानते हैं जितना वह वास्तव में हैं । आपका शैतान बहुत बड़ा हैं यदि आप उसे एक बुरे ईश्वर के रूप में देखते हैं वह परमेशवर के बराबर नहीं हैं । वह एक समय एक ही स्थान पर रहने को सीमित हैं और वह सर्वज्ञानी नहीं हैं । यदि आप उससे डरते हैं और उस से लड़ने की कला सीखने को टालते हैं तो आप उसे बहुत बड़ा समझते हैं । शैतान के बारे में सचाई ये हैं की वह एक स्वर्गदूत के रूप में बनाया गया था। वह परमेशवर के सभी स्वर्गदूतो की सर्वोच्च श्रेणी में था जिसे परमेशवर ने सिर्फ एक ही बार बनाया (यहेजकेल 28:12,15) लूसिफ़र रूप में जाना जाने वाला यह प्राणी परमेशवर की उच्तम रचना था जो परमेशवर के सिंहासन के सबसे निकट था। हालाँकि उसने परमेशवर की सेवा करना न चाहा और परमेशवर की जगह खुद की आराधन करवाने की चाहत रखने लगा (2 थिस्सलुनीकियो 2:4) उसका पाप आत्म-अभिमान था : अभिमान (यशायाह 14:12-15) इसलिए परमेशवर ने उसे स्वर्ग से बाहर फेक दिया (यशायाह 14:12-15)। यहेजकेल 28:15-17, लूका 10:18) उसने अपने सभी पद और विशेषधिकार खो दिए। आपने विद्रोह के पाप के साथ वह ब्रमांड में प्रवेश हुआ।

<u>शक्ति</u> शैतान में बहुत ताकत हैं (इफसीसियो 6:12 ,1:21, प्रकाशितवाक्य 9:3,10, प्रेरितो के काम 26 :18,1 कुरिन्थियों 15:24, कुलिसियो 1:16,2:10,15) उसके पास मृत्यु की शक्ति हैं। (इब्रानियों 2:24, लूका 11:21-22) परन्तु इसे केवल परमेशवर की अनुमति से ही उपयोग कर सकता हैं (अय्यूब 1-2)

वह जाल और योजनओ का उपयोग करता हैं (इफसीसियो 6:11-12) झूठ और धोकेबाज़ी का उपयोग करता हैं (यूहन्ना 8:44) वह सिंह की तरह खाने को भटकता हैं (1 पतरस 5:8)

उसकी शक्ति यीशू की शक्ति से हीन हैं , वह एक समय एक ही स्थान पर हो सकता हैं (कुलुस्सियो 1 :16, 2:10, 15) (दानिय्येल 9:21,10:12-14,20, लूका 8:33) **[वह संप्रभ नहीं हैं जो सब कुछ और सभी पर कुल और पूर्ण अधिकार रखता हो]** (2 कुरिन्थियों 12:7) **सर्वशक्तिमान नहीं हैं (1 यूहन्ना 4:4) सर्वज्ञानि नहीं हैं, (2 पतरस 1:11-12) और सवर्व्यापी नहीं हैं (दानिय्येल 9:21)** वह हमारे खिलाफ परमेशवर की अनुमति के कुछ नहीं कर सकता , और वह जो कुछ कर सकता हैं परमेशवर सीमत करता हैं (अय्यूब 1:12)

हमे हमेशा याद रखना चाहिए के शैतान एक हारा हुआ दुश्मन हैं । वह आपने अभिमान के कारण स्वर्ग में आपने मूल स्थान से बाहर हो गया था (यहेजकेल 28:16,लूका 10:18,यशयाह 14:12) इसका फैसला अदन की वाटिका में सुनाया गया था (उतपत्ति 3:14-15) वह क्रूस से हार गया था (यूहन्ना 12:31) वह कलेश के दौरान पृत्वी पर फेका जायेगा (प्रकाशितवाक्य 9:1, 12:7-12) , और मेलिनियम में बांध दिया जएगा फिर गंदक से जलती हुई झील में हमेशा के लिए डाल दिया जायेगा (प्रकाशितवाक्य 20:7-10 यशायाह 27:1, 40:23-24, 2 थिस्सलुनीकियो 2:8)

<u>किरदार</u>

शैतान के भिन नमो को देखने से हमे उसके किरदारों और कामो को बेहतर समझने में सहायता मिलती हैं ।

एबडॉन , अपोलोन (प्रकाशितवाक्य 1:11) एबडॉन , यूनानी रूप हैं और अपोलोन इसका इब्रानी समकक्ष हैं । इन शब्दों का अर्थ हैं विनशकारी, विनाश। यह शीषर्क उसके विनाश के काम पर जोर देता हैं , वह मनुष्य के साथ परमेशवर के उदेश्य और परमेशवर की महिमा को नष्ट करने का काम करता हैं । वह मानव जाति और समाजो को नष्ट करने का काम करता हैं ।

भाईयो पर दोष लगाने वाला (प्रकाशितवाक्य 12:10) दोष लगाने वाले के लिए यूनानी भाषा का शब्द हैं <u>कथगोर</u> , जो किसी ऐसे व्यक्ति के सन्दिर्भित करता हैं जो दुसरो के खिलाफ निंदा का आरोप लगाता हैं । अय्यूब 1 और 2 के मदेनजर यह परमेशवर और उसकी योजना के चरित्र को ख़राब करने का एक प्रयास भी हैं ।

बिलजेबुल - (मत्ती 12:24 , मरकुस 3:22) इस शब्द के तीन संभावित अक्षर अलग अलग अर्थ रखते हैं (1) " बिल्जेबुल का अर्थ हैं गोबर का स्वामी " कलंकित नाम। (2) बिलजेबूब का अर्थ हैं "मक्खियो का स्वामी" । इन दोनों में से कोई भी एक अशुधता और अपवित्रता के राजकुमार शैतान पर लागु किया गया हैं (3) बिलजेबौल का अर्थ हैं " निवास का स्वामी " यह शैतान को दानवो पर कब्जे का स्वामी रूप में पहचान देता हैं । इन अक्षरों के पीछे कुछ पांडुलिपि सबूत हैं ।

बेलियल (2 कुरिन्थियों 6 : 15) इस नाम का अर्थ हैं " बेकार या निराशाजनक । निरशजनक बर्बाद | मूलयहीनता और सभी मर्तिपूजा का साकार रूप और धर्म का स्रोंत जो निराशाजनक या निरर्थक भी हैं।

दुष्ट- (मत्ती 4:,5,9, इफिसियों 4:27, प्रकाशितवाक्य 12:9,20:2) दुष्ट युननी भाषा का शब्द डायनलॉस से हैं जिसका अर्थ हैं निंदा करने वाला, बदनाम करने वाला। यह परमेशवर के चरित्र और काम पर संन्देह करने के लक्ष्य को पूरा करता हैं ।

ड्रैगन (अजगर) (प्रकाशितवाक्य 12:7) यूनानी का शब्द हैं डरकोन ,जो एक डरावना दानव , एक बड़े सांप को संदर्भित करता हैं । यह शब्द शैतान के करूर , शातिर और खून के प्यासे चरित्र और शक्ति को दर्शाता हैं ।

पापी- (यूहन्ना 17 : 15 , 1 यूहन्ना 5 : 9) यूनानी शब्द पोनेरो का अर्थ हैं दुष्ट , बुरा, बेकार , शातिर , अनैतिक , पतित और आधार हैं । यह शैतान के सर्किय और निदंनीय चरित्र को बताते हैं ।

रोशनी का झूठा फरिश्ता (2 कुरिन्थियों 11 : 14) उसका एक उदेश्य हैं कि वह मनुष्य को परमेशवर के जैसे जितना भी हो सके बनाऐ, लेकिन हमेशा परमेशवर से अलग और बाहर। इस लिए वह परमेशवर और उसकी योजना कि जितनी हो सके और जैसे हो सके नकल करेगा , लेकिन वह हमेशा या तो विक्रतु स्थानपन्न होगा या सत्य के प्रमुख उन सम्रगिरियो को छोड़ देगा जो मसीह के माध्यम से मुकित और पवित्रता की योजना के लिए महत्वपूर्ण हैं ।

झूठ का पिता (यूहन्ना 8 : 44) राक्षसी ताकतों और धोखेबाजी के माध्यम से धोखे के आपने नेटवकृ का उपयोग करते हुए वह परमेशवर के नाम पर झूठे सिध्दांतो को बढ़ावा देता हैं ।

इस विश्ववं या युग का देवता (2 कुरिन्थियों 4 : 4) इस तथ्य के कारण शैतान को संसार का देवता कहा जाता हैं (यूनानी ऐयोनोस , युग) इस अंतिम काल या अर्थव्यस्था पर शैतान के शासन पर जोर देता हैं जो इस द्वारा चिहिन्त हैं अर्थात धर्मत्याग , धोखे और अनैतिकता में बढ़ती हुई वृध्दि।

लूसिफर (यशायाह 14 : 12) लूसिफर के लिए इब्रानी शब्द का शाब्दिक अर्थ हैं <u>एक चमकता हुआ</u> । यह नाम हमारा ध्यान उसकी पूर्व - पतन सिथति और उसके गिराए जाने का कारण बने उसके सुभाव की ओर खींचता हैं -अभिमान।

राजकुमार या शासक (यूहन्ना 12 : 31) यूनानी का शब्दिक अर्थ हैं इस विषव वयवस्था का शासक। यह शैतान की ओर इशारा करता हैं कि वह आज दुनिया में सारी वयवस्था के पीछे प्रमुख और ऊर्जा के रूप में मौजूद हैं ।

हवाओं की शक्तिओ का राजकुमार (इफिसियों 2 : 2) यह शैतान को सब गिरे हुए राक्षसी समुदाय के प्रमुख्य के रूप में दर्शता हैं जो दिन रात हमारे तत्काल आध्यातिमक वातावरण में काम करते हैं जिस पर शैतान का प्रभाव और नियत्रिण होता हैं ।

शैतान (अय्यूब 1 : 6-9 मत्ती 4 : 10) शीर्षक शैतान बाइबिल में 53 बार 47 आयतो में आता हैं । प्राथमिक विचार विरोध हैं ,जो पीछे कि ओर धकेलता हैं ।

सर्प (प्राकशिवाक्य 12: 9) शैतान का यह नाम उतपत्ति 3 और वाटिका में प्रलोभन के लिए दिखता हैं ।

आजमाने वाला (मत्ती 4 : 3 , 1 थिस्सलुनीकियो 3 : 5) यह शीर्षक उसकी प्राथमिक गतिविधियों में से एक साथ प्रगट करता हैं जिसके तहत वह शुरू से अदन वाटिका में हवा के साथ देखा गया।

प्रयोजन

उसका लक्ष्य परमेशवर की जगह दुनिया पर राज करना हैं । उस आदम के पाप करने द्वारा इस विषव वयवस्था पर अधिकार दिया गया और इसलिए हमारी विषव वयवस्था को नियंत्रिण करता हैं । (2 कुरिन्थियों 4 : 4 , इफिसियों 2 : 2, 1 यूहन्ना 5 : 19) वह इस पर शासन करता हैं (मति 4:8-9, यूहन्ना 12:31 , लूका 4:5-7 , यूहन्ना 14:30, 16:11) वह विषव दृष्टिकोण और इसके मूल्यों के पीछे हैं (याकूब 3:15)। वर्तमान में वह राष्टों को धोखा देने के लिए बोलता हैं (दानिएल 10:13,20, मति 4:8, इफिसियों 6:12 , प्रकाशितवाक्य 20:3, 7-8 , 16:14, 1 राजा 22:6-7)। वह मानव जाति को मूर्तिपूजा में ले जाता हैं (भजन सहिता 96:5 ,106:36-38 , लैव्यव्यवस्था 17:7 ,व्यवस्थाविवरण 32:17)। वह विशेष रूप से परमेशवर के लोगो इजराइल को नष्ट करना चाहता हैं (प्रकशितवाक्य 12:13-17, 20:10, 2 थिस्सलुनीकियो 2:9) और कलीसीया को ।

सब लोगो के विरुद काम

वह परमेशवर के सत्य के प्रति सुसमाचार के विरुद्ध मनो को सख्त करता हैं (मति 13:19-22)। वह उनके दिमाग को अंधा कर देता हैं (2 कुरिन्थियों 4:3-4, 2 थिस्सलुनीकियो 2:, लूका 8:12, कुलुस्सियों 2:18)। जब वह सच्चाई सुनते हैं तो शैतान उनके दिमाग से इसे छीनने की कोशिश करता हैं (मरकुस 4:15, मत्ती 13:19)।

वह सच्चाई से इन्कार करता हैं और झूठी शिक्षा को बढ़ावा देता हैं (उतपति 3:1 , 2 तीमुथियुस 4:3-4, 1 तीमुथियुस 4:1-2, 2 थिस्सलुनीकियो 2:9) । जैसे किसी भी जालसाज का सच हैं , वह आपके धोखे को सच्चाई के अधिक से अधिक निकट लाने की कोशिश करता हैं ताकि वह अधिक धोखा दे सके। पवित्रशस्त्र का अधिकार , यीशु का व्यक्तत्व और कार्य और अनुग्रह के द्वारा मुक्ति वह क्षेत्र हैं जिन्हे वह विशेष रुप से अस्पष्ट करने की कोशिश करता हैं , इसलिए सुनिशिचत करे की आप जो कुछ भी मानते हैं वह उसके दिल मे हैं ।

शैतान उन सभी पर जिन पर ला सकता हैं अत्याचार लाता हैं । वह बीमारी के माध्यम से जैसे गूंगापन (मरकुस 9:17-29) , अंधापन (मत्ती 12:22) , विकृति (लूका 13:11 -17) मिर्गी (लूका 9:37-43)

और कई अन्य तरह से। वह उत्पीड़न के लिए ईनका उपयोग करता हैं : मानसिक बीमारी (मरकुस 5:1-20, 9:14-29 , लूका 9:39) पाप (उत्पत्ति 3:13-24 , इफिसियों 2:2) विधिहीनता (2 कुरिन्थियों 6:15) और मृत्यु (प्राकशितवाक्य 18:2,9:13-18)।

<u>विश्वासियों के विरुद्ध काम</u>

शैतान का प्राथमिक उदेश्य परमेशवर के काम और परमेशवर के लोगो का विरोद्ध करना हैं । वह यहूदियों के खिलाफ उत्पीड़न और अत्याचार का नेतृत्व करता हैं । (प्राकशितवाक्य 12:13-17, 20:10, 2 थिस्सलुनीकियो 2:9) | वह विश्वासियों के खिलाफ विशेष रूप से कड़ी मेहनत करता हैं , क्योकि उसके अँधेरे में हम रोशनी हैं और उसके काम और राज्य के खिलाफ एक मात्र खतरा हैं। क्योकि वह अब सीधे यीशु पर हमला नहीं कर सकता हैं इसलिए वह परोक्ष रूप से उसके बच्चो पर हमला करके ऐसा करता हैं । वह परमेशवर के सामने हम पर आरोप लगता हैं (अय्यूब 1:6-21, 2 कुरिन्थियों 2:11, प्राकशितवाक्य 12:9-10, जकर्याह 3:1-2)। लेकिन यीशु हमारे बचाव पक्ष का वकील हैं , जब वह हम पर आरोप लगाता हैं (1 यूहन्ना 2:1)।

शैतान जो कर सकता हैं वह परमेशवर के प्रति हमारी सेवा में बाधा डालता और विरोद्ध करता हैं (2 कुरिन्थियों 4:4, 1 थिस्सलुनीकियो 2:18, 2 कुरिन्थियों 11:2-7, जकर्याह 3:1 , मत्ती 13:19)। वह झूठी शिक्षा से कलीसिया में धुसपैठ करने की कोशिश करता हैं , (1 तीमुथियुस 4:1-2, 2 थिस्सलुनीकियो 2:9) झूठे शिक्षक (1 तीमुथियुस 4:1-3, 1 यूहन्ना 4 :1 , 2 पतरस 2:1-2)और झूठे मसीही (मत्ती 13:38-40)।

जब कि सभी प्रलोभन शैतान और दानवो से नहीं आते , वह निश्चित रूप से सभी पापो में लुभाने के लिए अधिक से अधिक कोशिश करता हैं (2 कुरिन्थियों 2:11 , 1 तीमुथियुस 3:7, 2 तीमुथियुस 2:26) जैसे उसने यीशु को लुभाते समय किया। वह हमारे पाप स्वभाव का इस्तेमाल करेगा। (याकूब 1:14-15) , विशव व्यवस्था (1 यूहन्ना 2:15-16) या सीधे दानवो के हमले के माध्यम से (1 कुरिन्थियों 7:5)। वह क्रोध दिला सकता हैं और इसका इस्तेमाल कर सकता हैं (इफिसियों 4:27) , गर्व (1 तीमुथियुस 3:6 , 1 इतिहास 21:1 , 1 तीमुथियुस 3:6) अनैतिका (1 कुरिन्थियों 7:5), झूठ (प्रेरितो के काम 5:1-3) परमेशवर के वचन और भलाई पर संदेह करना (उत्पति 3:1-5 , लूका 4:9-12) , धोखा देने के लिए चमत्कार (मरकूस 4:8-9 , 2 कुरिन्थियों 11:13-15, 2 थिस्सलुनीकियो 2:3,9-11) , पाखण्ड (यूहन्ना 8:44 , प्रेरितो के काम 17:22) , आत्मनिर्भरता (1 इतिहास 21:1-7) चिंता और भय (1 पतरस 5:7-9 , इब्रानियों 2:14 , भजन सहिता 23:4) , विश्वास की कमी (लूका 22:31-32 , 1 पतरस 5:6-10) , शारीरिक कष्ट (अय्यूब 1:6-22 , 2:1-7 , यूहन्ना 8:44 , 1 कुरिन्थियों 5:5 , 1 तीमुथियुस 1:20) और किसी भी तरह का पाप (1 थिस्सलुनीकियो 3:5 , मत्ती 4:3 , 1 कुरिन्थियों 10:19-21 , 2 कुरिन्थियों 11:3, 13-15 , 1 यूहन्ना 3:8)।

दानव- दुश्मन सैनिक

सृष्टि - जब शैतान ने परमेशवर की सेवा करने की बजाय विद्रोह किया और परमेशवर विरोध का करने का फैसला किया तो लगभग एक तिहाई स्वर्गदूत उसके साथ जुड़ गए (प्राकशितवाक्य 12:4)। वे भी स्वर्ग के बाहर फेक दिए गए और अपनी स्थति और विशेषधिकार खो चुके थे। उन्हें अब दानव कहा जाता हैं । वह सभी स्वर्गदूतो की तरह व्यक्तित्त्व (मन , इच्छा शक्ति , भावनए) तो रखते हैं परन्तु शरीर नहीं। वे एक समय पर एक स्थान पर रहने को सिमित हैं और उनके पास सभी ज्ञान या शक्ति नहीं होती।

चरित्र

दानव का मतलब हैं विनाशकारी, उन्हें दुष्ट या अशुद्ध आत्मा भी कहा जाता हैं , इस तथ्य का उल्लेख करते हुए कि उनके पास एक भौतिक शरीर नहीं हैं । वे आपने पाप और अशुद्धता को किसी भी तरह से फैलाते हैं । वे आध्यात्मिक अंतकवादी हैं जो परमेशवर के राज्य के काम को नष्ट करने की कोशिश कर रहे हैं । मानव आतंकवादियो से जैसे कोई सुरक्षित नहीं हैं , वे भी घातक रूप से गंभीर हैं और उन में कोई नरमी या दया नहीं हैं । वे शैतान की सेवा करते हैं जो उनका सेनापति हैं और उसके आदेशों को पूरा करते हैं । वे मूर्तियों या परमेशवर के अलावा किसी भी चीज को दी गई आराधना प्राप्त करते हैं (1 कुरिन्थियों 10:20)।

संगठन

शैतान आपने दानवो को उसी तरह से संगठति करता हैं जिस तरह से परमेशवर ने अपने स्वर्गदूतो को संगठति किया हैं - एक सैन्य जैसी संरचना में। या सेनापतियों , कर्नलो , मेजरो , लेफिटनंटो , सूबेदारों ,कार्पोरिल्स , गोपनीय आदि जैसे हैं (इफिसियों 6:12)। आमतौर पर एक मजबूत आदमी (या शासक) को एक कार्य सौपा जाता हैं , और उसके पास काम में मदद करने के लिए उसकी आज्ञा के तहित छोटे दानव होते हैं (मत्ती 12:25-29, दानिय्येल 10:2-6,12-14)। इन दानवो के नाम आमतौर पर उनके काम को संकेत करते हैं (डर , क्रोध , वासना , गर्व और धोखा , आदि)।

शक्ति

उनकी शक्ति , हलाकि उनके लिए सिमित हैं क्योकि वह शैतान के आधीन हैं और शैतान परमेशवर के अधीन हैं (अय्यूब 1:12)। वह परमेशवर का उत्तर देते हैं , जैसे हम अय्यूब की किताब में शैतान को उतर देता देखते हैं । वे शक्तिशाली हैं , लेकिन परमेशवर की तरह सर्वशक्तिमान नहीं हैं (यूहन्ना 10:21) वे अतिअधिक चतुर हैं , लेकिन परमेशवर की तरह सव्रज्ञानी नहीं हैं और आपने अंतिम भाग्य को जानते हैं (मत्ती 8:29) वह इधर से उधर जाने में संक्षम हैं लेकिन परमेशवर की तरह सर्वव्यपी नहीं हैं (दानिय्येल 9:21,10:12-14,20, लूका 8:33) वे शैतान के समान अंतिम भाग्य साँझा करते हैं । कुछ तो पहले से ही आंके जा चुके हैं और वे आने वाले न्याय का जंजीरो में बंधे हुए इंतजार कर रहे हैं (2 पतरस 2:4 , यहूदा 6, प्राकशितवाक्य 9:14-15)। अन्य दानव पहले से ही रसातल तक सिमित कर दिए गए हैं (लूका 8:31 , प्राकशितवाक्य 9:11)। जब शैतान को आग की झील में भेजा जायेगा तो यह

सब भी उसके साथ ही वहा जायेगे। (मत्ती 25:41)। शैतान और उसकी सेना हारे हुए दुश्मन हैं , जिन्होंने क्रूस पर यीशु को नाश करने के लिए आपना सब कुछ दाव पर लगा दिया परन्तु बदले में बुरी तरह से पिट गए (इब्रानियों 2:14-15, 1 पतरस 3:18-22)। जब यीशु वापस आएगा तो शैतान और उसके दानवो को हमेशा हमेशा के लिए आग की झील में डाल दिया जायगा (मत्ती 25:41, प्राकशितवाक्य 20:1-15)।

व्यक्तित्त्व

दानव आत्मा प्राणी हैं (इब्रानियों 1:14) लेकिन स्पष्ट रूप से प्रगट हो सकते हैं (उत्पत्ति 18:1-22, 9:1 , इब्रानियों 13:2)। वे अशुद्ध हैं (मत्ती 10:1, 1 शैमूएल 16 :14 , मरकुस 9:25 1 तीमुथियुस 4:1-3 , प्राकशितवाक्य 16:13-14 ,9 :17-19) पापी हैं (लूका 7:21 , मत्ती 12:45) अनैतिक हैं (उत्पत्ति 6) , दुष्ट हैं (इफिसियों 6:12) और झूठे हैं (1 यूहन्ना 4:6, 1 राजा 22:22-23)। उनकी क्षमता शैतान से आती हैं , जो उन्हें सब करने के लिए आदेश देता हैं और शक्ति देता हैं । वह अपनी शक्ति शैतान से प्राप्त करते हैं (मरकुस 5:1-18 प्राकशितवाक्य 16:13-16

सभी के विरुद्ध कर्त्तव्य

दानव शैतान की आज्ञाओ और इच्छाओ को पूरा करते हैं । आदम और हवा को पाप में फ़साने और दुनिया पर अधिकार पाने के बाद , शैतान और उसकी सेना ने परमेशवर को दी जाने वाली उपासना को रोकने और आपने लिए प्राप्त करने की कोशिश जारी रखी। वे अविश्वासियों के दिमाग को अंधा कर देते (2 कुरिन्थियों 4:4) और उनके दिलो से वचन छीन लेते (लूका 8:12) वे परमेशवर के काम का विरोध करने के लिए जो भी हो सकता करते (प्राकशितवाक्य 2:13) क्योकि वह परमेशवर पर हमला नहीं कर सकते हैं इसलिए आपना गुस्सा उन पर निकलते हैं जो परमेशवर के हैं - (आज यहूदी और मसीही)। शैतान और उसकी सेनाए मसीहीयों को झूठ बोलने के लिए लुभाती हैं (प्रेरितो के काम 5:3 , उन पर परमेशवर के सामने आरोप लगाते और उनकी निंदा करते हैं (प्रकाशितवाक्य 12:10) हमारे काम में बाधा डालते हैं (1 थिस्सलुनीकियो 2:18) हमे हराने के लिए हर संभव काम करते हैं (इफिसियों 6:11-12) अनैतिकता के लिए प्रलोभ देते हैं (1 कुरिन्थियों 7:5) और हमारे खिलाफ उत्पीड़न भड़काते हैं (प्रकाशितवाक्य 2:10)। वे मानव बुद्धि को बढ़ावा देते हैं (1 कुरिन्थियों 2:12, 2 कुरिन्थियों 11:4 , 1 यूहन्ना 4:5-6)। वे राष्ट्रों को प्राभावित और नियत्रित करते हैं (दानिय्येल 10:13,20 , इफिसियों 6:12) और इन्हे गुमराह करते हैं ताकि वह उन्हें नष्ट कर सके (यशायाह 9:14)। यह हमेशा ध्यान में रखा जान चाहिए कि बावजूद इन सब के परमेशवर संप्रभु नियंत्रिण करता हैं । वे परमेशवर की अनुमति के बिना कुछ भी नहीं का सकते (अय्यूब 1:6-12)।

शारीरिक रूप से

वे अलौकिक शक्ति दे सकते हैं (मरकूस 5:4) शारीरिक रूप से पीड़ा दे सकते हैं (प्रकाशितवाक्य 9:5,10) , भावनत्मक रूप से पीड़ा दे सकते हैं (1 शमूएल 16:14-23) , चमत्कार करते हैं (प्रकाशितवाक्य 16 :13-14 , 13:12-15) , रोग ला सकते हैं (मत्ती 9:33 , लूका 3:11,16) , मनुष्यो के अंदर वास करते हैं (मत्ती 8:28-34) और पशुओ में वास करते हैं (मत्ती 8:31-32)।

भावनात्मक रूप से

वे पीड़ा देते हैं (1 शमूएल 16:14-23) , डर पैदा करते हैं (1 शमूएल 18:12 , 15 , 2 कुरिन्थियों 11 :4 , 2 तीमुथियुस 1:7 , रोमियो 8:15 , अय्यूब 4:14-15) क्रोध पैदा करते हैं (1 शमूएल 18:10 -11) , ईष्या पैदा करते हैं (1 शमूएल 18:10-15) और विवेक को कठोर करते हैं (1 तीमुथियुस 4:2)।

यौन रूप से

वे अनैतिकता का कारण बनते हैं (प्रकाशितवाक्य 9:21-22 , 2 तीमुथियुस 3:1-9 ,1 तीमुथियुस 4:1-3) और सब प्रकार की अशुद्धता का कारण बनते हैं (जकर्याह 13:2)

मानसिक रूप से

वे बंधूआई पैदा करते हैं (2 कुरिन्थियों 11:4) , मन को प्रभावित करते हैं (उत्पत्ति 3:15 , इफिसियों 6:10-20 , 2 कुरिन्थियों 4:4 , कुलुस्सियों 1:13) , मन को नियत्रित करते हैं (1 कुरिन्थियों 10:20 , 2 कुरिन्थियों 4:4) और लोगो को धोखा देते , गुमराह करते और उन से झूठ बोलते (1 तीमुथियुस 4:1,6, 1 राजा 22:22-23 , 2 इतिहास 18:20-23)।

धार्मिक रूप से

वे झूठे सिंद्धात को बढ़ावा देते हैं (1 यूहन्ना 4:1-3 , 1 तीमुथियुस 4:1 , 1 राजा 22:22 , प्रकाशितवाक्य 16:13) , सच्चाई की नकल करते है (2 कुरिन्थियों 10:20-21) , पाखंड को बढ़ावा देते हैं (1 तीमुथियुस 4:2) , कानूनी भाषा को उसके मतलब से बढ़कर बढ़ावा देते हैं (1तीमुथियुस 4:3) , झूठे नबीयों और झूठे शिक्षकों का उपयोग करते हैं (1यूहन्ना 4:1, 1राजा 22:22-23 , 2 इतिहास 18:20-23) , भाग्योदय और मनोगत प्रथाओं का उपयोग करते हैं (प्रेरितो के काम 16:16 -18) और मूर्तिओ के लिए आराधना प्राप्त करते समय मूर्तिपूजा को बढ़ावा देते हैं (लैव्यव्यवस्था 17:7 ,व्यवस्थाविवरण 32:17 , भजन सहिता106:37 , प्रकाशितवाक्य 9:20, होशे 4:10-12, 5:4, प्रेरितो के काम 16:16, 1 कुरिन्थियों 10:20)।

विश्वासीयो के विरुद्ध विशेष कर्तव्य

वे विशेष रूप से विश्वासीयो के विरुद्ध काम करते हैं और परमेशवर की पूर्व इच्छा का विरोध करते हैं । (प्रेरितो के काम 16:16-18) परमेशवर का अनुसरण करने मे बाधा डालते हैं (1थिस्सलुनीकियो 2:18 , रोमियो 15:22) अन्य विश्वासीयो को भर्मित करने के लिए विश्वासीयो को प्रभावित करते हैं (मत्ती 16:22-23) और इर्षा, अभिमान और तकरार जैसी चीजों के प्रति भड़काते हैं (याकूब 3:13-16) वे विश्वासीयो को परमेशवर की तरफ से भटकने और उसकी मर्जी अनुसार न चलने पर मजबूर करने की ताक में रहते हैं । (1तीमुथियुस 4:1) वे शारीरिक पीड़ा पैदा कर सकते हैं (2 कुरिन्थियों 12:7) और वे हमे खुद की ताकत और क्षमता से संचालित करने की कोशिश करते हैं (2 तीमुथियुस 3:5) जैसे यीशु का पुनआगमन नजदीक आता हैं यह सब कार्य तेज हो जाएगा (1तीमुथियुस 4:1)।

मौत , अन्धकार और आध्यात्मिक अंधापन

शैतान झूठा हैं और झूठ का पिता हैं (यूहन्ना 8:44) दानव उसके लिए यह काम करते हैं । (1राजा 22:22-23 , 2 इतिहास 18:20-23) उस किसी भी तरह के झूठ और छल की महारथ हैं (1यूहन्ना 4:16) और झूठ को आसानी से मनवाने के लिए कुछ सच्चा जोड़ने में उससे बड़कर कोई नहीं हैं । किसी भी जालसाज की तरह उस अपने झूठ व नकली उत्पाद को परमेशवर की सच्चाई मूल रूप में प्रगट करने के महत्त्व का पता हैं । वह झूठ बोलने और धोखेबाजी में बहुत अच्छा हैं । (प्रकाशितवाक्य12:9) और यहां तक की यह प्रतीत करने की कोशिश करता हैं कि वह अँधेरे के बजाय प्रकाश ला रहा हैं । (2 कुरिन्थियों 11:13-15)

वास्तविकता में शैतान की सभी सेनाए अंधेरे के दायरे में काम करती हैं (भय , धोखा , अंधापन भरम , निराशा , अवसाद आत्म दया , क्रोध , बदला, आत्महत्या , मृत्यु आदि) वह मनुष्यों को आध्यात्मिक बातो में अंधा करता हैं (2 कुरिन्थियों 4:4 , 1यूहन्ना 2:11)। वह आध्यात्मिक बातो के लिए मनो और दिलो को कठोर करता हैं (2 कुरिन्थियों 3:14 , इफिसियों 4:18 , रोमियो 1:21)। वह व्यक्तियों के साथ-साथ राष्टों के लिए भी ऐसा करता हैं (यानि इस्राएल -रोमियो 11:7-10)। उसका उदेश्य मनुष्यो को परमेशवर के प्रकाश और उद्धार से दूर रखना हैं (2 कुरिन्थियों 4:4) परमेशवर का प्रकाश शैतान के अन्धकार से अधिक बड़ा हैं (उत्पत्ति 1:14-19 , यूहन्ना 1:5-9 , 3:19-20, 8:12, 9:5 , मत्ती 17:2 , इफिसियों 5:8 , 1यूहन्ना 1:5-7 , प्रकाशितवाक्य 21:11, 23-24 , 22:5 , यशायाह 60:1)। विश्वासी प्रकाश में हैं अंधकार में नहीं (प्रेरितो के काम 26:18 , 1थिस्सलुनीकियो 5:4,5 , कुलुस्सियों 1:12-13, यूहन्ना 8:12)।

अंधकार का प्रतीक मृत्यु हैं । मनुष्य के लिए शैतान की योजना मृत्यु हैं , ठीक उसी के उल्ट जैसे मनुष्य के लिए परमेशवर ली योजना जीवन हैं । शैतान शुरू से ही हत्यारा हैं (यूहन्ना 8:44)। उसके नाम अबादोन या अपोलोन का अर्थ हैं विनाशक। वह भौतक या आध्यात्मिक जीवन को नष्ट करने की कोशिश करता हैं (यूहन्ना 8:44 , मरकुस 9:20-22 , 1यूहन्ना 3:12 , 2 कुरिन्थियों 4:4) शैतान में मृत्यु लाने की शक्ति हैं (अय्यूब 1:19 , लूका 11:21-22, इब्रानियों 2:14, प्रकाशितवाक्य 9:14-16) क्यूंकि मृत्यु की शक्ति क्रूस पर नष्ट हो गयी थी (इब्रानियों 2:14-15) वह परमेशवर की अनुमति के बिना उस शक्ति का उपयोग नहीं कर सकते (अय्यूब 2:6 , प्रकाशितवाक्य 9:4)। शैतान हमे परमेशवर से अलग नहीं कर सकता , यहां तक कि मौत के द्वारा भी नही (रोमियो 8:38)।

शैतान और उसकी सेनओ पर प्रबल होना

परमेशवर शैतान और उसकी सेनओ से बड़ा हैं , (1 यूहन्ना 4:4) , इसलिए हमे उनसे डरने की जरूरत नहीं (लूका 10:17-19)। हमे अपने आप को दीन करना चाहिए , और परमेशवर की शक्ति पर निर्भर रहना चाहिए, न कि हमारे स्वंय पर (याकूब 4:6-7 , 5:16)। पाप और खुले राहो का अंगीकार करे जिन का शैतान आप के जीवन में उपयोग कर रहा है (भजन सहिता 32:5 , 139:23-24) और हर पाप को स्वीकार करे (1यूहन्ना 1:9) परमेशवर की क्षमा को स्वीकार करे और उसकी सहायता से पाप से मुड़े (आमोस 3:3, यहेजकेल 20:43) । प्रार्थना में अपने जीवन के किसी भी खुले रासते पर दावा करे

जिसको शैतान आपके जीवन में इस्तेमान कर रहा हैं (प्रेरितो के काम 19 :18-19, मत्ती 3 :7-8) । प्रत्येक दिन परमेशवर के कवच के साथ अपने आप को छिपा लो (इफिसियों 6 :10 -18) , पवित्र शस्त्र में रहो (भजन संहित 1:1-3) वचन एक दर्पण हैं (याकूब 1:22-25) एक दीपक हैं (भजन सहिता119:105) एक शुद्धकर्ता (इफिसियों 5:25-26) । एक तलवार (इब्रानियों 4:12) और भोजन हैं (1पतरस 2:2 ,मत्ती 4:4) इन सभी के लिए इसका इस्तेमाल करें। निंरतर प्रंशसा और प्रार्थना का जीवन विकसित करें (1थिस्सलुनीकियो5:17)। अन्य विश्वासीयो के साथ निकट संगति में रहें (इब्रानियो 13:5) अपने आप को पूरी तरह से परमेशवर का अनुसरण करने के लिए समर्पण करे (इफिसियों 6:16)

II. विशेषताए

(क) दानवग्रसती परिभाषित

यूनानी शब्द (डिमोन्जिंग) उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जो दानवो से बहुत अधिक प्रभावित होता है। । इसका उपयोग नये नियम में 15 बार किया गया हैं । यह दानवो का किसी के अंदर होने या किसी के ऊपर होने में कोई अंतर् नहीं करता , यदि परमेशवर वह स्पष्टीकरण या भेद नहीं बनाता तो मैं नहीं सोचता की यह कोई ऐसी चीज़ हैं जिसमे हमे अंतर देखना या दिखाना चाहिए। आध्यात्मिक क्षेत्र में कोई स्पष्ट विभाजन नहीं हैं जैसे हम बनने की कोशिश करते हैं (दानवो का अंदर होना या दानवो को किसी के ऊपर होना) बेशक दानवग्रसती के सतर होते हैं जो किसी जन पर निर्भर करते हुए दानवो की दखल अंदाजी और पहुंच आदि को दर्शाती हैं , परन्तु इसको सही ठहराना हर समय न तो संभव हैं न आवश्यक हैं । आम राय यह हैं कि कोई भी व्यक्ति जो दानवग्रसत होते हुए दानवी प्रभाव से अपनी होश को उससे अलग नहीं करता, दानव जो विचार और भावनए उन्हें देता हैं , वे उनको अपनी समझते हैं । एक व्यक्ति के पास हमेशा मदद के लिए परमेशवर की ओर मुड़ने की स्वतंत्र इच्छा होती हैं , परन्तु जब उनका अनुसरण किया जाता हैं जो दानव दे रहा हैं तो यह उसे गहरा बंधक बनती हैं।

शायद दानवग्रसती को एक आध्यात्मिक सम्मोहन के रूप से सोच कर बेहतर समझा जा सकता हैं । सम्मोहन एक ऐसी चीज हैं जिस से परमेशवर के लोगो को बचना जरूरी हैं (भजन सहिता 54:4-5 , यहोशू 1:8 , फिलिप्पियों 4:8)।

हमे दानवग्रसती की सही सीमा जानते की आवश्यकता नहीं हैं , इतना ही काफी हैं, जानने के लिए कि ऐसा कुछ हो रहा हैं । जैसे कारण एक , इलाज भी एक हैं । हम व्यापक रूप से दानवग्रसती शब्द का उपयोग करेंगे , जैसे कि बाइबिल दानवी प्रभाव / कब्जे के पुरे तरंग का जिकर करते हुए बताती हैं । अन्य शब्दों के लिए बाइबिल जिन शब्दों का उपयोग करती हैं वह हैं प्रवेश किए गए (जैसे कि जब शैतान यहूदा में प्रवेश किया - यूहन्ना 13:27) और भरा (के द्वारा भरे जाने के लिए उपयोग किया जाता हैं ((प्रेरितो के काम 5:5) अन्नाय और सफीरा के बारे में) ।

(ख) दानवग्रसती रक्षित

कया एक विश्वासी दानवग्रसत हो सकता हैं ?

जब कि सभी मसीही इस बात से सहमत हैं कि अविश्वासियों को ही दानवग्रसत किया जा सकता हैं , कुछ इसको नहीं मानते कि यह विश्वासीयो के साथ भी हो सकता हैं । दानवग्रसती प्रभाव की बात करता हैं , मालकाना हक की नहीं। एक विश्वासी के पास भी एक संवत्र इच्छा हैं जो दानवो की पहुंच को अपनी आत्मा दे , जैसे अविश्वासी करते हैं । एक विश्वासी की आत्मा केवल परमेशवर से संबंधित है परन्तु ये हम पर निर्भर करता है कि वह परमेशवर की आत्मा को अपने आप पर नियंत्रत करने दे या ना ,जहाँ जक कि दानवग्रसती का संबंद हैं।

बाइबिल विश्वासीयो और अविश्वासियों के बीच कोई अंतर नहीं बनाती। वास्तव में बाइबिल कई विश्वासीयो को संदर्भित करती हैं , जिन्हो ने दानवग्रसती का अनुभव किया : पौलूस के माँस में कांटां एक दानव था (2 कुरिन्थियों 12:7) शाऊल राजा एक विश्वासी था और स्पष्ट रूप से दानवग्रसत था (1शमूएल 11:6,16:14-23) , दाऊद शैतान के द्वारा लोगो की जनगणना करने के लिए प्रेरित किया गया (1इतिहास 21:1, 2 शमूएल 24:1) , अन्नाय और सफीरा विश्वासी थे परन्तु शैतान को भरने की अनुमति दी (प्रेरितो के काम 4:32-35 , 5:3) , यीशु को सलीब पर न जाने के लिए पतरस शैतान का प्रवक्ता बना (मत्ती 16:23) पौलूस विश्वासीयो को चेतावनी देता हैं कि वे शैतान को अपने जीवन में पैर न जमाने दे (इफिसियों 4:26-27) , यह दर्शाते हुए कि ऐसा होना संभव हैं । यीशु ने खुद उद्धार को बच्चो की रोटी कहा (मत्ती 15:22-28) मतलब यह उसके बच्चो के लिए था। एक मसीही अन्य आत्मा प्राप्त कर सकता हैं (2 कुरिन्थियों 11:2-4) और यहाँ विश्वासीयो के दानवग्रसत होने की उदाहरण हैं (लूका 13:10-16 , 1कुरिन्थियों 5:4,5)। मसीहो को इसके खिलाफ चौकसी करने की चेतावनी दी जाती हैं (1पतरस 5:8-9 , इफिसियों 6:10-18)।

एक विश्वासी प्रभु यीशु मसीह से संबंधित हैं । शैतान उसे अब आपना नहीं बना सकता जैसे उसकी मुक्ति से पहले उसने बनाया था (1यूहन्ना 4:4), परन्तु फिर भी वह उस दानवग्रसत कर सकता हैं । जब उत्पीड़ित या काबिज शब्दों का उपयोग किया जाता हैं तो सवाल आ सकता हैं कि क्या एक विश्वासी काबिज हो सकता हैं । इसका उत्तर देने के लिए काबिज शब्द को परिभाषित किया जाना जरूरी हैं । बाइबिल आम तौर पर इसे परिभाषित नहीं करती और न ही इस कब्जे के बारे बात करती हैं । बस दानवग्रस्ति जिसका अर्थ हैं किसी दानव के द्वारा प्रभावित किया हुआ। कोई भी इस पर शक नहीं करता की यह विश्वासीयो के साथ नहीं होता।

जब तक हम शरीर में हैं हमारा स्वभाव पापी हैं , पाप करने की ठीक वैसी ही क्षमता हैं जो मुक्ति पाने से पहले थी। मुक्ति हमारे अंदर एक नये स्वभाव की रचना करती हैं । परन्तु पाप करने की पुरानी क्षमता हमारे अंदर अब भी बनी हुई हैं । यही क्षेत्र हैं , यह पाप का स्वभाव यह पाप करने की क्षमता जिस में दानव काम करते हैं । हमारा नया स्वभाव अधिक बड़ा होने के बावजूद हमारे पाप करने की स्वंत्रत इच्छा शक्ति में चुनाव करने को दूर नहीं करती हैं । पौलूस के संघर्ष का वर्णन रोमियो 7 अध्याय में अच्छी तरह किया गया हैं ।

हालाँकि एक मसीही के पास दानवग्रस्ति से मुक्त होने का हर अधिकार और संसाधन हैं । एक संपत्ति जो आपके पास हैं , उस पर किसी अन्य व्यक्ति द्वारा क़ानूनी उलघन किया जा सकता हैं , परन्तु आपके पास उसे खदेड़ने का हर अधिकार और संसाधन हैं ।

(ग) दानवग्रसती वर्णित

विचार डालने और विचार निकालने

अधिकतर दानवग्रस्ति का यह काम हैं एक व्यक्ति के दिमाग मे विचारो को डालना या किसी व्यक्ति के दिमाग से छीनना। जबकि उनके पास हमारे दिमाग और विचारो की पहुंच उस सीमा तक नहीं हैं , जहाँ तक परमेशवर की हैं , बाइबिल यह स्पष्ट करती हैं कि कुछ हद तक उनकी पहुंच हैं । यीशु ने कहा यह बीज और बीज बोने वाले की बात है: शैतान आता हैं और बोए गए वचन को हटा देता हैं (मरकुस 4:15) दाऊद का जनगणन करने का विचार दानवी थी (1इतिहास 21:1- 2 शमूएल 24:1--------)। इसी तरह से हनन्याह और सफीरा का लालच (प्रेरितो के काम 5:3) और शाऊल का क्रोध (1शमूएल 16:14-23)। इसलिए , आध्यात्मिक युध्द के बारे में बात करते हुए पौलूस यह कहता हैं की हमे हर विचार को मसीह की आज्ञा मानने के लिए कैद में ले आते हैं (2 कुरिन्थियों 10:4-5)। शैतान की सेना केवल हमारे दिमाग में गलत विचार ही नहीं डालती बलकि वह हमारे दिमाग से सही विचार छीन भी सकती हैं (मरकुस 4:15) इसलिए हम भूल जाते हैं ।

आपने दिमाग को आप की भावनओ को सत्य का वर्णन करते दो

भावनाए और एहसास ठीक हैं, महत्वपूर्ण और आवश्यक हैं। वह जीवन के रंग मे आनंद जोड़ते हैं परमेशवर ने उन्हें इस उदेश्य के लिए बनाया हैं । लेकिन उसने उन्हें हमारे निर्णय लेने का स्रोत नहीं बनाया। हमारी भावनओ को हमारे तर्क संगत विचार पर निर्भर होना चाहिए। जब हमारी भावनए इससे आगे या इससे दूर हो जाती हैं तो परेशानी आती हैं । आप अपने मन में जानते हैं कि आप एक सही व्यक्ति हैं , फिर भी आपकी भावनए आपको अस्वीकारीय होने का डर देती हैं । जब भावनए मन के सत्य पर स्थापित नहीं होती तो वे गलत हो जाती हैं । सच्चाई यह हैं कि आप एक अच्छे व्यक्ति हैं , लेकिन आपकी भावनए उस सचाई को अस्वीकार करती है और खुद सोचने का प्रयास करती हैं । मैं अक़्सर लोगो को बताता हूँ कि उन्हें अपने दिमाग को अपनी भावनओ को सत्य समझाने की अनुमति देने की जरूरत हैं । जब हम यह सोचते हैं कि हमारी भावनए हमारे दिमाग से बढ़ कर सही हैं तो हम गलती करते हैं । हमारी भावनओं और एहसास की सबसे बड़ी जरूरतों में एक हैं, सुरक्षा। यह हमारे प्यार के साथ निकटता से जुड़ा हुआ हैं इसलिए हम यह कह सकते हैं कि हमारे दिल का मूल प्यार / सुरक्षा हैं । प्यार को हमेशा सुरक्षा लानी चाहिए पर ऐसा हमेशा नहीं होता। अन्य कारक हमारी सुरक्षा को श्रद्धांजलि दे सकते हैं ।

यदि हम सत्य जानते हैं तो हम कैसे गुमराह हो सकते हैं ?

क्या आपको स्माट के नये कपड़े नामक बच्चो की कहानी याद हैं ? कुछ धोखेबाजो ने उस आश्वस्त किया कि वे बढ़िया कपड़े बना रहे थे , जो केवल प्रबुद्ध ही देख सकते हैं इस लिए उन्होंने उस दिखाने का नटक किया। बाकि सभी ने भी ऐसा किया। फिर परेड में से एक छोटे लड़के ने सच बोला और सभी को एहसास हुआ कि वे झूठ पर विश्वास कर रहे थे और अपने आप को धोखा दे रहे थे। शैतान हमे झूठ पर विश्वास करने का धोखा देता हैं । परंन्तु हम कैसे धोखा खा सकते हैं यदि हम सत्य को जानते हैं ।

1. हम दानवग्रसत हो सकते हैं । जैसे एक शराबी शराब से प्रभावित हो जाता हैं उसी तरह हम भी दानवो के द्वारा।

2. हम धोखा खाना पसंद कर सकते हैं क्योकि हम सच्चाई का सामना नहीं करना चाहते या सच्चाई को पसंद नहीं करते, इस लिए हम खुद को समझाते हैं कि एक झूठ ही सच हैं। हम वास्तव में इस पर विश्वास करना शुरू करते हैं क्योकि हम चाहते हैं ।

3. हम अपनी भावनओ को अपने दिमाग के बजाए प्रर्दशन करने देते हैं। जब हम अपनी भावनओ को वास्तविकता का साथ करने देते हैं तो हम सच को धोखे से बदल देते हैं (उदाहरण के लिए डर से प्रतिक्रिया करते है)।

4. हमारा मन भी दोखा खा सकता हैं, जब हम इसे अंतिम निर्धारिण कारक के रूप में उपयोग करते है, और सोचते हैं कि पूर्ण सत्य इसी से प्राप्त होता हैं । बिना परमेशवर के वचन का (लंगड़) कुंडा जो हमारे मनो को और गलतियों को सही करता हैं । हम केवल उन्ही बातो पर विश्वास करते हैं जो हमारे द्वारा व्यख्या कि गई तर्क पर आधारित होती हैं । लेकिन हो सकता हैं कि हम उनकी सही व्यख्या न कर रहे हो। हालाँकि परमेशवर के पास ही भविष्य को अतीत की तरह स्पष्ट देखने के लिए सभी तथ्य और पूर्ण अंतदृष्टि हैं , इसलिए जब हम उनकी सच्चाई को अस्वीकार करते हैं तो हम किसी भी तरह के धोखे के लिए खुलते हैं ।

5 . शैतान और दानव हमे धोखे में डालते हैं । बेशक वे अपने उत्पाद को काले झूठ के रूप में नहीं बेचते, परन्तु जितना संभव हो उतना आकृषक और अच्छा दिखने वाला बनाते हैं । हम कभी कभी चारा समझ कर घिर जाते हैं ।

6 . दुश्मन से अलग , हमारा स्वाभाविक पापी स्वभाव हमे पाप के लिए जोर देता हैं क्योकि हम अकसर उस मे रुचि रखते है जो आसान और सुखद हैं बजाय इसके कि लंबे समय के लिए सब से अच्छा कया है। हमारा शरीर तत्काल संतुश्टि की कामना करता है और हम कुछ ऐसा चाहते है जो सभी कारण और संतुलन को पीछे छोड़ देता हैं ।

सत्य को मान्यता देना

कैसे आप का दिल सत्य जनता हैं? आप कैसे जानते हैं जब आप का साथी सच्च बोल रहा हैं ? यह ऐसा कुछ नहीं हैं जिसका आप वर्णन कर सकते हैं या अपने शब्दों में बता सकते हैं । यह वह भी नहीं हैं,

जो दूसरे, जो आप के साथी को नहीं जानते , या वे बता सकते हैं । परन्तु आप उन्हें अच्छी तरह से जानते हैं कि सूक्ष्मताए पड़ने में सक्षम हैं और जानने के लिए कि वह क्या संवाद कर रहे हैं । रिश्ते बढ़ने में समय लगता हैं। जितना अधिक समय कोई परमेशवर को सुनने में व्यतीत करता हैं उतना ही बेहतर वह जानता हैं कि परमेशवर क्या बोल रहा हैं । जितना अधिक आप सत्य को सुनते हैं और उसका पालन करते हैं उतना ही बेहतर आप का दिल उसे पहचानता हैं। वास्तव में यह उसका पवित्र आत्मा है जो हमारे विचारो से भी बात करता हैं (भावनओ के साथ साथ) वह हम से अपनी सच्चाई प्रगट करने का वादा जरता हैं । (यूहन्ना 16: 13-15) परमेशवर को सुनने के बारे में अधिक जानकारी के लिए परिशिष्ट 7 और 8 पृष्ठ 101--108 पड़े।

मजबूरीवश और जुनूनी विचार

विचार जो हमारे नियंत्रण में नहीं दो श्रेणियों में आते हैं । मजबूरीवश और जनूनी : जनून एक ऐसी ताकत हैं जो हमारे रुझान के खिलाफ काम करने का कारण बनती हैं । यह हमारे अंदर से आती हैं और हमारे नियंत्रण में नहीं हैं और हमे अप्रिय व्यवहार के लिए प्रेरित करती हैं । यह अक़्सर अंधविश्वास का पालन करने के लिए परंपरा का रूप लेती हैं। यह रोज मरह कार्य के साथ साथ एक अत्यंत विस्तृत या अपमानजनक पाप हो सकता हैं जिसे हम जीतने में असमर्थ हैं । ऐसा लगता हैं कि खुद से ज्यादा कोई दूसरा बल उसे चला रहा हैं ।

जनून एक विचार हैं जो खुद को हमारी इच्छा (आमतौर पर कुछ अप्रिय और पापी) के खिलाफ सचेत विचार में मजबूर करता हैं हमारी स्वतंत्र इच्छा से ख़ारिज नहीं किया जा सकता।

मानसिक बीमारी

दानव मानसिक बीमारी का कारण बन सकते हैं, वे एक आदमी को उसकी सही दिमागी हालत से अलग sकर सकते हैं (मरकुस 15:15) वह चिलाने और खलबली का कारण बन सकते हैं , मुँह से झाग निकलने का (लूका 9:39) वह स्वयं को हानि पहुंचाने वाले कामो और विचारो का कारण बन सकते हैं (मरकुस 9:22) वह एक व्यक्ति को पागल के रूप में प्रगट कर सकते हैं (यूहन्ना 10:20) और वह अनैतिक , असमाजिक व्यवहार का कारण बन सकते हैं जो व्यक्ति को मालूम नहीं होता कि वह मानसिक रूप से बीमार हैं (मरकुस 5:15 , लूका 8:35)

यह नहीं कहा जा सकता कि सभी मानसिक बीमारिया शैतानी हैं । इसमें अन्य कारक शामिल हो सकते हैं जैसे कि रसायनिक, असंतुलना ,जन्म दोष , चोट या दवाई के उपयोग से नुकसान आदि। हालांकि , पूरी तरह से हटाए जाने तक हमेशा दानव ग्रस्ति पर विचार किया जाना चाहिए। यह जानने को यह दानवी हैं या नहीं , यह भी तरीका हैं की व्यक्ति यीशु के बारे में बात करने या सुनने के लिए राजी होता हैं या नहीं, यदि वे सो जाते हैं , विषय को लगातार बदलते हैं , ऐसा मालूम होता हैं , कि वह आपकी नहीं सुन रहे हैं , हिंसक होतना हैं , जल्दी से छोड़ना चाहते हैं आदि , आप के पास यह शक करने का पूरा कारण हैं कि दानव इसमें शामिल हैं

खंडित मानसिकता

सबसे गंभीर मनोवैज्ञानिक विकारो में से एक खंडित मानसिकता हैं । सामान्य तौर पर यह जीवन में रूचि की हानी , विचार विकारो की वापसी और अलग - अलग सतर की विशेषता हैं । सबसे अधिक बार देखे जाने वाले लक्षणो में से हैं : स्वंय को अलग करना और समाज से पीछे हटना , चिड़चिड़ापन विचारो की कल्पना के साथ अत्यधिक दिन -सवपन या पुर्वग्रस्त आत्म दया की विशेषता , भ्रमपूर्ण सोच और उत्पीड़न विचित्र व्यवहार या भाषा की भावनए , और अति - संवेदनशीलता और दुसरो की आलोचना और टिप्पणी करना। मैं इन चीजों में कोई विशेषज्ञ नहीं हूँ लेकिन हर मामले में मैंने देखा हैं कि यह दानवी हो गया हैं (मरकुस 5:6-7)।

डर

डर शैतान के सबसे बड़े हथियारों में से एक हैं । दानव अक़्सर पीछे होते हैं , और भय का उपयोग करते हैं (रोमियो 8:15)। यदि यह असुरक्षा , चिंता , समस्याओ के साथ पुर्वग्रस्त या जो भी हो , ऐसा रूप लेता हैं , यह अभी भी भय हैं । दानवो ने शाऊल में दाऊद का डर डाल दिया (1 शमूएल 18:10-15) और एलियाफज के चेहरे को क्रीड़ा कर के भय और आंतक डाल दिया (अय्यूब 4:15) कोई भी चीज़ जो विश्वास कि नहीं हैं पाप हैं (रोमियो 14:23)। परमेशवर हमे भय नहीं देता (2 तीमुथियुस 1:7 , रोमियो 8:15) इसलिए जब आप डर का अनुभव करते हो तो समझ जाए कि यह परमेशवर से नहीं परन्तु शैतान से हैं , इसका मतलब यह नहीं कि यह हमेशा दानव ग्रस्ति के द्वारा होता हैं , क्योकि आप बिना दानवग्रस्ति से भी भयभीत हो सकते हैं ।

डर तब लगता हैं जब हम परमेशवर के बजाए परिसिथतियों पर ध्यान देना चुनते हैं । पतरस का पानी पर चलना एक अच्छी उदाहरण हैं । जब उसकी नजरे यीशु पर थी तो उसका विश्वास मजबूत था , परन्तु जब उसने अपने मन में उठने वाली लहरों को यीशु कि शक्ति से बड़ी करके देखा तो वह डूबने लगा। हलाकि उसने सही काम किया कि अपनी आँखे वापस यीशु पर लगा दी।

मेरे साथ एक मिनट के लिए सपना ले। मान लीजिए कि आप एक छोटी बच्चे के रूप में हैं और आप का पिता हैं जो आप को हर चीज़ से ज्यादा प्यार करता हैं और लगातार इसे दिखाता था। वह हमेशा आप के लिए मौजूद होता , हमेशा आप को आपना प्यार दिखाता आप के साथ हँसता और आप कि संगति से आनंदित होता। जो कुछ भी आप कि जरूरत होती वह मदद और आपूर्ति के लिए वही होता। आपको यह कैसा लगता ? इस से क्या फर्क पड़ा होता ? हम सभी के अंदर ऐसा कुछ गहरा हैं जो चाहता हैं कि हमरा कोई होता जिस पर हम भरोसा करना पसंद करते , जो हमारी देखभाल करता , और कुछ भी क्यों न होता वह सदा हमारे साथ होता तब हमे नियंत्रण में रहने कि जरूरत नहीं होती हमे डर नहीं लगता। नियंत्रण एक गरीब पर अक़्सर प्यार और भरोसे के लिए जरूरी विकल्प हैं । हो सकता यह आपके अतीत में आवश्यक रहा हो लेकिन इसके आगे आवश्यक नहीं हैं ।

भरोसा भय को दूर करने के लिए हैं

हम विश्वास को कैसे समझ सकते हैं , इसका क्या मतलब हैं और यह कैसे काम करता हैं ? मुझे लगता हैं कि इसका सही जवाब हैं इस बात को समझना कि एक परिवार को कैसे काम करना चाहिए। परमेशवर ने उन सभी सवालों के जवाब के लिए एक परिवारिक संबंध स्थापित किया। वह पिता हैं ,

हम बच्चे हैं । क्या आप के बच्चे आप पर भरोसा करते हैं ? उन्हें क्या करना हैं ? आप उनसे क्या उम्मीद करते हैं ? बिलकुल ऐसे ही हैं । यीशु कहता हैं कि हमे छोटे बच्चो कि तरह विश्वास और भरोसा करना सीखना चाहिए। अपने आप को उनकी स्थति में रखे - एक सम्पूर्ण पिता के साथ।

भय पर विजय पाने के लिएप्रार्थना

प्रिय स्वर्गीय पिता , मैं अपने आपको आपकी प्रिय और सुरक्षात्मकत्मक देख रेख के अधीन करता हूं । मैं जानता हूँ कि केवल आप ही हैं जिससे मुझे डरना चाहिए , और यह विस्मय और सम्मान में हैं । मैं कबूल करता हूँ कि मैं अपने अंदर विश्वास कि कमी से दुश्मन के झूठ पर विश्वास करने के कारण भयभीत और चिंतित रहा। मैंने हमेशा आप पर भरोसा नहीं किया। बहुत बार मैं भय में रहा और अपनी ताकत और संसाधनों पर भरोसा करता रहा हूँ। मैं स्वीकार करता हूँ कि यह पाप हैं अब आपकी क्षमा के लिए धन्यवाद करता हूँ

मैं जनता हूँ कि अपने मुझे डर का नहीं बल्कि शक्ति और प्रेम का आत्मा दिया , और अच्छे मन कि भावना दी हैं । (2 तिमुथियस 1:7) इस लिए मैं जीवन के हर डर से मुड़ता हूँ। मैं आप से बिनती करता हूँ कि आप उन सब क्षेत्रो को प्रगट करे जहां भय के पाप ने मुझे प्रभावित किया। मुझे मेरे द्वारा विश्वास किये गये झूठ दिखाओ और इसकी जगह अपनी सच्चाई पर भरोसा करने में मदद करे। मैं आपके पवित्र आत्मा कि शक्ति में जीने कि इच्छा रखता हूँ। मुझे अपनी उपस्थिति और आत्मा से भर दे ताकि मैं विश्वास द्वारा आपका अनुसरण कर सकूं। **यीशु के नाम से आमीन** .

क्रोध

क्रोध दुख और दर्द को गलत रूप में लेने से आता हैं। दानव इसके पीछे होकर इनका उपयोग करते हैं। उन्होंने शाऊल को दाऊद के प्रति क्रोध से भरा और वह उसको मारने के लिए कोशिश करने लगा। (1शमूएल 18:10-11, 19:9-10) पौलूस कहता हैं कि क्रोध और दानवग्रस्ति का आपस में बहुत नजदीकी सम्बन्ध हैं (इफिसियों 4:27)

जैसा मैंने पहले कहा हैं , क्रोध दर्द और चोट से आता हैं जो अंदर दफन हैं । आप किसी चीज़ को जीवित दफन कर यह नहीं कह सकते कि आप ने इससे छुटकारा प्राप्त कर लिया हैं । आहत को मृतक होना चाहिए - इसका सामना करना चाहिए , कबूल किया जाना चाहिए , चंगा किया जाना चाहिए , हटाना चाहिए और और माफ़ किया जाना चाहिए। जब दुख को जीवित दफन किया जाता हैं तो यह हर चीज़ को तब तक जगाता रहता है जब तक इसे खोद कर नष्ट नहीं किया जाता ।

जबकि क्रोध का वैध उपयोग हैं (धर्मी आक्रोश) जो हम सामना करते हैं उन में से अधिकांश सही नहीं हैं। क्रोध एक माध्यमिक भावना हैं , डर के विपरीत जो एक मूल भावना हैं । गलत क्रोध हमेशा दुसरो को गुमराह करने का परिणाम हैं , यह डर दर्द की तरह गहरा भावनत्मक हैं । आइये हम सब से पहले दर्द को देखे। जब किसी व्यक्ति की उंगली पर हथौड़ा लगता हैं तो वे क्या करता हैं ? आमतौर पर उसे गुस्सा अता हैं । वह जो महसूस करता हैं वह दर्द हैं । लेकिन यह क्रोध के रूप में सामने आता हैं क्योकि क्रोध दर्द से निपटने के लिए बहुत आसान भावना हैं । जब कोई यह गंभीर बात कहता हैं या धमकी देता हैं , तो यह दर्द नयक होता हैं , लेकिन बहुतो में स्वाभाविक प्रतिक्रिया गुस्सा होता हैं ।

इस तरह से उन्हें दर्द का सामना नहीं करना पड़ता - लेकिन यह रहता हैं और अधिक से अधिक क्रोध का कारण बनता हैं । यह वह जगह हैं जहाँ डर आता हैं। यह केवल दर्द ही नहीं हैं जो क्रोध का कारण बनता हैं , लेकिन दर्द का डर हैं । भय अन्य तरीको से भी क्रोध की जड़ हैं। अपना डर संबालन के लिए हम अपने जीवन और परिस्थितियों को नियंत्रत करने की कोशिश करते हैं (इस प्रकार नियंत्रण हिस्सा बढ़ता हैं) हमे लगता हैं कि दर्द और दूसरी चीज़ो से जिन से हम डरते हैं उनकी रोक थाम आवश्यक हैं । **एडिनलिन रश** हमे पीड़ित के बजाय प्रभारित महसूस करवाता हैं । हम सीखते हैं कि लोगो को हमारे क्रोध के द्वारा नियंत्रित और जोड़ तोड़ किया जा सकता हैं और हम इस का उपयोग नियंत्रण करने के लिए भी करते हैं । यह एक और कारण हैं कि क्यों अंदर की अंशकाओ पर विजय हासिल करना महत्वपूर्ण हैं । जब वह चले जाते हैं , क्रोध और नियंत्रण के मुद्दे अधिक प्रबंधनीय हो जाते हैं । एक व्यक्ति अपने गुस्से को तब तक नहीं रोक सकता जब तक इसका कारण इसे बाहर निकालने के लिए अंदर बैठा रहे। डर से निपटने की ताकत गुस्से की जड़ को बाहर निकालने से आती हैं ।

काटन आत्म उत्परिवर्तन,आत्महत्या

आज कुछ लोग अपने आप को काटने या आत्म उत्परिवर्तन गतविधियों को विशेष रूप से मनोवैज्ञानिक बताते हैं । वे कहते हैं कि यह दर्द को दूर करने का एक तरीका हैं , भावनत्मक दर्द को दूर करने के लिए शारीरिक दर्द का उपयोग करना। जबकि यह सच हो सकता हैं , मेरा मानना हैं कि इन बातो का एक गहरा कारण हैं । बाइबिल और मेरे अपने अनुभव से मैं कह सकता हूँ कि आत्म उत्परिवर्तन स्वयं के प्रति प्रेम की स्वाभाविक इच्छा और स्वयं की रक्षा और हर हाल में जीवित रहने के लिए स्वाभाविक इच्छा के विरुध हैं **मरकुस 5** एक दानव ग्रस्त आदमी के बारे में बताता हैं जो अपने आप को लगातार काट रहा था (मरकुस 5:5) |

फिर एक दानव ग्रस्त लड़का जो खुद को जलाने के लिए आग में फैकता रहता और डूबने के लिए पानी में गिराता रहता (मत्ती 17:15) शैतान को दर्द और मौत पसंद हैं । वह उसके व्यापार के उपकरण हैं। अगर परमेशवर मना न करे तो वह हम सब को मरवा देगा। इसलिए वह ज्यादा से ज्यादा यह कोशिश कर सकता हैं कि हम अपने आप का नुकसान करे। जिसका अंतिम रूप आत्महत्या हैं । बाल के नबीओ ने अपने दानव देवताओ को खुश करने के लिए खुद को काटने का उपयोग किया जैसे कार्मल पहाड़ पर एलिया नबी के साथ मुठभेड़ में देखा गया। (1 राजा 18:28)। बाइबिल में आत्महत्या के कारण का दानवग्रस्ति के साथ धनिष्ठ सबंध बताया गया हैं । शाऊल ने एडोर की चुड़ैल से मुठभेड़ के बाद खुद को मार लिया। यहूदा की आत्महत्या यीशु को धोखा देने के बाद शैतान के वास करने से हुई।

आत्महत्या और आत्म विनाशक प्रवृत्तियो वालो लोगो के लिए प्रार्थना करना

प्रिय स्वर्गीय पिता मुझे पता हैं कि अपने मुझे अपनी छवि पर बनाया हैं । मुझे अपने शरीर को नुकसान पहुंचने के लिए मैंने जो भी किया हैं उसके लिए मुझे अफ़सोस हैं , क्योकि में जानता हूँ कि यह आपके आत्मा कि मंदिर हैं । मैं यीशु के नाम में आत्मघाती विचारो को त्यागता हूँ और उस हर कोशिश को जो मैंने अपना जीवन लेने कि या किसी भी तरह से खुद को घायल करने कि कोशिश की हो। मैं स्वीकार करता हूँ --------(आत्म - विनाश के प्रत्येक पाप का नाम जो मन में आता हैं) और इसे यीशु के खून के नीचे रखता हूँ। मैं इस झूठ का त्याग करता हूँ कि जीवन आशाहीन हैं और मैं अपना जीवन लेकर शांति और स्वंतत्रता पा सकता हूँ। शैतान एक चोर हैं जो चोरी , हत्या और विनाश के लिए आता हैं । मैं अपने जीवन या अपने परिवार के जीवन पर किसी भी दानवी दावे को यीशु के खून के नीचे रखता हूँ। मैं इस सब को यीशु के नाम में यीशु के खून में छिपाता हूँ। मैं मसीह में जीवन चुनता हूँ जो मुझे जीवन देने और बहुतायत से जीवन देने आया हैं । आपकी क्षमा के लिए धन्यवाद। मुझे आपने आपको माफ़ करने में मदद करे। मैं यह मानना चाहता हूँ कि मसीह में हमेशा आशा हैं । यीशु के नाम में मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन

दानवग्रस्ति की अन्य विशेषताए

लूका 8:26-39 , गडरिने दानवग्रस्ति के विभिन्न लक्षणे का स्पष्ट रूप से वर्णन करता हैं । वहाँ नंगापन (अनैतिकता , अविनय) , आत्म विनाशकारी रुझान (यहाँ तक कि आत्म हत्या और मृत्यु) अलौकिक शक्ति पशुतव व्यवहार , सिजोफ्रीनिया , मानसिक बीमारी , अँधेरे और मृत्यु से पुर्वग्रस्ति (कब्रिस्तान में रहना) तेजी का दौरा , अध्यात्मिक चीजों का प्रतिरोध आदि। ताकतवर आदमी (शासक,) सेना था , जिसका अर्थ हैं कि उसके पास अपने अधिकार में कई दानव थे जो विभिन्न कार्य करते हैं ।

दानव ग्रस्ति कैसे जिम्मेदार हैं

एक व्यक्ति कैसे जिम्मेदार हो सकता हैं और उसी समय दानवो का प्रभाव अपने दिमाग पर लिया हो सकता हैं ? जब की दानव ग्रस्ति के समय हर उस चीज़ के लिए जो होती हैं उसके जिम्मेदार नहीं होते , तो भी जो कुछ हम होने देते हैं और बेकाबू होना इसके हम जिम्मेदार होते हैं । इस पर इस तरिके से विचार करो, कोई नशे में हो कर कार मे बैठे किसी दूसरे परिवार को मार देता हैं । वे उन्हें मारना नहीं चाहता था , शायद तब तक उसे एहसास भी नहीं हुआ होगा कि वे ऐसा कर रहा है, और जिम्मेदार नहीं हैं और बच के निकल सकता हैं ? नहीं , वे अपने कार्य के लिए जिम्मेदार हैं । वे निशिचत रूप से नशे में होने के लिए और खुद को ऐसी स्थिति में होने देने के लिए जिम्मेदार हैं जो मौत का कारण बन सकता हैं । सिर्फ इसलिए कि वह कभी कभी किसी को मारे बिना गाड़ी चलाता हैं इसका मतलब यह नहीं बनता कि वो कम दोषी हैं । ऐसा ही दानवग्रस्ति के साथ किया जाता हैं । किसी अन्य शक्ति को हमे प्रभावित करने कि अनुमति देना हमे उस प्रभाव के तहत हर होने वाले काम का जिम्मेदार ठहरता हैं ।

लेकिन अगर कोई बचपन से ही दानव ग्रसत हैं और इस बात को नहीं जानता हैं , क्या वह जिम्मेदार हैं ? हाँ और न। हाँ ,वह जिम्मेदार हैं , परन्तु नहीं , क्योकि परमेशवर उसे अपने अनुग्रह से और क्रूस पर किए काम के द्वारा ढाप देता हैं । जैसे एक छोटा बच्चा पापी होता हैं परन्तु परमेशवर उसे तब तक दोषी नहीं ठहरता जब तक वह भलाई और बुराई के बीच का अंतर जान्ने के योग्य नहीं हो जाता इसी तरह वह व्यक्ति हैं जो दानवग्रस्त हैं दोषी नहीं ठहरता जब तक उसे इस बात कि पहचान नहीं होने लगती कि कया चल रहा हैं इस के लिए विकल्प यही है कि इस पर काबू पाने के लिए यीशु की मदद के लिए उसकी तरफ मुड़ा जाये।

दानवग्रस्ति के सबूत

I. <u>अनिवार्य विचार</u>

------आत्म छवि का निचला स्तर (अयोग्य, अशद्ध अच्छा नहीं लग रहा आदि को महसूस करना)

लूका 8:2

------सोच में लगातार भृम (विशेषकर अध्यात्मिक चीज़ो के बारे में) बेचैनी।

------अध्यात्मिक सच्चाईयो पर विश्वास करने में असमर्थता जो वो सुनते या पढ़ते हैं ।

------मजाकिया और निंदांत्मक विचार (विशेष तौर पर अध्यात्मिक सत्य सुनते समय) ।

------अवधारणत्मक विकृतियां (यह सोचना कि अन्य लोग आप से नराज हैं जब कि वह नहीं हैं) ।

------दोहराए गये सपने या बुरे सपने (यौन, डरावनी भयभीत आदि) ।

------हिंसक विचार (आत्महत्या बलात्कार, हत्या, आत्म शोषण, काटना आदि) ।

II. <u>अनिवार्य भावनए</u>

------बिना किसी उचित कारण दुसरो के प्रति घृणा और करवाहट।

------जब दानव ग्रस्ती के बारे चुनौती दी गई हो - खतरनाक शत्रुता, भय बेचैनी ।

------गहरा अवसाद और निराशा (अक़्सर और लंबा) ।

------तर्कहीन भय, धबराहट, डर (रोमियो 8:15, लूका 9:39)

------तर्कहीन क्रोध या जल्दबाजी (मत्ती 8:28) ।

------तर्कहीन अपराधबोध और अत्यधिक आत्म, निंदा, स्वयं को क्षमा नहीं करना।

III. <u>अनिवार्य व्यवहार</u>

------कुछ सही करने कि इच्छा परन्तु ऐसा करने में असमर्थता।

------व्यक्तित्व और दृष्टिकोण में अचानक बदलाव (किसी को पसंद करते करते उस से नफरत करना)

------बाइबिल पढ़ते और प्रार्थना करने का सख्त विरोध।

------अनिवार्य रूप से झूठ बोलना, फिर अक्सर सोचना के ऐसा क्यों । (प्रेरितो के काम 5:3)

------- अनिवार्य रूप से चोरी करना भले आपको उस चीज की जरुरत है या नही ।

------शराब पीना या दवाईओ का उपयोग करना (डॉक्टर के पर्चे पर या बिना इसके) अनिवार्य रूप से भले आप को वास्तव में इसकी इच्छा हैं या नहीं।

------अनिवार्य रूप से भोजन खाना (या उल्टा भस्मक रोग या ऐनोरिकसिया नरवोसा)

------यौन पाप जो बाध्यकारी हैं (विशेष रूप से विकृतियों) मत्ती 15:5, लूका 8:27

------तर्कहीन अनुचित हँसी

------तर्कहीन हिंसा (स्वयं या किसी अन्य को चोट पहुंचाने की मजबूरी) मरकुस 5:5, मत्ती 17:15, लूका 9:39 ।

------पहले से नहीं जानी जाने वाली भाषा का अचानक बोलना।

------यीशु के नाम और रक्त के प्रतिरोधक क्रिया (असहज, महसूस करना और दूर हट जाना आदि)

------बेकाबू काटना और भाषा या भाषा का मजाक उड़ाना।

------अशिष्ट भाषा और हरकते (लूका 4:33-34) ।

------बेकाबू लालच, जो आपके अंदर गति-शील होता हैं (प्रेरितो के काम 5:3) ।

IV. <u>जाग्रत समस्या</u>

------समय का नुकसान (थोड़ा या बहुत, न जाने कैसे आप को कुछ जगह मिली जो आप ने किया) ।

------अध्यात्मिक चीज़ो के दौरान अत्यधिक नींद आना (बाइबिल पढ़ते और प्राथर्ना करते सयम आदि)

------असाधारण क्षमताओ का प्रदर्शन (खास तौर पर चमत्कारी कार्य) ।

------मन में सुनई देने वाली अवाजे (मजाक उड़ाना, डराना, धमकाना, दोष लगाना, सौदेबाजी करना) ।

------आप से बोलने वाली एक आवाज आपको तीसरे व्यक्ति से संदर्भित करती हैं (पुरुष या स्त्री) ।

------अलौकिक अनुभव (अक़्सर आने वाला, गति या वस्तुओ का गायब होना) आदि।

V. <u>असामान्य स्वास्थ्य समस्यांए</u>

------बरामदगी (मरकुस 1:26, 7:15, 24 -30) दानवीय हो भी सकती हैं या नहीं भी हो सकती) ।

------बिना न्यायसंगत स्पष्टीकरण दर्द, समस्या जो डॉक्टर ठीक नहीं कर सकता।

------शारीरिक बीमारीयां जो अध्यात्मिक आज्ञा द्वारा दूर की जाती हैं (मिर्गी का दौरा, अस्थमा का दौरा, सिर दर्द, चक्कर आना आदि जो यीशु के नाम पर आज्ञा देने से रुक जाते हैं या चले जाते हैं) ।

------ शारीरिक कार्य के साथ अचानक हस्तक्षेप (कानो में गूजने की आवाज, बोलने या सुनने में चिड़चिड़ापन सुनने या छुने में अतिसंवेदनशीलता का बढ़ जाना या अचानक ठंड लगना आदि) ।

III कारण

यह देखने के बाद की दानव ग्रस्ती क्या हैं और इसकी कुछ विशेषताए , अगला कदम यह पता लगाना हैं कि दानवो को हमारे अंदर या विरुद्ध काम करने कि कौन अनुमति देता हैं । ये खुले रस्ते दीवार में दरारों की तरह होते हैं जो दुश्मन को अंदर आने की अनुमति देते हैं । जब आप में यह खुले रस्ते होते हैं , यह हो सकता हैं कि दानव आप को दानवग्रस्त करने के लिए इनका उपयोग कर रहे हैं । दानव चूहों कि तरह हैं जो कचरे पर भोजन करते हैं । चूहों से छुटकारा पाने के लिए एक व्यक्ति को कचरे से छुटकारा पाना चाहिए चूहे अपने आप भाग जायेगे।

दानवी प्रवेश के लिए सबसे आम रास्ता होता हैं परिवारिक प्रणाली। एक व्यक्ति खुद को दानवी प्रभाव के लिए खोलता हैं और दानव उसकी हर चीज़ , बच्चो तक पे दवा करते हैं । फिर यही लक्षण और प्रभाव बच्चो और बच्चो के बच्चो तक पहुँचते हैं । शैतानी समलित गतविधियां जैसे ड्रग्स , ऐसिड ,रॉक) मिउजिक(संगीत) , राशीफल आदि एक दरार का प्रतीक हैं । परिवार में विशेष रूप से टोना टोटका भी एक दरार होती हैं । बाइबिल बताती हैं कि जब दो लोग यौन प्रक्रिया में होते हैं तो वह एक तन होते हैं और दानव दूसरे व्यक्ति पर दावा कर सकता हैं । किसी भी प्रकार के आघात , का दुरूपयोग विशेष रूप से युवा होने पर दानवी के लिए एक दरार है । इसमें शामिल किसी व्यक्ति के साथ मजबूत आत्म संबध एक दरार का कारण बन सकता हैं । गर्भ में या युवा होने पर अवांछित होना एक निश्चित दरार हैं । ये कुछ मुख्य रासते है जो दानव प्रवेश पाने और लोगों पर हमला करने लिए उपयोग करते हैं ।

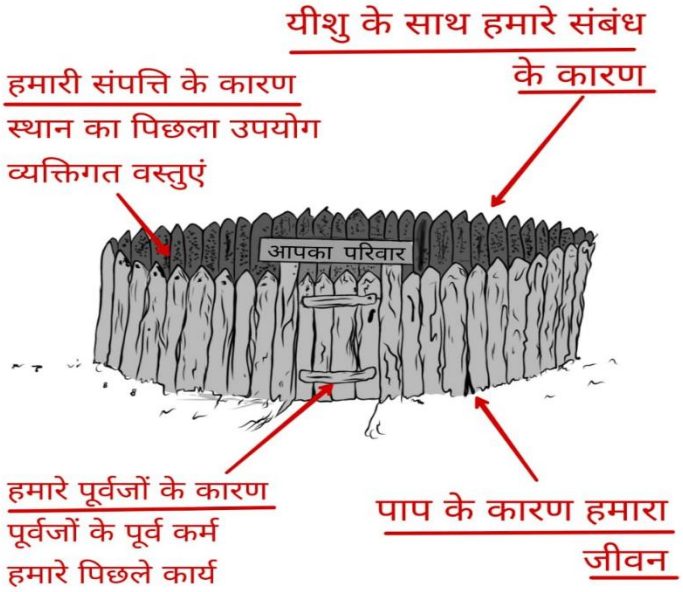

दुश्मन के हमलो पर विजय पाने के लिए यह समझना महत्वपूर्ण हैं कि वे हमले कहां से आते हैं -उनका कारण क्या हैं। उनके खिलाफ बचाव करने में सक्षम होने के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण हैं। यदि हम जानते हो कि हमारा दुश्मन किस दिशा से हमला करेगा , हम आपना बचाव बेहतर कर सकते हैं और उन हमलो को मात दे सकते हैं। यदि आप अपने जीवन को एक किले के रूप में सोचते हैं तो आप बेहतर समझ सकते है कि क्या हो रहा हैं। एक सीमांत किले के बारे में सोचे जो संपुक्त राज्य अमेरिका के शुरूआती दिनों में सुरक्षा के लिए बनाया गया था। (1) एक दुश्मन खुले दरवाजे के माध्यम से घुसने का दावा कर सकता हैं, (2) दीवार में एक कमजोर जगह से गुजरता हैं, (3) उस भूमि पर दावा करता है, जिस पर किला बनाया गया हैं , या (4) यीशु के प्रति हमारी प्रतिबद्धता के कारण हम पर हमला करता है। आइए हम हमले के इन चार मार्गो पर नजर डालते हैं।

क. शारीरिक हमला

अतीत में जमीन या संपत्ति पर जो कुछ भी हुआ उसके माध्यम से दिए जाने कि कारण हम पर हमला किया जा सकता हैं।

यह किसी स्थान का पूर्व उपयोग हो सकता हैं। हो सकता, जिस जमीन पर, या घर में , उस कमरे में जहाँ आप रहते हैं कुछ ऐसा हुआ हो। हो सकता यह कोई हिंसक काम , एक गुप्त गतिविधि , एक अभिशराप , संपत्ति को अंधेरे कि शक्तियों के प्रति समर्पित करने कि प्रक्रिया या इसके समान कोई कार्य किया गया हो कभी कभी जब हम एक पड़ोस या घर में जाते हैं , तो हमारी आत्मा में एक शैतानी बुराई

का भाव होता हैं , एक बेचैनी। नई आयु सामग्री बेचने वाले स्टोर में आप अपनी आत्मा में एक अलग , बेचैनी महसूस कर सकते हैं। यह अलोकिक अर्थ के लिए स्पष्टीकरण हैं जो दानववाधित घरो में होता हैं - दानव ग्रस्ती गतविधि मौजूद हो सकती हैं। कुछ देश और यहा तक कि महादीप अतिरिक्त अंधेरे और बंधन में हैं और यह विश्वासियों द्वारा महसूस किया जा सकता है। हमे जो संदेश मिलता हैं वह परमेशवर की पवित्र आत्मा से हैं जो हमारे चारो ओर की बुराई के खिलाफ चेतावनी दे रहा हैं।

प्रार्थना करना हमारा समाधान हैं , दुश्मन के द्वारा संपत्ति पर किसी भी पहुँच और दावे को वापस लेना और परमेशवर के बच्चो के रूप में उस पर आपना दावा ठोकना और संपत्ति का उपयोग करने के लिए। किसी भी दावे को यीशु के खून तले उसकी महिमा और सम्मान के लिए समर्पित करे। यह दर्शाने के लिए की प्रभु यीशु मसीह इस संपत्ति का स्वामी हैं दीवार पर चित्र या कुस्र का निशान एक अच्छा अनुस्मारक हो सकता हैं।

प्रार्थना करे , घर और संपत्ति का अभिषेक करे , अपने आस पास जोर जोर से प्रार्थना करते हुए घूमे , परमेशवर के लिए अपनी संपत्ति का दावा करे , और किसी भी दानव को इसकी तरफ बढ़ने से डांटे। दानव के किसी भी पहुँच को संपत्ति पर दावा करते हुए वापस ले और यीशु के खून तले ऐसे दावे को डाल दे। इसे यीशु के नाम से तोड़ो। परमेशवर से कहें की वह इसके चारो ओर स्वर्गदूतो का बाड़ा लगा दे। ऐसा हर कमरे के लिए करें और अगर आप के पास हैं तो तहखाने को भी। प्रत्येक कमरे को तेल में अपनी उंगली डुबो कर दीवार पर दरवाजे पर आदि सलीब का निशान बनाते हुए अभिषेक करे ठीक उसी तरह प्रार्थना करें जैसा अपने संपत्ति के आस पास चलते हुए प्रार्थना की थी। अगर घर का कोई खास हिस्सा खराब लगता हैं तो वहाँ रात की रोशनी का बलब लगाए ता कि वहाँ हमेशा रोशनी रहें। आप सभी कमरों में ऐसा कर सकते हैं। दानव प्रकाश से नफरत करते हैं , और वह यीशु कि प्रशंसा सुनने से नफरत करते हैं , इसलिए आप 24 घंटे विभिन्न स्थानों पर प्रशंसा संगीत चला सकते हैं। यह धीमी आवाज में हो सकता हैं - वे इसे सुनेगे।

इसके अलावा **यह क्षेत्र के निजी संपत्ति से हो सकता हैं**। जब यहूदियों ने यहोशू के आधीन कनान पर कब्जा कर लिया , तो उन्हें कहा गया था कि जिन वस्तुओ पर कब्जा कर चुके हैं, उनमें से कोई भी न रखे। यहा तक कि जानवरो और बच्चो को भी नष्ट करना था। वे शैतान के लिए समर्पित थे और उनके द्वारा दावा किया गया था। जो लोग इन चीज़ो का इस्तेमाल करते वह खुद को उन शैतानी शक्तियों के लिए रासता बनते जिन्हे वे समर्पित थी। इसी कारण पौलूस ने इफिसुस के लोगो को उनकी सभी मनोगत पुस्तकों को जलाने के लिए कहा। आज हमे अन्य पंथो और धर्मो के साहित्य गुप्त परम्पराओ आदि संस्कृतियों से मूर्तिपूजक वस्तुओ , मेसोनिक या अन्य गुप्त समाजो , कुछ मूल अमेरिकी कलाकृतियों या इस तरह के साहित्य कि तलाश करनी चाहिए। , पोर्नग्राफी ड्रग या शराब आपूर्ति , काले या बुरे आयाम वाला संगीत।

समाधान इसी में हैं कि ऐसी वस्तुओ को निकला जाए और नष्ट किया जाए जो दानवी पहुँच के लिए रास्ता हैं , परमेशवर कि- प्रेणा के अनुसार उनके होने के लिए परमेशवर से माफ़ी मांगे , उनकी उपसिथति से कमरे को साफ़ करें , दुश्मन की हर पहुँच और दावे को वापस ले और उस जगह को व अपने आप को

यीशु को समर्पित करें। उससे प्रार्थना करें कि परमेशवर आप पर प्रगट करें अगर और कोई चीज़ है जिस के साथ निपटा जान ज़रूरी हैं।

जब एक कमरा या वस्तु किसी भी कारण दुष्ट आत्मा के नियंत्रण में होती हैं , तो तेल में उंगली डुबो कर दीवार पर सलीब का निशान बना देना यीशु के लिए उस जगह का दावा करना जरूरी हैं। मसीही संगीत बजाना और एक छोटी सी रोशनी को छोड़ना भी अंधेरे कि ताकतों के लिए आक्रामक हैं। यकीनन तौर पर सलीब का निशान बनाते समय बाइबिल कि आयतो को पढ़ना और प्रार्थना करना महत्वपूर्ण हैं मुझे पता हैं कि मैं एक मसीही के रूप में लोगो को आर्शीवाद देने की बहुत ताकत रखता हूँ , विशेष रूप से मेरे अपने परिवार , और अन्य मसीहियों को। परमेशवर आप को आशीष दे , एक गाली या छिछली टिप्पणी से अधिक हैं। इसमें वास्तविक शक्ति हैं जब कोई इसका मतलब इस तरह से समझता है। यह एक विशेषधिकार हैं जिसका उपयोग मैं करता हूँ और लोगो को ऐसा करने के लिए दोहराता हूँ। दुरी इसे बिलकुल प्रभावित नहीं करती , बेशक ,किसी व्यक्ति को छुने के बारे में कुछ खास हैं जब मैं प्रार्थना करता हूँ या परमेशवर से मांगता हूँ कि वह उन्हें आशीष दे , लेकिन जब यह दूरी पर होता है तो भी इसमें कोई अंतर नहीं होता। शक्ति परमेशवर में हैं जो हर जगह मौजूद हैं (सर्वव्यापी)। शैतान और दानव एक समय में एक स्थान पर ही सीमित रहते हैं , इसलिए यह उसके लिए एक बहुत बड़ा नुकसान भी है।

परमेशवर की प्रतिज्ञा हमे इसका दावा और इसका उपयोग करने के लिए देता हैं। **जो आप के अंदर है वह उस से बड़ा हैं जो इस संसार में हैं। 1 यूहन्ना 4:4**

<u>एक घर या कमरे की शुद्धिकरण के लिए प्रार्थना करना</u>

झूठी आराधना की वस्तुयो को हटा दे और नष्ट कर दे फिर हर कमरे में इस प्रार्थना को ऊंची आवाज से कहें। अपनी उंगली से दीवारों और दरवाजो पर सलीब का निशान बनाना अच्छा होगा और कमरे मे प्रभु यीशु मसीह की प्रशंसा वाला संगीत और छोटी रोशनी करना भी अच्छा होगा। दानव रोशनी और यीशु की महिमा सुनना पसंद नहीं करते।

आसमानी पिता मैं मानता हूँ कि आप ही आसमान और जमीन के स्वामी हैं। आपकी संप्रभु शक्ति और प्रेम में आपने हमे यह जगह रहने के लिए सौंपी हैं और इसके लिए हम आपका धन्यवाद करते हैं। मैं यह जगह आपकी महिमा और सम्मान को सम्पत्ति करता हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि यह मेरे और मेरे परिवार के लिए आध्यात्मिक , भावनात्मिक और शारीरक सुरक्षा और आर्शीवाद का स्थान होगा , मैं दुश्मन के सभी हमलो से आपकी सुरक्षा मांगता हूँ। मैं इस जगह पर शैतान का हर दावा और पहुँच ख़ारिज करता हूँ और यीशु के खून तले लाता हूँ। यहा पर किया गया हर पाप किसी भी आत्मा को या किसी भी तरह आंमत्रित किया गया और इस स्थान पर जो कुछ भी हो सकता है। उस सब को यीशु के खून तले लाता हूँ , तुम्हारी हर पहुँच को रोकता हूँ , यहा पर हमारे या किसी के खिलाफ कोई भी हरकत करने पर रोक लगता हूँ।

प्रिय प्रभु कृप्या इस स्थान को अपनी हजूरी केवल अपनी पाक हजूरी से भर दे।

<u>ख. इतिहासिक हमला</u>

यह हमला हमारे या हमारे पूवर्जो के माध्यम से आता हैं। यह इसके समान हैं जैसे कोई सुरक्षित किला बनाते समय बाहरी दरवाजा खुला छोड़ दिया गया हो।

यह हमारे पूवर्जो / माता पिता के पहले कामो के कारण हो सकता हैं। जब एक व्यक्ति खुद को दानवी प्रभाव के लिए खोलता हैं तो उस व्यक्ति के वंशजो को भी दानव ग्रस्ति का खतरा होता हैं। जब एक दानव की पहुँच किसी व्यक्ति तक होती है , तो वह उस हर चीज़ पर दावा करता हैं ,उनके बच्चो सहित। बाइबिल कहती हैं कि परमेशवर पितरो के पाप के कारण तीसरी और चौथी पीढ़ी तक बच्चो को दण्डित करता हैं (निर्गमन 20:4-5 , व्यवस्थाविवरण 5:8-9 , निर्गमन 34:6-7)। बाइबिल कहती हैं कि माता पिता के पापो से बच्चे प्रभावित होते हैं (यहेजकेल 18:2) और यह एक तरीका हैं। वास्तव में यह सबसे आम कारणो में से एक हैं जिस से लोग दानवग्रस्त होते हैं। यह पहले जन्मे पुरुषो के लिए विशेष रूप से सच हैं , क्योकि शैतान भी उन पर दावा करना चाहता हैं जैसे परमेशवर करता हैं (निर्गमन 34:20)

पीढ़ीगत दास्ता अक्सर पीढ़ी दर पीढ़ी द्वारा दोहराए गए पाप कि क्रिया से पहचानी जाती हैं। यह दुर्व्यवहार, व्यसन, घृणा, अंधविश्वास और भय, गर्व, नियंत्रण और हेरफेर, अस्वीकृति, यौन पाप और विकृतियां, विकृत धार्मिक विश्वास, जादू टोना और विद्रोह आदि की पीढ़ियों का पालन करना असामान्य नहीं है।

यदि आप आपने भाई - बहनो , माता - पिता , मौसी , चाचा , या दादा - दादी के रूप में अपने जीवन में कुछ ऐसी समस्याओं को देखते हैं , तो यह पक्के तौर पर पूर्वजो की दानव ग्रस्ति के कारण हो सकता हैं। वही दानव परिवार के कुछ लोगो का उपयोग करते हैं ठीक वही काम करने के लिए (सभी सदस्यों का नहीं , यह बहुत स्पष्ट हो जायेगा)। वह खून रेखा (रिश्ते) का दावा करते हैं और उस तक पहुँच का उपयोग करते हैं। यदि आप अपने परिवार के दुसरो मे पहले से दानव ग्रस्ति के लक्षणो या विशेषताओं के कुछ नमूने देखते हैं तो यह पूर्वजी पहुँच दिखाते हैं। यही कारण हैं कि अक्सर एक लड़का जो अपनी माँ कि पिटाई के लिए अपने पिता से नफरत करता हैं वह बड़ा हो कर अपनी पत्नी की पिटाई करता हैं , या एक शराबी का बच्चा शराबी बन जाता हैं।

पहले - जन्मे पुरुषो के लिए एक बहुत ही आम नमूना है कि सब से पहले वह अपने ऊपर प्रभाव के शिकार हो और फिर अधिकतर पीढ़ीगत हमलो द्वारा । यहूदियों में पहले जन्मे परमेशवर को संमर्पित थे और इसलिए शैतान भी उन पर हमला करने और उन पर दावा करने की कोशिश करता हैं। अक्सर यह परिवार में जेठा पुत्र होता हैं जिस पर आध्यात्मिक हमला किया जाता हैं। पिछली पीढ़ियों के पापो का पश्चाताप करने और स्वीकार करने से पीढ़ीगत दास्ता को तोड़ा जा सकता हैं। मसीह के खून को अपनी खून रेखा से अधिक मजबूत होने का दावा करे और उस पहुँच को यीशु के खून तले रखे (रोमियो 5:15) दावा करे कि आप एक नई रचना हैं , पुरानी चीज़े बीत चुकी हैं , सभी चीज़े नई हो गई हैं (2 कुरिन्थियों 5:17) ! परमेशवर से शराप को आशीर्वाद में बदलने के लिए बिनती करे (व्यवस्थाविवरण 23:5)।

पीढ़ीगत दास्ता से छुटकारे के लिए प्रार्थना

अनुग्रहीकारी पिता मैं आप के सामने आपने माता पिता और पूर्वजो के पापो को स्वीकार करता हूँ। मैं जानता हूँ कि उन्होंने पाप किया है क्योकि सभी पुरुष और महिलाये पापी हैं। मैं जानता कि मैं वह नहीं कर सकता जो केवल उन्होंने ही अपने पापो कि माफ़ी पाने के लिए किया होता , परन्तु मुझे अफ़सोस है उस सब के लिए जो उन्होंने आप के विरूद अणआज्ञाकारी में किया और मैं आप से बिनती करता हूँ कि आप वह सब यीशु के खून से ढक दे। कृप्या उनके परिणाम मेरी या मेरे वंशजो के खिलाफ न रखे। मैं यीशु के द्वारा पूरा कीए काम का दावा करता हूँ , जिसने मेरे सारे पाप अपने ऊपर ले लिए , विश्वास में मैं आपके पवित्र वचन के आधार पर उस कार्य को स्वीकार करता हूँ। मैं अपने माता पिता के पाप द्वारा शैतान कि शक्तिओ को दी गई किसी भी सहमति को वापस दावे में लेता हूँ। प्रिय यीशु , कृप्या मुझे मेरे माता - पिता के बुरे कामो से आने वाले प्रभाव से यीशु मसीह के नाम पर अज़ाद करे। मैं जानता हूँ कि मैं मसीह में नई रचना हूँ। पुरानी चीज़े जा चुकी हैं और सभी चीज़े नई हो गई। मैं हर दानवी दावे को और पहुँच को वापस लेता हूँ और यीशु के नाम में हर दानवी काम को जो मेरे पूर्वजो से मेरे लिए पारित किये गए हैं तोड़ता हूं हूँ उसकी तरह जो कुस्र पर चढ़ाया गया और मसीह के साथ उठाया गया और जो स्वर्गीय स्थानों में बैठता हैं। मैं शैतान के हर दावे को रद करता हूँ जिस से वह मुझ पर स्वामित्व का दावा कर सकता हैं। मैं खुद को और अपने वंशजो को सदा के लिए और पूरी तरह से केवल प्रभु यीशु मसीह के प्रति समर्पित करता हुआ अपने आप को वचनबद्ध घोषित करता हूँ। मैं अब हर बुरी आत्मा को और प्रभु यीशु मसीह के हर दुश्मन को हमेशा के लिए जाने की आज्ञा देता हूँ। स्वर्गीय पिता मैं आप से बिनती करता हूँ कि मुझे अपने पवित्र आत्मा से भर दे। मैं अपने शरीर की धार्मिकता को एक उपकरण के रूप में प्रस्तुत करता हूँ , एक जीवित बलिदान ताकि मैं अपने जीवन के हर क्षेत्र में आप को महिमा दे संकु। मैं यह सब कुछ प्रभु यीशु मसीह के नाम और अधिकार में करता हूँ। आमीन।

हलाकि वो पाप जो दानवी हमलो के लिए रास्ता खोलते है की दुसरे दुवारा नहीं निपटे जा सकते। यह हमारे आपने पूर्व कार्य हो सकते हैं। उन पापो की सूचि जो दानवी हमलो को रास्ता दे सकते है इस पुस्तक के पेज 20,32 और 33 में बनाई गयी है। यह उन चीजो को संदभरित करते है जो जीवन मे पहले हुए हो, अक्सर बचपन के दिनों मे जिन्ह्वो ने दानवों को हमारे विरुद काम करने की पुहच दी होगी। वर्तमान पापो के कामो को अलग से गिना जायेगा।

इसमें अतीत मनोगत , नया युग , ओइजाबोर्ड या अन्य भादीदारी शामिल हो सकते है। एक मेसन बन चुके होने के बाद , शराइनर या किसी भी गुप्त समाज का सदस्य बनने के बाद , एक दर्दनाक अनुभव , बलात्कार , छेड़छाड़ या दुश्व्यवहार का अनुभव , ड्रग्स, शराब या अनैतिक व्यवहार में शामिल रहा होना , या किसी ने आपके सिर पर हाथ रखे हो प्रार्थना करने के लिए जो खुद दानवी साये आधीन हो और या आपके ऊपर या आपके परिवार पर कोई अभिशाप लाया हो।

परमेशवर स्पष्ट रूप से कहता है कि **यौन संघ** का मतलब है दो लोगो का एक तन हो जाना भले ही वह यौन संघ एक वेश्या के साथ ही क्यों न हो (1 कुरिन्थियों 6 :16)। इसलिए शादी से पहले या विवाहित साथी को छोड़ किसी अन्य के साथ यौन क्रिया सीधा दानव ग्रस्तिकरण के लिए रास्ता हो सकता है। कोई भी दानव जिसकी पहुँच उस व्यक्ति तक होगी जो आप के साथ इस क्रिया में शामिल है उसके साथ साथ तत्काल रूप से आप तक भी पहुँच बन जाएगी। यह एक तरह का आध्यात्मिक एड्स (AIDS) सक्रमण, लेकिन इसकी कोई रोकथाम विधि नहीं है , कोई सुरक्षित यौन संबंध नहीं हैं। अतीत के उन यौन भागीदारी को स्वीकार करना चाहिए , और यीशु के खून तले डाल देना चाहिए। उनके माध्यम से किसी भी दानव को दी गई पहुँच यीशु के नाम में तोड़ी जानी चाहिए। उसकी उपस्थति से भर जाने के लिए बिनती करें और उसकी दया के लिए धन्यवाद करें।

हो सकता है कि किसी ने आपके या आपके परिवार पर यह माँगते हुए कि कुछ बुरा हो , **अभिशराप** लगा दिया हो। वास्तव में ऐसी प्रार्थनाओ का शैतान जवाब देना पसंद करता हैं ! माता - पिता अपने बच्चो को यह कहकर शराप दे सकते हैं कि वह चाहते हैं कि वह पैदा ही न होते तो अच्छा था , वह उनसे

नफरत करते हैं , वह उन्हें नहीं चाहते क्योकि वह कभी भी उन के लिए कुछ भला नहीं करेंगे , और कई कुछ। अंत में हम अपने आप को शराप दे सकते हैं (नीतिवचन 6:2) यह कहते हुए कि हम मर ही क्यों नहीं जाते , क्योकि हम बहुत अच्छे नहीं हैं , हम कभी भी खुश नहीं होंगे या इस बारे में ऐसी कई बाते कहकर।

शराप का क्षेत्र बहुत आम नहीं है फिर भी दानवी पहुँच के लिए एक मजबूत रास्ता हैं। किसी को शराप देने का मतलब होता हैं उनके लिए कुछ बुरा हो उसकी प्रार्थना करना। ऐसी अनुरोधो को शैतान और उसकी सेनओ द्वारा सुना जाता हैं और जब संभव हो उत्तर दिया जाता हैं। इसमें मनोगत और जादू टोना से लेकर एक व्यक्ति के दूसरे पर नुकसान पहुँचाने कि इच्छा शामिल हैं। बालाम को। इजराइल को शराप देने के लिए पैसा दिया गया था , लेकिन परमेशवर ने उसकी अनुमति नहीं दी (गिनती 22-24)। ये अभिशराप जब प्रभाव में हो तो पीढ़ी दर पीढ़ी पारित किया जा सकता है। बाइबिल बताती है कि किसी के लिए बुरा बोलना उसको कोसने और शराप देने के समान हैं (रोमियो 12:14)। ऐसी बाते जैसे : मुझे आशा हैं कि तुम मर जाओगे -------क्योकि वह मुझ से प्यार नहीं करेगी / करेगा , काश वे चाहते होते ------ तुम अच्छे नहीं हो , तुम कुछ भी नहीं करोगे ------- मुझे आशा है कि वह अपनी खुद कि दवाई लेती है ------ मुझे आशा हैं कि जब आप बड़े होंगे तो आपके बच्चे यह करेंगे। जो कहते हैं उसके द्वारा अपने आप को भी शराप दे सकते हैं (नीतिवचत 6:2)। हमारे शब्द शक्तिशाली और महत्वपूर्ण हैं। इन्हे हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। अपवित्रता (अभिशराप शब्दों) का उपयोग करना भी इस श्रेणी में आता हैं। जब कोई किसी को नर्क के लिए लानत देता हैं तो यह एक भयानक और भयानक बात हैं। दानव इसे सुनना पसंद करते हैं , वे स्पीकर में नफरत कि शक्ति का उपयोग करते हैं और अपनी बुराई करने के लिए किसी भी अधिकार या औचित्य पर रोक लगा देंगे।

बालाम ने यहूदियों को शराप देने कि कोशिश कि (व्यवस्थाविवरण 23:4)। बाइबिल कहती हैं कि हम दुसरो को शराप दे सकते हैं (भजन सहिता 109:17)। दानव इसे किसी व्यक्ति के खिलाफ काम करने के लिए बहाने का उपयोग करते हैं , पहुँच प्राप्त करने के लिए प्रार्थना के रूप में। पुराने नियम के पुरुष (अब्राहाम , इसहाक , याकूब आदि उत्पत्ति 27:23,38) अपने बच्चो को आर्शीवाद या शराप देते (उत्पत्ति 48:20)। कभी कभी वे उन पर अभिशराप भी डालते जैसा कि अब्राहम ने इश्माएल के साथ किया और इसहाक ने एसाव को शराप दिया। लेवीयों को आर्शीवाद देने के लिए इस्तेमाल किया जाता था (व्यवस्थाविवरण 10:8,21:5)। जब नयोमी इजरायल में वापस आई तो उसने कहा कि उसे मारा कहा जाये क्योकि उसके लिए सब कुछ कड़वा हो गया था। एक पिता को अपने बच्चो को अपने शब्दों में आर्शीवाद देना हैं और उन्हें अपने और परमेशवर के आर्शीवाद के साथ जीवन में भेजना हैं। तुमने जो किया इसके उल्ट हैं।

यदि आप को लगता है कि आपके साथ ऐसा हुआ हो सकता हैं , तो याद रहे जिन्हो ने आप को शराप दिया इनको आर्शीवाद दे (मत्ती 5:44)। उस व्यक्ति के साथ प्यार और दया का व्यवहार करे , जब आप बुराई के बदले भलाई देते हैं , तो अनजिर्रत शराप ठंडा नहीं पड़ता (नीतिवचन 6:2)। यीशु के नाम पर आपके खिलाफ उस हर अभिशराप को तोड़े , जो गलतियों 3:10,13 का दावा करता हैं और कहता है कि मसीह ने हमे कानून के अभिशराप से मुक्ति दिलाई। हमारे लिए यह लिखा है : कि श्रापित वह हैं जो

एक पेड़ पर लटका हुआ है। परमेशवर से बिनती करें कि वह शराप को आशीष में बदल दे (व्यवस्थाविवरण 23:5)।

गोद लिए हुऐ बच्चे

उनके अतीत में रहे दरारों के कारण उन पर अक्सर हमला होता हैं :अस्वीकृति , नजायज ढंग से , बलात्कार (माँ का या उनका) , दुश्व्यवहार या कई अन्य चीज़े। अक्सर कई पीढ़ीगत दानव काम पर होते हैं। गोद लिए बच्चो के लिए जितना जल्दी हो सके उद्धार माँगा जाना चाहिए , जो अपने नए परिवार में समायोजित करने और आपनाने में कठिनइयों के 25 लक्षण दिखाते हैं। कोई भी बच्चा जिसने युवा अवस्था में दर्दनाक अनुभव किया हो उस में दानवी दरार हो सकती हैं। कार या अन्य तरह कि दुर्धटना या कोई भी स्थति जो आंतक का कारण बनती हैं इसलिए दुरूपयोग , बलात्कार , छेड़छाड़ या अस्वीकृति कोई भी रूप हो सकता है।

गोद लिए हुए बचो का उद्धार लाने से पहले उनकी प्राकर्तिक माँ के साथ सभी बंधनो को तोड़ना होगा यह एक अद्रश्य आध्यात्मिक गर्भनाल को काटने जैसा है। परित्याग,आक्रोश,क्रोध,वासना,काम आत्मसम्मान ,आत्म-केन्द्रितता ,ईर्ष्या,अस्वीकृति आदि के किसी भी दावे को तोड़ने के लिए प्रार्थना करें। और उनसे दावा करने वाली किसी भी पीढ़ीगत आत्माओ से मुक्त होने के लिए प्रार्थना करे। परिवार के किसी भी शाप के खिलाफ भोगवाद आत्माओ को या पूर्वजो के माध्यम से परिवार तक पहुंचने वाली किसी भी चीज़ के खिलाफ प्रार्थना करे। बच्चो और उद्धार के बारे में अधिक जानकारी के लिए पृष्ठ 57-58,60 देखें।

अस्वीकृति

यदि जन्म से पहले ,माता पिता में से एक या दोनों गर्भावस्ता को अस्वीकार करते हैं और बच्चा आवांछित है ,तो दानव उस बच्चे पर दावा करने के लिए आगे बढ़ सकता है। इसके अलावा अगर कोई मुश्किल भरा जनम है या माता पिता बचे के लिंग या शारीरिक विशेषता या बाधा के कारण निराश है तो दानव उन पर दावा कर सकते हैं। कभी-कभी अत्याधिक भाई बहनो की गिनती से जाहिर की गयी अस्वीकृति भी इसका कारण बन सकती है। अस्वीकृति बाद में भी आ सकती है खासकर अगर एक बच्चा बहुत रोता है या माता पिता के लिए समस्याएं पैदा करता है या अगर उनके जीवन या व्यवसाय में बाधा बनता है ।

यदि आपको अपने बचपन में अस्वीकृति महसूस हुई है तो अब आप इसके बारे में क्या कर सकते हैं? सबसे पहले एक स्वतंत्र इच्छा में माता पिता /किसी व्यक्ति को माफ़ करने का निर्णय ले। यीशु के नाम का वह सब तोड़ दे जो कुछ उन्होंने कहा या आप के विरोध महसूस किया ,(जैसा की ऊपर शाप के साथ है । आप चंगा करने और भरने के लिए परमेशवर के प्यार को स्वतंत्र रूप से स्वीकार करें। यीशु के नाम में आपके खिलाफ कोई भी काम करने के लिए अस्वीकृति के किसी भी दानव को रोक दे। उस से आगे हर विचार को बंधी बना ले (2 कुरिन्थियों 10:4-5) और आपने अतीत की अस्वीकृति के बारे में नकारात्मक विचारो को प्रभावी न होने दे (फिलिपियो 4:8) परमेशवर से अपने नए रिश्ते का दावा करें (2 कुरिन्थियों 5:17)।

दुर्व्यवहार

इसमें किसी भी तरह के खून के रिश्तो में हुए योन-सम्बन्ध या शारीरिक शोषण का कोई भी रूप शामिल है (शारीरिक या भावनत्मक)। जैसे पहले देखा गया है, यौन संघ दानवो को प्रवेश देता है (1कुरिन्थियों 6:16)। दुषव्यावहार का आघात दानवो के लिए प्रवेश द्वार खोलता है ताकि दानव अक्सर बच्चे के जीवन का तन से उपयोग करे।

विद्रोह

विद्रोह को अक्क्सर प्राकृतिक के रूप में देखा जाता है, लेकिन जैसे प्रत्यक्ष मनोगत भागीदार बताती है ये दानवग्रस्ति के लिए एक निमंत्रण हो सकता है (1 शमूएल 15 :23) किसी के स्वयं को खोजने की कोशिश हुए वास्तविक विद्रोह के बीच अंतर है। इज़राइल में विद्रोह करने वाले बड़े बचों को पत्थर मार मार कर मार दिया जाता था। हम असमान्य विद्रोह और समान्य में अंतर कैसे बता सकते हैं?एक बच्चे के लिए अपने दोस्तों के लिए कर्फ्यू का बढ़ाया जाना सामान्य है,लेकिन आपने कर्फ्यू को अनदेखा करना और कभी कभी पूरी रात बाहर रहना असामान्य है। एक बच्चे के लिए अपनी मूढ़ दशा को बदलना और इसे दिखाना (बिना किसी ताबाही और हिंसा के) सामान्य है। लेकिन जब वह अधिक से अधिक विनाशकारी और हिंसक होता है तो यह असामान्य है। पारिवारिक गतिविधियों में कम दिलचस्पी दिखाना जैसे वो बड़े होते है यह सामान्य है ,लेकिन इतना पीछे हट जाना की उनके लिए घर का उपयोग सिर्फ खाने और सोने के अलावा और किसी कम के लिए नहीं है तो यह असामान्य है नियमो और प्रतिबंधों के साथ कुछ अधीरता दिखन सामान्य है, लेकिन उद्देश्य पूर्ण रूप से अवज्ञा और अनदरपूर्वक बोलना सामान्य नहीं है। एक बच्चे के रूप में हितो और दोस्तों में एक क्रमिक परिवर्तन सामान्य है, जैसे बच्चा बढ़ता है, लेकिन अचानक सभी पूर्व हितो और गतिविधियों को छोड़ना सामान्य नहीं है। यह सामान्य है की बच्चा जैसे परिपक्व होता है वह माता पिता में उतना विश्वास न करे जितना करता था ,लेकिन उसके लिए डरपोक और गुप्त ,यहां तक की बेईमान और चतुर बन जाना असामान्य है। बच्चे आप के द्वारा निर्धारित किये गए ड्रेस कोड को बढ़ाना चाह सकते है, यह सामान्य है लेकिन उद्देश्य पूर्व उस ड्रेस का चुनव करना जो आपको हैरान और परेशान कर देगा यह असामान्य है। बाइबिल कहती है की यह असमान्य विद्रोह अंतिम दिनों में बढ़ जायेगा (2 तीमुथियुस 3:1-5) और यह निश्चित रूप से हो रहा है।

यदि आपको लगता है कि आपके बच्चे में यह है तो उसके लिए विशष रूप से और नियमित रूप से प्रार्थना करें। उनका सामना प्यार से करें ,रिश्ते को फिर से स्थापित करें ताकि संचार के आधार खुले जा सके। परामर्श भी सहायक हो सकता हैं। उनके द्रष्टिकोण और उनकी कारवाई के बीच अंतर करने कि कोशिश करें। कभी - कभी किसी को पहले संबोधित किया जान चाहिए और दूसरे को दूसरे वक्त। परमेशवर से बुद्धि माँगे (याकूब 1)।

आत्मा बंधन

हमारे अतीत में आत्मा बंधन दानवो के लिए एक और रासता हो सकता हैं। जैसे वह शारीरक संघ जैसे यौन के माध्यम से एक से दूसरे व्यक्ति में स्थानांत्रित हो सकते हैं वैसे ही एक भावनत्मक संध के माध्यम से भी स्थानांत्रिण कर सकते हैं। आत्माए भी शरीर कि तरह बंध सकती हैं। जब कोई आपना भरोसा

किसी को देता हैं तो दिल एक दूसरे से जुड़ जाता हैं। साथी माता , पिता , बच्चो और ईश्वरीय दोस्तों के बीच सबंध अच्छे और आवश्यक हैं। लेकिन जब हम किसी ऐसे व्यक्ति के साथ सबंध बनाते हैं जो दानवग्रस्ति है तो दानव इसे रासता मानते हुए दुसरे व्यक्ति तक पहुंच बनाने का उपयोग कर सकता हैं। आत्माए बंध जाती हैं, और एक साथ बंध जाती हैं। यदि आपको लगता हैं आपके पास कोई ऐसा है जो ईश्वरीय या स्वस्थ नहीं हैं तो उन्हें पाप के रूप में आप स्वीकार कर सकते हैं और यीशु के नाम से ऐसे बंधन तोड़ सकते हैं।

<u>आधर्मी आत्मा बंधन तोड़ने के लिए प्रार्थना</u>

परमेशवर ,मैं पिता पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में, प्रार्थना करता हूँ , मेरे और -----(व्यक्ति का नाम) के बीच स्थापित सब आधर्मी शारीरिक और आत्मिक बंधन को तोड़ दे। मैं उस हर पहुंच को जिस पर वह दावा करते हैं यीशु के खून तले लाता हूँ। मैं अपने विचार और काम को स्वीकार करता हूँ , जिससे ऐसे सबंध बने हो (अगर दिमाग से कोई खास बात याद आती है तो उसका इकरार करो) पिता मुझे पूरी तरह से अपने आत्मा से भर दे। **यीशु के नाम मैं आमीन।**

बचपन में दी गई पहुंच को तोडना।

आपके अपने बचपन से जो पाप रुपी हुआ है उसे कबूल करें और यीशु के खून तले लाए। (1यहुन्ना 1:9) यहा तक की अगर यह आपका पाप नहीं हैं तो भी जो हुआ है उसे आप मानते हुए इसकी शक्ति को यीशु के खून से तोड़ दे। इन क्षेत्रो में जो भी दोषी या प्रभावशाली रहा हैं उसे माफ़ करें। यीशु के नाम में वह हर पहुंच वापस लें लें जिसका उपयोग दानव कर सकते हैं। इनमे से किसी के परिणाम से चंगाई पाने और पवित्र आत्मा से भर जाने के लिए प्रार्थना करें। दावा करें कि जैसे 2 कुरिन्थियों 5:17 मे कहा गया है कि यीशु मे अब आप एक नई रचना है ,पुरानी सब चीजे चली गई।

अपने स्वंय के बच्चो में पाप और विशेष रूप से इसमें अपने हिस्से को स्वीकार करें , इसे यीशु के खुन तले डाल दे (1यहुन्ना 1:9)। इसमें जो भी शामिल है (आप खुद या दूसरा कोई) उसको क्षमा करें। उस हर पहुंच को जिसका दानव उपयोग कर सकते हैं उसे यीशु के नाम में वापस ले लों। इनमें से किसी के परिणाम से चंगाई पाने और पवित्र आत्मा के द्वारा भरे जाने के लिए प्रार्थना करें। उनके लिए नियमित और विशेष रूप से प्रार्थना करें। यदि वे विश्वासी हैं तो उनके लिए 2 कुरिन्थियों 5:17 का दावा करें (वह अब नई रचना हैं पहली सभी चीजे चली गई)। यदि वे विश्वासी नहीं हैं तो उनके उद्धार के लिए प्रार्थना करें।

इस क्षेत्र में हमारे लिए परमेशवर का वायदा यह हैं : **इस लिए यदि कोई मसीह में हैं तो वह नई रचना हैं पुराना सब कुछ जाता रहा और नया हो चूका हैं 2 कुरिन्थियों 5:17**.

ग. <u>सबंधात्मक हमला</u>

हमारे हमलो के सब से सामान्य कारणो में से एक यीशु के प्रति हमारी प्रतिबद्ता है। किले पर हमला सिर्फ इसलिए होता हैं क्योकि वह वहा मौजूद है, उन लोगो के लिए खतरा हैं जो नहीं चाहते की वह वहा हों।

हमे कुछ भी नहीं करना हैं - बस यीशु के साथ हमारा बने रहना शैतान के हमलो को आकर्षित करेगा जो परमेशवर के राज्य का जिस तरह भी हो सके विरोध करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। शैतान सीधे यीशु पर हमला नहीं कर सकता इसलिए वह अपनी नफरत और गुस्सा परमेशवर के बच्चो पर निकालता हैं ,इसीलिए यहूदियों ने वर्षो से इस तरह से उत्पीड़न का अनुभव किया हैं। जब हम शैतान की सेना में थे , और यहां तक की जब हम तटस्थ और अप्रभावी थे तब दानवो को हम पर प्रयास करने मे समय बरबाद करने की आवश्यकता नहीं थी। लेकिन जब हम यीशु की सेवा करने और उसके राज्य के निर्रमाण के लिए प्रतिबद्ध हो जाते हैं , तो हम देखते हैं कि वह हमारे आध्यात्मिक दुश्मन बने होते हैं , जो हमे नष्ट करने के लिए जो वह कर सकते हैं करने के लिए वचन बद्ध होते हैं , कभी कभी ये हमले प्रत्यक्ष होते हैं और कई बार वे अप्रत्यक्ष पहुच आपनाते है। हमारी शादी अर्थव्यवशथा , बच्चो या स्वास्थय पर हमे हतोत्साहित करने के लिए हमला किया जा सकता हैं और हमें मसीह के काम में सर्किय रूप से भाग लेने के लिए संधर्ष करना पड़ सकता हैं।

ये हमले दुसरो के विरोध का रूप भी ले सकते हैं। कोई ऐसा व्यक्ति हो सकता हैं जो आपके जीवन को कठिन बना सकता हैं। यही कारण है जो शैतान ने अय्यूब पर हमला किया - क्योकि वह अपने विश्वास में प्रभावी था और शैतान उसे रोकना चाहता था। ऐसा लगता हैं कि पौलूस के मांस का कांटा शैतानी हमले का कारण ही था (2 कुरिन्थियों 12)।

हम कैसे बता सकते हैं कि पतित संसार में शरीर या जीवन की सामान्य समस्या क्या है, शत्रु का आक्रमण क्या है? यदि यह एक लंबी चल रही लड़ाई लाता हैं , और विशेष रूप से यदि आपको इस पर विजय प्राप्त करने में परेशानी हो रही है तो आपको गहरे कारणों की तलाश करनी चाहिए। और अगर यह एक बहुत ही नया , बहुत अचानक हुआ हमला हैं जो आपको डूबने और हारने कि धमकी देता हैं। यदि यह कुछ बड़ा हैं जो कहाँ से आया हैं इसका पता नहीं हैं , जैसे कि एक विशाल लहर जो आपको मिटा देने कि धमकी देती हैं। फिर आध्यात्मिक कारणों पर भी शक करें।

अपने आप को अपनी संपत्ति और अपने परिवार की सुरक्षा बाड़े के लिए प्रार्थना करें जैसे अय्यूब ने किया (अय्यूब 1:4 -5 , 10 -11)। मार्गदर्शन के लिए परमेशवर के वचन की और मुड़े : परमेशवर गर्व का विरोध करता है, लेकिन विनम्र को अनुग्रह देता हैं। अपने आप को परमेशवर के सामने समर्पित करो, शैतान का विरोध करें और वह आप से दूर भाग जायेगा। परमेशवर के समीप आओ और वह तुम्हारे निकट आएगा। (याकूब 4:6-8)। परमेशवर से प्यार करने वालो की भलाई के लिए सभी चीज़े मिलकर काम करती हैं (रोमियो 8:28)। आपका कोई परिक्षण नहीं किया गया हैं लेकिन ऐसा होना आम हैं। आप के सहन करने से ज्यादा परमेशवर आप पर परिक्षण करने की अनुमति नहीं देगा लेकिन परीक्षण से बचने का एक तरीका होगा जिससे आप सहन कर सकते हैं (1कुरिन्थियों 10:13)।

घ. अधियात्मिक हमला

हमारी अधिकांश लड़ाइयों का प्रभुख कारण खासकर अगर हम उन पापो से झूज रहे है जो हमे पराजित करते हैं। ये हमारे बचाव में दरारे और सड़े हुए स्थान की तरह हैं। यह हमले और हार के लिए एक निशिचत निमंत्रण है।

बच्चो के लिए आत्म - केद्रित्ता गर्व विद्धोह , क्रोध , और अक्षमता जैसे पाप इस क्षेत्र में विशेष रूप से घातक है। विद्धोह (1शमूएल 15:23) अनैतिकता , मादक द्रव्यों के सेवन , अभिमान और आत्म अस्वीकृति वे पाप हैं जो किशोर करते हैं जो उन्हें शत्रु के लिए खोल देते हैं। वयस्कों के लिए किसी भी चल रहे पाप संरक्षक , अभिमान, लालच , क्रोध ,वासना आदि दानवी हमले के लिए रासता हो सकते हैं। पापो की सूचि जो विशेष रूप से दानवी पहुंच की अनुमति देने के लिए प्रवीण हैं , इस पुस्तिका में पेज 20,32-33 पर सूचीबद्व हैं। दानव मनुष्य के पापो की मोटी मात्रा को प्यार करते हैं , इसलिए सूचेत रहो , दानव चूहों की तरह होते हैं जो कचरे के लिए आकर्षित होते हैं। चूहों से छुटकारा पाने के लिए आपको कचरे से छुटकारा पाना चाहिए। क्योकि यह हमारे लिए पाप होगा।

परमेशवर से प्रार्थना करें की वह आपको आपके जीवन में पाप दिखाए जिन से आप प्रभावी ढंग से निपट सकें। भजन सहिता 139:23-24 **हे परमेशवर मुझे जांच कर जान ले ! मुझे परख कर मेरी चिंताओं को जान ले। और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल हैं कि नहीं और अनंत के मार्ग में मेरी अगुवाई करें।**

पाप कबूल किया जाना चाहिए (1यहुन्ना 1:9)। इसका मतलब है कि आप को परमेशवर जैसे देखता हैं उसी तरह देखना। इसमें विचार कार्य , उदेश्य और चूक के पाप शामिल हैं। उपवास विनम्रता दिखाने और पाप पर विजय प्राप्त करने का एक तरीका हो सकता हैं (भजन सहिता119:10 , व्यवस्थाविवरण 8:2-3 ,11-14 , यशायाह 58:3)। उपवास के बारे में अधिक जानकारी के लिए पेज 56-57 देखे।

<u>याद रखे , परमेशवर विजय का वायदा करता हैं।</u>

परमेशवर का धन्यवाद हो , वह हमे हमारे प्रभु यीशु मसीह के मध्यम से विजय देता है। (1कुरिन्थियों 15:57) परन्तु परमेशवर का धन्यवाद हो जो मसीह में सदा हम हो जय के उतसव मे लिए फिरता है (2 कुरिन्थियों 2:14) संसार पर जय पाने वाला कौन हैं ? केवल वह जिसका यह विश्वास है कि यीशु मसीह परमेशवर का पुत्र हैं। (1यहुन्ना 5:5)।

इसलिए आए पाप को परिभाषित करें। पाप वह है जो हम करते हैं जो हम सोचते हैं या जो हम महसूस करते हैं उससे विपरीत जो यीशु सोचता या महसूस करता। यह ऐसा कुछ भी हैं जो हम कर सकते हैं ,सोच सकते हैं ,या महसूस कर सकते हैं कि वह सही है और वह चाहता है कि हम यह करें लेकिन हम नहीं करते हैं ,न सोचते हैं और न महसूस करते है। या यह कुछ अच्छा हो सकता है जो हम करते हैं , सोचते हैं या महसूस करते हैं लेकिन करते हैं , सोचते हैं या अपने स्वंय के स्वार्थी कारणों से प्रेरित महसूस करते हैं। कार्य से ज्यादा मकसद अधिक पाप है |

आए विशेष रूप से कुछ ऐसे पाप क्षेत्रो पर नजर डाले जो विशेष रूप से या तो कारण या प्रभाव से , दानवग्रस्ति है।

क्रोध आधारित पाप

दानवग्रस्ति के प्रमुख्य कारणों में से एक हैं क्रोध जिसको माना न गया हो। क्रोध में किसी भी प्रकार कि अक्षमता , कुड़वाहट, घृणा , इर्षा , चुगली , आलोचना आदि शामिल हैं। पौलूस का कहना हैं कि यह शैतान को पैर रखने कि जगह दे सकते हैं (इफिसियों 4:26-27) वह कुरिन्थियों से कहता है कि यदि वे एक दूसरे को माफ़ नहीं करते तो शैतान उनका उपयोग करेगा। (2 कुरिन्थियों 2:10-11)। यीशु ने स्वंय कहा है कि जो लोग दुसरो को क्षमा नहीं करते हैं उन्हें पश्चाताप करने के लिए दानवो को पीड़ा देने के लिए बदल दिया जायेगा। (मत्ती 18:34)। इस क्रोध में दुसरो के प्रति क्रोध माता -पिता के प्रति क्रोध, अपने प्रति क्रोध या परमेशवर के प्रति क्रोध शामिल हैं। इस पहुंच का उपयोग करने वाले दानवो को दूर नहीं किया जा सकता जब तक सभी क्रोध वास्तव में कबूल नहीं किये जाते और यीशु के खुन में डाल दिए जाते। यह पहली चीज़ है जो आम तौर पर तब आती है जब हम लोगो के साथ बातचीत करते हैं और उनके उद्धार के लिए प्रार्थना करते हैं। इसे हल्के में मत लें।

दुसरो को क्षमा करने के लिएप्रार्थना

यीशु , मौत सहने के लिए तेरा धन्यवाद हो , ताकि मुझे क्षमा मिल सके। मुझे क्षमा करने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। यह मेरी स्वंत्रत इच्छा चुनाव हैं कि मैं उनको माफ़ करों जिन्हों ने मुझे दुःख पहुंचाया हैं (लोगो के नाम) मुझे इसके लिए क्षमा कैरे जो कुछ मैने उन्हें वापसी चोट पहुंचाने के लिए सोचा या किया हो। मैं उस दर्द को आपके सामने रखता हूँ कि आप उसे दूर करें। यीशु के नाम पर मैं वह हर अधिकार वापस लेता हूँ जो मैंने उन्हें, उस दर्द के लिए पीड़ित होना, पढ़े की आवाज में महसूस किया हो , कि जो दुःख उन्होंने मुझे दिया उनको भी सहना पढ़े यीशु के नाम में मैं प्रार्थना करता हूँ।

मूर्तिपूजा आधारित पाप

पाप जो विशेष रूप से परमेशवर से बढ़कर किसी चीज़ को या किसी व्यक्ति को पहल देने से होते हैं वह दानवो के लिए भी खुले रास्तो का रूप बनते हैं। परमेशवर का स्थान किसी और चीज़ को देना मूर्तिपूजा हैं और यह परमेशवर द्वारा मना किया गया हैं (निगर्मन 20:3,4 ,23 , 23:24) इन पापो में लालच, इर्षा , भौतिकवाद या किसी चीज़ को परमेशवर से अधिक पहल देना (व्यवसाय, धन, दौलत आदि या किसी साथी बच्चे माता - पिता या खुद आदि) शामिल है। जब हम परमेशवर के आलावा किसी दूसरी चीज़ या व्यक्ति को पूजते हैं तो वह दानवो को प्राप्त होती हैं (जकर्याह 10:2 , 1कुरिन्थियों 10:19 - 21)। हनान्या और सफीरा इसी लिए दोषी थे (प्ररितो के काम 5:3)। आध्यात्मिक व्यभिचार कुछ ऐसा हैं जिससे परमेशवर घृणा करता हैं (यिर्मयाह 3:8-10 ,यहेजकेल 16 :23-43,23:24-30 ,प्रकाशितवाक्य 17:1-5) ,ये दिमाग में शुरू होता है (न्यायिओं 2:10-13, यहेजकेल 14:7)।

अनैतिकता आधारित पाप

परमेशवर ने विश्वासियों और मसीह कि महान एकता दिखाने के लिए सेक्स बनाया। (इफिसियों 5) इसलिए शैतान इस मॉडल को बिगाड़ने और नष्ट करने कि पूरी कोशिश करता हैं। शादी से बाहर कोई भी सेक्स पाप है (इफिसियों 5:3,5-6) इसमें विचार भी शामिल है (मत्ती 5:27-30)

यौन पापो में कुछ ऐसे तत्व हैं जो अन्य पापो में नहीं हैं। जब आप किसी व्यक्ति के साथ शरीर मिलाते हैं तो जो दानव उस व्यक्ति के साथ एकजुट है आपका उस दानव के साथ एकजुट हो जाने का रास्ता खोलता हैं। भले ही यह किसी वैश्या के साथ यौन वासना ही हो यह उसमें भी लागु होता हैं (1कुरिन्थियों 6:16) यौन एक विशेष सघं बनता हैं , एक आध्यत्मिक एकता दो लोगो के बीच सब कुछ साझाकरण की शुरुआत। अक्सर दानव एक व्यक्ति से दूसरे तक पहुंच के रूप में यह दावा करेगा। यह एक आध्यत्मिक ऐड्स बीमारी की तरह हैं बहुत ही स्क्रमिक और बहुत ही बुरे परिणाम के साथ।

यह हर विश्वासी के लिए महत्वपूर्ण हैं कि वह अपने अतीत कि सभी अनैतिकता को कबूल करें और साथ -साथ उस अधिनियम द्वारा शैतान की सेनाओ की किसी भी पहुंच को वापस लें। और उसे यीशु के खुन तले लाए। परमेशवर से बिनती करें कि वह आपको आध्यत्मिक रूप से चंगा करें और शुद्ध करें। बेशक एक अच्छा आध्यत्मिक जीवन (हर सुहब भक्ति में परमेशवर से जुड़नाअपनी बाइबिल पढ़ना आदि) एक जरुरी क्रिया हैं। जब कोई व्यक्ति पहली बार लुभाया जाता हैं जो पहला विचार उनके दिमाग में आता हैं तो उन्हें विचार पर विजय प्राप्त करनी चाहिए और इसे रहने और बढ़ने नहीं देना चाहिए। विजय केवल पवित्र -शास्त्र के हवाले से होती हैं। यीशु ने पवित्र शस्त्र के हवाले से शैतान पर विजय प्राप्त कि और वह हमारी आत्मा की तलवार है। यहां कुछ हिस्से दिए गए हैं जिनका आप उपयोग कर सकते हैं। प्रलोभन के तुरंत बाद उन्हें पढ़न शुरू करें और प्रलोभन से आगे पहुंच जाने तक रुके नहीं 2 कुरिन्थियों 5:17, भजन सहिता 51:10-12 ,रोमियो 12:1, याकूब 4:6-8 , 1 यहुन्ना 4:4 , फिलिप्पियों 4:19 ,मत्ती 16:23, भजन सहिता 139:23-24 , 2 कुरिन्थियों 5:17 ,12:9-10 ,1 पतरस 5:8-9 , आयूब 31:1, मत्ती 5:27 -28 यह आयतें आपकी जीत के लिए तकवार हो सकती हैं। सुनिषत करें कि आपके पास एक जवाब देहि साझेदार है जो आपकी जाँच करेगा और आपके लिए वहा होगा।

यौन पापो से क्षमा के लिए प्रार्थना

पिता मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने आपकी अवज्ञा कि हैं और यौन पाप किया है। कृपया मुझे क्षमा करें -----(विशेष रूप से प्रत्येक पाप को स्वीकार करें)। मैं इन पापो के माध्यम से किसी भी दानव को दी गई पहुंच को वापस लेता हूँ और मैं इसे प्रभु यीशु मसीह के खुन तले रखता हूँ। यीशु के नाम में मैं इन दानवो को इसके कारण मेरे या मेरे परिवार के खिलाफ कोई भी दावा करने से रोकता हूँ। कृपया मुझे इन यादो से दूर करें और मेरी मदद करे कि मैं इन पापो को दुबारा न दोहराऊं। मुझे अपने पवित्र -आत्मा से भर दो और मुझे अपनी महिमा के लिए उपयोग करें। यीशु के नाम में। आमीन।

गलत आत्मछवि आधारित पाप

जबकि अक्सर आज कल एक अच्छी आत्मछवि बनाने कि आड़ में स्वंय पर बहुत अधिक ध्यान केन्द्रित किया जाता हैं , सच यह है कि हमे खुद को जैसा परमेशवर ने बनाया हैं स्वीकार करना चाहिए (भजन सहिता 139)। हमे खुद को स्वीकार करना हैं जैसे दुसरो को स्वीकार करते हैं (लुका 10:27) - कमजोरीयां और शक्तियां दोनों को स्वीकार करना हैं बिना एक को दूसरे से अधिक बढ़ाते या घटाते हुए। अपनी शक्तियों को ज्यादा जोर देना गर्व है , और यही पाप है जिससे शैतान का पतन हुआ। वह आज इसका अधिक से अधिक उपयोग करने कि कोशिश करता हैं। दूसरा चरम हैं (अपनी शक्तिओ को कम

करके आंकना) यह उसके बराबर हैं कि हम खुद को परमेशवर द्वारा बनाये गए रूप में न मानते है न स्वीकार करते हैं। स्वाभिमान और स्वार्थ दोनों गर्व से हैं। दोनों स्वंय पर ध्यान केन्द्रित करते हैं और स्वंय के साथ व्यस्त हैं। एक में हम अपने आप को दुसरो से बेहतर देखते हैं और दूसरे में हम अपने आप को दुसरो से बुरा देखते हैं। दोनों निशिचत दरारे हैं , दानवग्रस्ति के लिए पाप, जिनको कबूल किया जाना चाहिए।

राजा शाऊल ख़राब आत्मछवि के साथ किसी का एक अच्छा उदाहरण हैं , कोई ऐसा व्यक्ति जो असुरक्षित था और सोचता था कि वह दुसरो से नीचा हैं (1शैमुएल 10:22)। यह एक दरार थी जिसने उसे दानवग्रस्ति के लिए खोला (1शैमुएल 16:14,23)। जितना दुसरो को क्षमा करना महत्वपूर्ण है उतना ही अपने आप को क्षमा करना हैं। शैतान अतीत के पापो को उठाने कि कोशिश करता है जिससे हम पराजित ,आयोग्ग आदि महसूस करें। अगली बार जब शैतान आपको आपके अतीत कि याद दिलाता हैं तो आप उसको उसके भविष्य की पाद दिलाये।

दरारों को बंद करना

पाप का एकमात्र इलाज यीशु का खुन हैं। आपके जीवन में आपके द्वारा पहचाने गए किसी भी पाप को कबूल किया जाना चाहिए (स्वीकार करो की यह पाप है - 1यहुन्ना 1:9)। पाप के कारण होने वाली दानवग्रस्ति से मुक्ति का अन्य कोई तरीका नहीं हैं। दानव चूहों की तरह होते हैं जो कचरो पर भोजन करते हैं। कचरा हटाओ चूहे अपने आप हट जाएगें।

पापो की क्षमा और उद्धार के लिए प्रार्थना

प्रिय स्वर्गीय पिता आपने हमे बताया है कि हम प्रभु यीशु मसीह के सामने सब कुछ रख दे और आपने शरीर की अभिलाशायों के लिए कोई प्रावधान न बनए (रोमियो 13 :14)। मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने अपने आप को पापी कामो और व्हिचारो के लिए दिया हैं। मैंने वह जो कुछ करना चाहिए था नहीं करने के द्वारा पाप किया हैं और जो सही किया है उसको स्वार्थी उदेश्यो के लिए करने के द्वारा भी पाप किया है। मुझे पता हैं कि मसीह में मेरे पापो को क्षमा कर दिया गया है ,परन्तु मैंने आपके पवित्र कानून का उलंघन किया हैं और दुश्मन को आपने विरुद पाप करने का मौका दिया हैं (इफिसियों 4:27 , याकूब 4:1,1पतरस 5:8)। मैं इन पापो को स्वीकार करने के लिए और आपकी पवित्रता पाने के लिए आपकी उपस्थित में आता हूँ। कि मुझे पाप के बंधन से मुक्त किया जाये (गलतियों 5:1)। मैं आप से अपने मन में वह पाप प्रगट किए जाने के लिए प्रार्थना करता हूँ जो मैंने किए और जिसके माध्यम से मैंने पवित्र आत्मा को दुखी किया। (प्रत्येक पाप को स्वीकार करें जो एक एक करके दिमाग में आते हैं)। यीशु के नाम में मैं वह हर जमीन वापस लेता हूँ जो दुष्ट आत्माओ ने मेरे पाप के माध्यम से प्राप्त कि हैं। कृपया मुझे अपनी आत्मा से भर दें और अपनी महिमा के लिए उपयोग करें। मैं इसे अपने प्रभु और मुक्ति दाता यीशु मसीह के अदभूर्त नाम में मांगता हूँ। आमीन

आम पापो कि सूची

निम्नलिखित पाप उनके उदाहरण हैं तो शैतान और उसके दानवो को आपका दानवग्रस्ति करने को उपयोग करने कि अनुमति दे सकते हैं। यदि आप अब यह कर रहे हैं , तो आपको उन्हें स्वीकार करना

होगा और इन माध्यमो से शैतान को दी गई पहुंच वापस लेनी होगी। अगर आप इन्हे नहीं कर रहे हैं तो भी उनको स्वीकार करें और उनका तयाग करें। अगर आपके किसी नजदीकी रिश्तेदार ने ऐसा किया हो और शैतान ने उसके माधयम से आप पर हमला लिया हो तो परमेशवर से प्रार्थना करें कि वह आपका मार्गदर्शन करें। यह सूची पूरी नहीं हैं लेकिन आप को बहुत चीजों का अंदाजा लग जाएगा।

जब इन्हे कबूल किया जाता हैं और तयाग दिया जाता हैं तो परमेशवर के लिए उस जमीन का दावा करें जिसका कभी शैतान ने इन पापो के माध्यम से अपनी होने के किए किया होगा। तब सुनिशचत करें कि आप ने अपने उन क्षेत्रो को पवित्र आत्मा से भरने के लिए प्रार्थना की हैं। अगर इन्हे पवित्र आत्मा से प्रतिस्थापित नहीं किया जाता है तो शैतान फिर से मजूबत फैशन में प्रवेश करेगा (मत्ती 12:43-45 , लुका 11:24 -26) यदि पवित्र आत्मा (प्रेम ,आनंद , शांति ,धैर्य ,दया ,अच्छाई, विश्वास ,सौम्यता और आत्म नियंत्रण , गलतियों 5:22 -23 का कोई फल विशेष रूप से हैं जो आप ने कबूल किया हैं उसके विपरीत कार्य करने के लिए तो परमेशवर से प्रार्थना करें की वह आपके अंदर इन्हे पुन उत्पादिक होने दे प्रार्थना करते समय विशिष्ट बने।

<u>यौन पाप</u>

-------व्यभिचार
-------पर स्त्री गमन
-------अश्लीलता
-------पशुता यौन (कल्पनएँ)
-------हस्तमैथुन
-------समलैंगिक
-------बलात्कार
------- प्रदर्शन

<u>ड्रग्स</u>

-------जायज (नशो के नाम)
-------नजायज (नशो के नाम)
-------शराब
-------निकोटिन

<u>मूर्तिपूजा</u>

-------पूर्वी धर्म (नाम)
-------ध्यान -जय मंत्र
-------अमंत्रण
-------सनक (नाम दे)
-------रोमन कैथोलिक
-------गुप्त आदेश
-------भौतिक चीज़े

-------लोग (नाम**)**

<u>मनोगत अभ्यास</u>

------जोतिष विद्या
------भविष बताना
-------उइजा बोर्ड
-------आत्म आहान
-------सम्मोहन
-------जादू टोना
-------मन पर नियंत्रण
-------मानसिक चिकित्सा
-------अन्य

<u>डर</u>

-------चिंता
-------निराशा
-------दबाव
-------घबराहट

<u>शक्क</u>

-------शक्क
-------विश्वाश की कमी

<u>क्रोध</u>
-------परमेशवर के प्रति
-------खुद के प्रति
-------माता-पिता के प्रति
-------दूसरे के प्रति
-------बदला लेने की जोशीली भावनए
-------न माफ़ करना

<u>ईष्शा</u>

-------लालच
-------ईष्शा
-------विद्रोह (आधिकारी के प्रति)

<u>अभिमान</u>

-------आत्म क्रेन्द्रनिता
-------गरीब आत्मछवि

-------आत्मनिर्भरता

झूठ

-------शैतान के झूठ पर विश्वास करना
-------ईमानदारी की कमी
-------छल कपटता

चोरी

-------चोरी करना
-------जुआ खेलना

शराप देना

-------शराप देना
-------निंदा करना
-------बदनामी
-------गपशप

हिंसक काम

-------आत्म हत्या का प्रयास
-------गर्भपात
-------बलत्कार
-------लड़ाई

गैर कलामी उपहार (बाइबिल के बाहर)

-------भाषाये (ढूढनां या हाथो का रखना)
-------दर्शन
-------चंगाई (सभी को चंगाई देने की क्षमता की मांग)
-------अन्य

शैतानियत

-------शैतान के साथ सौदेबाजी
-------शैतान की आराधना

संगीत

-------मनोगत व्यक्ति
-------शैतानी

--------संगीत

<u>शराप और प्रभाव</u>

--------और कुछ भी जिस के लिए आप आपने आप को दोषी मानते हैं(नाम)
------ जो कुछ आप के मन में आया जब आप सूची पढ़ रहे थे।

<u>मनोगत और नया युग</u>

ऐमज़ॉन नदी के तट पर रंगीन बढ़ी मकड़ियों की एक प्रजाति रहती हैं। जब वह अपने आपको फैलाती हैं तो वह एक शानदार खिले हुये फूल सी नजर आती हैं। जब मधुमखीयां और कीड़े एक पराग को खोजने उस पर आते हैं तो वह एक मकड़ी की बजाए जहर पाते हैं जिससे वह मर जाते हैं। शैतान भी आज एक गुप्त और नए युग में आंदोलन के साथ ही काम करता हैं।

<u>समान्य रूप से मनोगत</u>

बाइबिल की कई आयते परमेशवर के लोगो को किसी भी प्रकार की मनोगत गतविधि में भाग लेने से रोकती हैं। मनोगत के पीशे दानव शक्ति होती हैं (प्रेरितो के काम 8:9-24 ,16 :16-18) जब के शारीरक पाप शैतान की सेना को रासता देते हैं ,मनोगत भागदारी शैतान की सेना को बहुत ज्यादा प्रवेश अधिकार देती हैं। यह सीधे दानव भागीदारी होती है और उनको अपने जीवन में काम करने की अनुमति देने का स्वेच्छा निमंत्रण होता हैं। व्यवस्थाविवरण 10:9-13 मे कुछ मुख गुप्त गतविधियों की सूची दी गई हैं जिस पर रोक लगी हुई हैं।

9.जब तू उस देश में पहुचे जो तेरा परमेशवर यहोवाह तुमें देता हैं ,तब वहां की जातियों के अनुसार घिनौना काम करना ना सीखना।

10.तुम में कोई ऐसा ना हो जो अपने बेटे या बेटी को आग में होम करके चढ़ने वाला, या भावी कहने वाला , या शुभ -अशुभ महूरतो को मानने वाला या टोन या तांत्रिक।

11.या बाजीगर या ओझो से पूछने वाला या भुत साधने वाला या भूतो का जगाने वाला।

12.क्योकि जितने ऐसे काम करते हैं वह सब यहोवाह के संमुख घ्रणित है और इन्ही घ्रणित कामो के कारन तेरा परमेशवर यहोवाह उनको तेरे साम्हने से निकालने पर हैं।

13.तु अपने परमेशवर यहोवाह के समुख सिद्ध बने रहना। व्यवस्थाविवरण 18:9-13

<u>अगनि में पुत्र या पुत्री का बलिदान</u>

मौलेक की पूजा (में शामिल हैं सितारों की पूजा ,जादू टोना , अटकल लगान आदि) मनशे ने ऐसा किया (2 राजा 2:1-17)।

<u>अटकल</u>

कोसिम केसामिम भविष्य बताना या अलौकिक शक्तियों द्वारा छिपे हुए ज्ञान की खोज करना। यहेजकेल 21:21 ने तीरों का इस्तेमाल किया (एक लेबल जिसे वह पसंद करते थे उसे उठाते थे) , या कलेजा (रंग और विन्यास)

<u>जादूगरनी</u> –

ग्रहो पर आधारित भविष्य बताना आदि ड्रग आम तौर पर इसका हिस्सा होते हैं (यूनानी में फमकिया ,गलतियों 5:20) इसका उल्लेख प्रेरितो के काम 8:9-24 में किया गया है !

<u>ओमैंन –</u> मनयेश

जानवरो के प्रवेश द्वारा ,पक्षियो की उड़ान का निरीक्षण करते हैं , विशेष रूप से वे सांपों की पीठ का उपयोग करते थे जब गुप्त जानकारी ,या ज्ञान को खोजना होता था।

<u>जादू टोना</u>

मेचासहेसक शाब्दिक तौर पर सच को प्रगट करने के लिए रहस्यों को ऊजागर करना आम तौर पर जादू या जादू टोना (ड्रग, जड़ी बूटी इतर दानवो को बुलाने के लिए आदि) । यहूदियों ने इसे मिसर में और मूर्तिपूजक लोगो से सीखा। यह मूर्तिपुजा (परमेशवर से बेमुख्य होने) के साथ जुड़ा हुआ है और दृड़ता से मना किया जाता हैं (2 राजा 9:22 , 2 इतिहास 33:6 , मीका 5:12 , नहूम 3:4)। परमेशवर ने ऐसा करने के लिए मृत्यु ढंड दिया (निर्गमन 22:18 , लैव्यव्यवस्था 20:27)।

<u>प्रभाव फेकना चोबर चाबर - एक आकर्षण ,सम्मोहन ,मंत्र , शराप</u>

माध्यम शीउल ओब एंगस्ट्रोमोथाई या वेंट्रिलॅक्विस्ट - मनुष्य के माध्यम से दानव का बोलना (यशायाह 8:19 , लैव्यव्यवस्था 19:31,20:27)। यह प्रेरितो के काम 16:16,18 में फाइथोन भावनओ के समान हैं। यह डेल्फी में अपोलो के द्वारा मारे गए अजगर / सांप का नाम हैं जो वहां की पुजारिन की रखवाली करता और उसे तांडव देता। इस प्रकार यह अपोलो वो आत्मा बन गया जिसके द्वारा देव ने उस व्यक्ति से बात की जिसके पास उन्हें ताड़व उचारण करने के लिए सक्षम किया गया था। इसे भाष्यों में बोलने के रूप में गलत समझा जा सकता हैं।

<u>सिपरिटिस्ट येडोनी एक जादूगर (पुरुष चुड़ैल)</u>

यह वह हैं जो दानवो से संपर्क करता हैं और जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करता हैं जो परमेशवर नहीं देता।

<u>मृतकों से परामर्श</u> - डोरेशएल हमेथिम नेक्रोमेसी। मृतकों से संपर्क करना मना है (लैव्यव्यवस्था 19:31,20:6,27 , 2 राजा 23:24 , 1इतिहास 10:13-14) शाऊल इंदौर की जादूगरनी के पास इसके लिए गया (1शमूएल 28:7-25)।

<u>मनोगत और दानवग्रस्ति</u>

आज के दिन की अनेक मनोगत की सूची यहां पर दी गई हैं। जबकि इस में सब कुछ तो नहीं हैं लेकिन उन पापो का अंदाजा हैं जिन्हे इस क्षेत्र में स्वीकार करने और टालने की जरूरत हैं।

--- एक्युपंचर

--- ताबीज (सौभाग्य पात्र)

--- मल्यांकन (बिना छुहे चीज़ो की हलचल)

--- स्वचालित लेखन (हाथ का उस समय में लिकना जब व्यक्ति सो रहा हो या सपने में हो)

--- ज्योतिष (खगोल विज्ञान नहीं)

--- सक्ष्म प्रोजक्शन (शरीर के बाहर यात्रा)

--- काला या सफेद जादू

--- क्लेरवांयस (पांच इंद्रियों के परे चीज़ो को समझना)

--- काफी ग्राउंड को पड़ना

--- रंग थरेपी (धागे या रौशनी का इस्तेमाल सुचना प्राप्ति के लिए करना)

--- आकर्षण (मंत्र, उपचार आदि)

--- आत्माओं को अमंत्रित करने के लिए मोंबतिया जलाना

--- क्रिस्टल बाल रीडिंग

--- दैवीकरण (भविष्य का अनुमान लगाना, कुछ रवो हुए को खोजना)

--- ड्रग (खासकर जो अवैध हैं)

---अतीनिद्रय सवेदन

--- नेत्र निदान (इरिडोलोजी, जानकारी बताने के लिए आरवों को पड़ना)

--- कामोत्तेजक और संबिंधत समग्री

--- आग में चलन

--- भविष्य कथन

--- ग्राफ विध्या (कुछ रूप सब नहीं)

---जड़ बूटी ज्ञानशास्त्र

--- राशि भविष्य

--- मनमोहितता

--- सुरक्षा के अक्षर

--- उंटोलन (किसी भी वस्तु का ऊपर उड़न)

--- किसी भी तरह का जादू

--- भौतिकताए (बिन छुहे चीज़ो का प्रगट व गायब हो जाना)

--- मन पड़ना

--- नैकरोमेंसी (मृतकों से बात करना)

--- न्यूमरोलोजी (नबर के द्वारा भविष्य बताना)

--- मनोगत चंगाई

--- मनोगत खेल (ड्रगन आईचिंग, क्रेसीकन आदि)

--- ओमेंस (भविष्य बताने के लिए घटना)

--- उईजा बोर्ड

--- लंगड (पैंडुलम)

--- हथेली पड़ना

--- पिरामिड शास्त्र

--- साइकेडिक लाइटस या संगीत

--- साइकोमैटरी (वस्तुये जो व्यक्तिगत जानकारी देती हैं)

--- स्वेदनशीलता

--- एक धागे पर सुई या अंगूठी

--- पहाड़ी संगीत (गैर मसीही)

--- विज्ञान शास्त्र

--- सीएसंस (मौसम)

--- टोना

--- सकरिनिग (हेक्स से सुरक्षा)

---शैतानी

--- कालिख (भविष्य बताने के लिए)

--- बेहोशी में बोलना

--- मंत्र (शराप देना या लेना)

--- आध्यात्मिक दर्शन

--- मेज बजाना या उठाना

--- भविष्य बताने वाला कार्ड

--- चाय की पतियो को पढ़ना

--- टेलीपेथी (असामान्य तरीके से संचार करना)

--- जीभ (ढूढ़ते हुए, पर हाथो रखना)

--- तरासेन्डटल मनन (पूर्वी धर्म)

--- विटगेनिक्स (स्वस्थ पहुंच)

--- पानी की चुड़ैल (निर्भर करता है इसके होने पर)

--- किसी भी रूप का योग

--- राशि चक्र, उनके साथ चलना

हो सकता है कि उचित रूप में इन में से कुछ एक का दानवग्रसती के साथ कोई लेन देन न हो पर मुझे यकीन है कि अन्य गतिविधियों और मान्यताओं को सूची में जोड़ा जा सकता हैं। मेरा उदेश्य निर्णयक सूची बनाना नहीं है ,परन्तु उन चीज़ो के प्रकारो पर एक विचार देना है जो हमे दानवी भागीदारी के लिए खोलती हैं। मकसद यह हैं कि इस प्रकार के पापो को स्वीकार किया जाना चाहिए , कबूल किया जाना चाहिए , और त्याग देना चाहिए , और हर तरह की पहुंच शैतान से वापस ले ली जानी चाहिए। फिर भी जो दानव इन क्षेत्रो में काम कर रहे हैं उन्हें यीशु के नाम में निकाल फेकना चाहिए। सूची को प्रार्थना पूर्वक और ईमानदारी से पढ़े और जांचे कि इसमे कौन सी चीज़ ऐसी है जिस में आप कभी शामिल रहे हो फिर उसे स्वीकार करें और त्यागे , और हर पहुंच वापस ले लें। दानवो को चले जाने का हुक्म दो।

मनोगत भागीदारी से उद्धार के लिए प्रार्थना

प्रिय परमेशवर मैं अपने गुप्त भागीदारी को पाप के रूप में स्वीकार करता हूँ (प्रत्येक विशिष्ट पाप को स्वीकार करें) मैं मनोगति स्वभाव के अपने सब पाप जो मैने किए हों यीशु के खुन तले लाता हूँ और आप से मुआफी कि प्रार्थना करता हूँ। इसके द्वारा शैतान को दी गई हर पहुंच मैं वापस लेता हूँ। मैं यह प्रार्थना यीशु के नाम से मांगता हूँ जो मेरे लिए लानती हुआ और क्रूस पर मर गया ताकि मैं आजाद हो जाऊ। आमीन

गुप्त समाज

हालाकि आज भी काफी लोगप्रिय, यहां तक कि मसीही ईलाकों में गुप्त समाजो के निशिचत मनोगत सबंध हैं। यह दूर से इतने स्पष्ट नहीं है लेकिन है ज़रूर स्कॉट्सडेल एरिज़ोन में होटल और मोटल पर्यटकों को लुभाने के लिए अपनी घास को हरा रंग देते हैं ,जब तक आप करीब नहीं पहुंच जाते तब तक आप इसमें अंतर नहीं बता सकते। इन समाजो के साथ भी ऐसा ही हैं। सीक्रेट समाजो में मेसन श्राइनर्स , एलक्स ,मूस ऑड फैलो और क्लु कलक्स क्लान जैसे समूह शामिल हैं। वे नकली धर्म है क्योकि वे परमेशवर के बारे में बात करते हैं और अच्छे होते हैं , उनके पास चर्च होते हैं ,वे प्रार्थना करते हैं पवित्रशास्त्र को उद्धत करते हैं और अक्सर मंदिरो में मिलते हैं। वे आज अपनी WASP नीतियों और अपनेपन से गर्व के कारण अपील करते हैं।

हलाकि जैसा कि नाम से स्पष्ट है , बाहर (और अक्सर बहुमत के भीतर भी) रहस्य होते हैं। शपथ के साथ शामिल होने की शपथ ली जाती हैं ,कि गोपनीयता शपथ टूट जाने पर छाप आये यह गोपनीयता शपत प्रतिबद्ताऐ है जो एक व्यक्ति को दानवी बनाने के लिए खोलती हैं। यीशु और बाइबिल इस गोपनीयता के खिलाफ हैं। (मत्ती 5 : 33,37 , याकूब 5:12 , निर्गमन 20:7 , यहुन्ना 18:20 इफिसियों 5:11-12)। इन समाजो में विश्वासियों को अविश्वासियों के प्रति असम्मानित किया जाता हैं। परमेशवर के बारे उनका द्रष्टिकोण गलत हैं (उनके पास एक गुप्त नाम है जिसे कुछ लोग लूसिफर कहते हैं , और अल्लाह और अन्य सभी देवताओ के साथ परमेशवर कि बराबरी करते हैं)। यीशु को तख्त से हटाया जाता हैं और बुद्ध , मोहम्मद , आदि के बराबर बनाया जाता हैं। प्रार्थना यीशु के नाम में नहीं हैं। समूह के अच्छे कामो के माध्यम से उद्धार का वादा किया जाता हैं ,और वह गलत हैं (इफिसियों 2:8-9)। यह समूह आम तौर पर खुद को चर्च और मसीही सहभागिता से बेहतर मांनते हैं। अपने नेताओ को आराधना भरा स्वामी जैसे उपाधि देते हैं जो पूर्ण रूप से निंदा हैं।

इन चीज़ो के पीछे कि शक्ति और अपील दानवी हैं। वे अराधना प्राप्त करते हैं और गौरव को बढ़ाते हैं। (1कुरिन्थियों 10:9-21, जकर्याह 10:2)। इन समूहों में से एक में शामिल होने से दानवग्रस्ति को स्पष्ट रूप से प्रवेश करने में मदद मिलेगी। एक बार परिवार में आ जाये फिर आम तौर पर यह पूर्वजो से आते हुए पीढ़ी दर पीढ़ी तक बनी रहती हैं भले ही कोई फिर गुप्त समाज में शामिल हो या ना हो।

इसका इलाज हैं इसे छोड़ना , पाप के रूप में इसकी भागीदारी को स्वीकार करना (1 यहुन्ना 1:9) और इसे यीशु के खून तले हर पहुंच के साथ लाना। यह शक्तिशाली दानव होते हैं, और इस त्याग को परमेशवर के उद्धार पर निर्भर करते हुए कई बार दोहराना चाहिए।

मैंसोनिक बंधन से छुटकारे के लिए प्रार्थना

प्रिय पिता , में मानता हूँ कि मैंसांनरी की भागदारी अधियात्मिक बंधन को रासता देती हैं। मैं अपने या अपने पूर्वजो के द्वारा किसी भी तरह से मैंसांनरी की भगीदारी को पाप के रूप में स्वीकार करता हूँ। मैं यीशु के नाम में उस हर पहुंच को वापस लेता हूँ जो इनके माध्यम से शैतान या उनके दानवो के लिए दावा बनी हो। मैं परमेशवर की संतान हूँ और मैं उसी का हूँ। मैं अपने ऊपर अपने किसी भी पूर्वज द्वारा अपने खिलाफ हर दावे को तोड़ता हूँ। मैं हर उस शराप और शपथ को तोड़ता हूँ जो मेरे पूर्वजो ने उठाये हो जिनका शैतान मेरे विरूद उपयोग करता हैं। मैं उन्हें यीशु के खुन तले लाता हूँ। मुझे अपने पवित्र - आत्मा से और आत्मा के फल से पूरी तरह भर दे। यीशु के नाम से मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

शैतानवाद

शैतानवाद आज सबसे तेज़ी से बढ़ते धर्मो में से एक हैं। इसका काला प्रभाव उनके लिए जो पहले से ही दानवग्रस्त हैं एक मजबूत अपील रखता हैं ,और इसमें किसी भी तरह की भागीदारी निशिचत रूप से एक व्यक्ति को दानवग्रस्ति के लिए खोलती हैं। बच्चे और किशोर ड्रग्स , सेक्स ,रॉक संगीत , फिल्मों और अन्य तरीको के माध्यम से इसकी तरफ अधिक से अधिक खींचे जाते हैं। शैतानवादियो का मानना हैं कि शैतान भोग विलासता का प्रतिनिधित्व करता हैं (संयम के बजाय) प्रतिशोध (दूसरे गाल को मोड़ने के बजाय) का प्रतिनिधित्व करता हैं ,और आपकी कामुक इच्छाओ को पूरा करता हैं। (आध्यात्मिक सपने सजाने के बजाय)। मनुष्य केवल एक अन्य जानवर (पशु) हैं जो किसी भी इच्छा को आनंद में बदलने ,के लिए स्वंतत्र हैं। यीशु कि विनम्रता और भविष्य के लिए जीने के बजाय शैतान शक्ति और तत्काल संतुष्टि का प्रतिनिधित्व करता है। शैतान निकट और चिंतत लगता हैं ,जो कुछ भी व्यक्ति चाहता हैं उसे जल्दी से करने के लिए तैयार हैं। शैतानवाद में भगीदारी आम तौर पर एक मार्ग का अंतिम परिणाम होता हैं जो बड़ी ही सूक्षम्ता से शुरू होता हैं और दानवग्रस्ति के लिए अनुमति देता हैं। बेशक परमेशवर महान हैं और इसे तोड़ा जा सकता हैं , लेकिन इसके साथ ऊपरी तौर से दिलचस्पी दिखाना भी बहुत गंभीर समस्या हैं।

मसीही किताबो कि दुकानों में कई अच्छी मसीही किताबे हैं जो इस विषय के बारे में बहुत अधिक विस्तृत जानकारी दे सकती हैं , जितनी हम यहाँ बता रहे हैं। यदि आवश्यक हो तो कृप्या अपने आप लाभ उठाये।

नया युग

नयू एज मूवमेंट व्यक्तियों और संगठनों का एक ढीला - ढाला समूह हैं ,जो मौलिक रूप से मानता हैं कि व्यक्ति सभी परमेशवर में विकसित होंगे और एक वैशिवक एकता प्राप्त करेंगे जो धार्मिक ,नस्लीय, सांस्कृतिक और राजनितिक विचारधाराओ को पार कर जाएगी।

इसको पहचाने सिर्फ इसलिए कि वह अच्छे अच्छे शब्दों का प्रयोग करते हैं ,गहरा विश्वास रखते हैं,और यहां तक कि शक्ति का प्रदर्शन भी करते हैं ,इसका मतलब यह नहीं कि यह परमेशवर कि ओर से हैं।

झूठे मसीह ओर झूठे भविष्दवक्ता उठेंगे ओर बड़े बड़े संकेत ओर चमत्कार दिखाएंगे ,अगर हो सके तो चुने हुयों को भी गुमराह कर देंगे देखो मैने आपको पहले से ही बता दिया (मत्ती 24:24-25)

किसी भी, और सभी प्रकार कि भागीदारी को पाप के रूप में स्वीकार करें (1यहुन्ना 1:9) और आप के द्वारा शैतान कि सेनाओ को दी गई हर पहुंच को यीशु के खून तले लाओ। अपने जीनव में दानवो को काम करने के लिए दी गई हर पहुंच को या रास्ते को वापस लें। यदि आपके परिवार में कोई भी इन मनोगत गतिविधियों (मनोगत ,शैतानवाद ,गुप्त समाजो ,या नए युग) , में शामिल रहा हो ,तो उसे यीशु के खून तले लाओ और साथ ही साथ उस हर पहुंच को जिन पर इस के माध्यम से दानवो ने आपके खिलाफ दावा करने कि कोशिश कि हो ,वापस लें ।

<u>उनके लिए प्रार्थना करना जो नए युग या मनोगत गतिविधियों में शामिल हैं।</u>

प्रिय स्वर्गीय पिता , मैं आपको सभी मनोगत प्रथाओं ,झूठे धर्म ओर झूठे शिक्षको को प्रगट करने के लिए विनती करता हूँ जिनके साथ मैं जाने या अनजाने में शामिल रहा हूँ। मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने ------में भाग लिया हैं। मैं आपसे क्षमा माँगता हूँ और मैं ------ को सच्ची मसीहयत के प्रति इसे नकली करार देता हुआ त्यागता हूँ। मैं इसके माध्यम से शैतान के दानवो को दी गई किसी भी पहुंच को वापस लेता हूँ। कृपया मुझे क्षमा करें , मुझे शुद्ध करें ,और मुझे अपने पवित्र -आत्मा से भर दें। मुझे अपनी महिमा के लिए उपयोग करें। यीशु के नाम में मैंप्रार्थनाकरता हूँ। आमीन

<u>मार्शल आर्ट और विश्वासी</u>

जबकि कई मसीही मार्शल आर्ट में भाग लेते हैं ,जो मुझे व्यक्तिगत रूप से लगता हैं की विश्वासियों के द्वारा उन्हें टाल देना चाहिए खास तौर से उन लोगो को जो दानवी हमलो के लिए खुले हुए हैं। मनन तकनीकों को भौतिक पहलू से अलग करना बहुत कठिन हैं। यह केवल शारीरिक व्याम नहीं हैं ,बल्कि वास्तव में गैर -मसीही धर्म में सहज रूप से सहज द्वार हैं। कुछ मसीही अभ्यास के लिए मार्शल आर्ट का अभ्यास करते है ,या फिर प्रचार के रूप में, लेकिन वास्तव में नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं। यदि यह काम करता हैं ,तो वे इसके बारे में सवाल नहीं पूछते हैं कि इसका क्या मतलब है। पूर्वी धार्मिक तकनीकों को अकसर तटस्थ के रूप में चित्रित किया जाता हैं , ताकि किसी भी धर्म का कोई भी जन उनका उपयोग कर सके , लेकिन मुझे लगता हैं कि यह बहुत ही भ्रामक हैं। हम अध्यात्मिक आयामों को नजरअंदाज करने कि कोशिश कर सकते हैं ,लेकिन अध्यात्मिक ऐतहासिक रूप से उनका अंतिम उदेश्य हैं। नए युग के विश्वासों का विश्वकोश मार्शल आर्ट को अध्यात्मिक शिक्षा के रूप में मानता हैं जो आत्मनिर्भरता या आत्म-ज्ञान की ओर काम करता हैं। किसी व्यक्ति के लिए मार्शल आर्ट्स को छोड़ना भावनत्मक रूप से मुश्किल हो सकता हैं ,क्योकि वे उनके साथ बहुत ही लिपटे हुए हो सकते हैं। यह विचार करने के बजाय कि वे खतरनक हो सकते हैं वे सख्ती से उनका अभ्यास करने के अधिकार का पक्ष करते हैं।

दानवग्रस्ति कि कारणों पर अनुभाग का निष्कर्ष

इसलिए कभी कभी हम जहाँ रहते हैं हैं इसके कारण हम पर हमला किया जाता - संपत्ति जिसके हम मालिक हैं या जहाँ हम रहते हैं। कई बार यह माता-पिता या उनके माता-पिता कि विजय के कारण होता हैं - उसी तरह हम पर हमला करते हैं। यह ऐसा कुछ हो सकता हैं जो हमने किया है या जीवन में हमारे साथ पहले कभी हुआ है। इसके आलावा यह हमारे जीवन में पाप के कारण हो सकता हैं। यह हम पर हमला किया जा सकता हैं क्योकि हम शैतान के दुश्मन हैं जैसे अब हम परमेस्वर के राज्य का समर्थन करते हैं। हमले कि दिशा को समझने से आपको पता चल सकता हैं कि बचाव कैसे करना हैं और हमले पर विजय हासिल कैसे करना हैं।

IV इलाज

क-स्वंतत्रता का स्रोत

इससे पहले कुछ भी कहा जा सके कि उद्धार कैसे लाया जाऐ ,इस बात में कोई संदहे नहीं होना चाहिए कि उद्धार किसकी शक्ति में हैं। यह हमारे स्वंय के बल में नहीं किया जा सकता , हमारे पास दानवग्रस्ति को हटाने कि कोई शक्ति नहीं हैं (मरकुस 9:14-18)। वास्तव में ,हम अपनी ताकत में ऐसा करने से फ़ायदे से ज्यादा नुकसान कर सकते हैं अगर यीशु कि शक्ति से नहीं करते तो (प्रेरितो के काम 19:13-20)। यहाँ तक कि माइकल प्रदान दूत ने भी शैतान को परमेस्वर के द्वारा फटकारे जाने दिया ओर खुद ऐसा नहीं किया (यहूदा 9)। हमे परमेशवर कि दी गई शक्ति में मजबूत होना चाहिए। अपनी में नहीं। हम केवल यीशु कि समर्थ और ताकत में मजबूत हो सकते हैं (इफिसियों 6:10-18)।

हम यीशु में मजबूत हैं, केवल यीशु से नहीं (इफिसियों 6 :10 -18) ताकत केवल एक करीबी वक्तिगत सम्बन्ध और उस पर निर्भरता से आती है । ऐसा इसलिए है क्योकि यीशु ने शैतान को हराया हैं ।(इफिसियों 1:20-22 ,फिलिप्पियों 2:9-11,कुलसियो 2:15 ,इबनियो 2:14 , 1यहुन्ना 3:8,लूका 4:18)।

यीशु में हमारे पास **शक्ति** (डुंनमिस)लूका 9:1, 24:49 , प्रेरितो के काम 1:8,4:33 , 6:8 ,इफिसियों 1:18-23 ,इब्रानियों 2:14-15) और **अधिकार** हैं (एकजूसिया -लूका 10:1,17-20 ,मत्ती 10:1,8 , मरकुस 3:15,6:7, 1यहुन्ना 4:4) । शक्ति पवित्र आत्मा के अंदर होने से आती हैं (प्रेरितो के काम 1:8) अधिकार उस रिश्ते से आता हैं जो यीशु के बालक जैसा हैं (यहुन्ना 1:12)। एक पुलिसकर्मी के पास अधिकार (बैज) और शक्ति (बंदूक या कलब)दोनों होते हैं। दोनों स्रोत से आते हैं जो उसके बाहर होता हैं जैसे हमारा (कुलुस्सियों 12:9-10) । शैतान के पास भी शक्ति और अधिकार हैं (लूका 10:19 ,1कुरिन्थियों 15:24 , इफिसियों 1:21,2:2 , 3:10 ,6:12 1पतरस 3:22 ,लूका 4:6 , प्रेरितो के काम 26:10)। दानवो के पास भी यह हैं (प्रकाशितवाक्य 9:3,10,19 , कुलसियो 1:16, 2:10 , 1पतरस 3:22)। परमेशवर की शक्ति और अधिकार शैतान और दानवो कि शक्ति और अधिकार से श्रेष्ठ हैं यीशु के बिना मनुष्यो के पास कोई शक्ति और अधिकार नहीं हैं, जो शैतान और दानवो के आस -पास भी गिनी जा सके।

सभी क्षेत्रो में यह **यीशु की ताकत** है। हमारी नहीं जो हमे विजय दिलाती हैं (फिलिप्पियों 4:13)। परमेशवर हमे शक्ति देने का वादा करता हैं (2 तीमुथियुस 1:7, 2 थिस्सलुनीकियो 3:2-3) परमेशवर हमे मजबूत रखने के लिए अपने वादों के लिए वफादार हैं (गिनती 23:19, फिलिप्पियों 1:4-6, इब्रानियों 10:22-23।हमारा काम उसकी ताकत का उपयोग करना हैं। हमे लड़ना हैं लेकिन उसकी ताकत में। हमे परमेशवर के द्वारा प्रदान किये गए कवच को पहनना हैं और उसकी शक्ति में खड़े रहना है (इफिसियों 6:10-18)। हम से वादा किया गया है की जब हम परमेशवर की शक्ति में शैतान का सामना करेंगे तो शैतान भाग जाएगा। (याकूब 4:7, 1पतरस 5:8-9)। जब हम उसकी ताकत में लड़ते हैं तो विजय निश्चित हैं (1 कुरिन्थियों 15 :57 , 2 कुरिन्थियों 2:14 , 1यहुन्ना 5:5)। फ्रेंच पेटर ऐमिल रानोफ़ ,ए हेल्पिंग हैड नामक पेटिंग में मछुआरे की वेशभूषा में एक बड़े व्यक्ति को दिखाया गया था ,जो पास में छोटी लड़की के साथ नव में बैठा था। दोनों का हाथ एक ऊर पर हैं। वह उस पर हौसले और प्रशंसा से निचे देख रहा हैं। जाहिर तौर पर उसने उससे कहा हैं कि वह नाव को चलाने में उसकी सहायता कर सकती हैं ,और उसे लगता है कि वह इस कार्या का बड़ा हिस्सा कर रही हैं। यह देखना आसान है कि यह उसकी मजबूत,मांसपेशियों कि भुजा हैं जो काम कर रही हैं। ऐसा ही हमारे और यीशु के साथ भी हैं। यह उसकी कृपया से हैं।

इसलिए हमे शैतान या उसकी सेनाओ से डरने कि जरूरत नहीं हैं (यहोशू 1:9,10:8,23:9-11, लैव्यव्यवस्था 26:8,निर्गमन 14:13 , 1शमूएल 17:45-47 , 2 शमूएल 22:33-35 , 40-41)। उन्हें उस सभी के लिए परमेशवर कि स्वीकृति होनी चाहिए जो कुछ भी करते हैं (अय्यूब 1:6-12,2:1-7 ,लूका 4:35)। परमेशवर अपने लोगो कि रक्षा करता हैं (लूका 10:19 ,2 थिस्सलुनीकियो 3:3 , प्रकाशितवाक्य 9:4, 1शमूएल 18:10 -11 ,19:9-10)। हमे परमेशवर से कोई भी चीज़ दूर नहीं कर सकती (रोमियो 8:38,यहुन्ना 10:29)। जब हम परमेशवर से मागते हैं या उनके लिए जो इसके लिए प्रार्थना करते हैं चारो ओर एक बाड़ा लगा देता हैं (अय्यूब 1:10 3:23 , यशायाह 5:5)। परमेशवर कि शक्ति शैतान कि तुलना में अधिक हैं (निर्गमन 7:12 , 8:18 , 1यहुन्ना 4:4)।

<u>दानवो के साथ कोई समझोता नहीं</u>

चेकआउट लाइन में लड़के कि तरह जितना अधिक आप दानवी मांगों को पूरा करते हैं यह वास्तव में उनको न कहना और इस पर बने रहना उतना ही कठिन हो जायेगा । कोई भी ऐसा नहीं हैं जो शैतान के साथ कोई समझौता करके पछताया न हो। यह डर से प्रेरित होने के द्वारा ही हलातो को बदतर बनता हैं ,जिससे दानवो को किसी व्यक्ति के जीवन में और भी अधिक शक्ति मिलती हैं।

इसके बजाय शैतान जो कुछ भी कर रहा है उसके खिलफ़ कुछ धर्मी आक्रोश होना बेहतर है। ये स्वस्थ चीज़ है धर्मी आक्रोश एक प्रकार का क्रोध है जो आप महसूस करते हैं। जब एक बदमाश किसी छोटे बच्चे को चोट पहुँचता है। यह आत्म-केद्धित क्रोध नहीं हैं लेकिन वह जो कहता है कि यह सही नहीं हैं ! परमेशवर हमें, किसी भी गलत काम, जो हमारे या किसी के खिलाफ होता हैं , उसके विरोद्ध सकारात्मक कारवाई करने के लिए प्रेरित करने को हमे यह देता हैं ।

ख . <u>उद्धार के लिए कदम</u>

<u>जैसे यह यीशु ने किया</u>

दानवो को बाहर निकालने के लिए यीशु हमारा **उदाहरण** हैं। अपनी सेवकाई कि शुरुआत के उसने कई दानवो को बाहर निकाला (मत्ती 4:23-24 ,मरकुस 1:39,34)। गेडरेनसेस में उसने दो आदमियों में से दानवो को बाहर निकाला (मत्ती 8:28-34 , मरकुस 5:1-17 , लूका 8:20)। उसने कनानी महिला कि बेटी में से दानव बाहर निकाले और एक दानवग्रस्त व्यक्ति को चंगा किया (मरकुस 1:21-28 ,लूका 4:31-36)। उसने दानवो से जकड़े हुए एक लड़के को चंगा किया (मत्ती 17:14-20)। उसने मरीयम मगदलीनी के साथ साथ अन्य महिला अनुयायियों में से दुष्टात्माए निकाली (लूका 8:2 , मरकुस 16:9)।

यीशु ने दानवो को कैसे निकाला ?

उन्हें बाहर निकालने से पहले उसने उनकी फ़िटकार लगाई (उनकी शक्ति शीन ली) (मत्ती 17:18 , लूका 9:42) फिर उसने उन्हें बाहर निकाल दिया (मरकुस 1:39) उसने यह मौखिक रूप से किया न कि किसी निश्चित अनुष्ठान प्रकिया द्वारा , उसने दानवो को बोलने नहीं दिया (मरकुस1:34, लूका 4:41) सिर्फ लशकर को वह भी सिर्फ इसलिए कि दूसरो को पता चल सके कि क्या हो रहा हैं। (मरकुस 5:9) उसने उन्हें भी यह नहीं कहने दिया कि वह कौन हैं (मरकुस 1:25 , लूका 4:35 , मरकुस 3:11-12) उसने उनसे कहा कि चुप रहो और बाहर निकलो (लूका 4:35 , मरकुस 1:25) दूसरी बार उसने उन्हें जाने के लिए कहा (मत्ती 8:32) कभी कभी वह उस व्यक्ति से बहुत दूर होता था जिस को वह चंगाई दे रहा था (मत्ती 15:21-28 ,मरकुस 7:24-30) जब उसने उन्हें बाहर निकाला तो उसने उन्हें वर्जित किया कि फिर लौटकर कभी न आना (मरकुस 9:25)

<u>जैसे चेलो ने यह किया</u>

हमारे पास अनेक **उदारहण** हैं जहाँ चेलो ने भी दानवो को बाहर निकाला यीशु ने उनको शक्ति और अधिकार दिया कि वह उनका उपयोग करें (मत्ती 10:1, लूका 10:17 , मरकुस 6:7 ,16:17) उन्होंने दानवो को बाहर निकालने को अपनी सेवकाई का नियमत हिस्सा बनाया (मरकुस 9:38 , लूका 10:17) पौलूस ने दानवो को बाहर निकाला (प्रेरितो के काम 16:16 -18,19:12) और इसी तरह फीलपुस ने भी (प्रेरितो के काम 8:7) जब वह इसे अपने बल पर करने की कोशिश कर रहे थे (परमेशवर पर निर्भरता के बिना) तो वह असफल हो गये (मरकुस 9:18,28-29)

प्रेरितो ने दानव कैसे बाहर निकाले ?

पौलूस ने भी मौखिक रूप से वचन से ही मुक्ति दिलाई। उसने कहा यीशु के नाम से मैं तुम्हे बाहर निकलने की आज्ञा देता हूँ (प्रेरितो के काम 16:16-18) जब परमेशवर यह दिखा रहा था कि पौलूस इसका स्वांदाता हैं तो यहाँ तक कि उन कपड़ो को छूह लेने से जिनका उपयोग पौलूस करता था लोग चंगाई पाते थे (प्रेरितो के काम 19:12) वह एक खास समय था कोई नमूना नहीं जिसका पालन किया जाऐ।

जब परमेशवर का हुक्म हुआ तो पौलूस ने दानव को हराया ऐलिमस को अँधा करने के द्वारा ताकि वह परमेशवर के वचन से छेड़खानी न कर सके (प्रेरितो के काम 13:6-12)।

<u>जैसे आज हम इसे करने को हैं</u>

जब कोई घेरा जाता हैं तो सबसे अच्छी बात हैं उस पर हमला करो। यही कारण है कि परमेशवर भी यही चाहता है कि हम करें। जब शैतान के बल से घिरा हुआ देखते है। हमे प्रेरितो के **उदाहरण पर चलना है** उन्होंने वही किया जो उन्होंने यीशु की उदारण और उसकी शक्ति का पालन करते हुए किया (मत्ती 10:1,8, मरकुस 3:15,6:7 , लूका 9:1)। हमे भी दुशमन पर शक्ति दी जाती हैं (लूका 10:19 , मत्ती 10:1,जकर्याह 3:11)। हमारे पास दानवो को बांधने और उत्पीड़ित विश्वासियों को खोलने का अधिकार और शक्ति हैं (मत्ती 16:18-19)। यह सब कुछ यीशु के नाम की शक्ति में किया जाना चाहिए (मत्ती 8:22 ,लूका 9:49) यही मात्र एक नाम हैं जिस कि आज्ञा का दानव पालन करेंगे। हमेशा उसका पुरा नाम बोले "प्रभु यीशु मसीह "। हलाकि हमे उसके भरने के लिए और उद्धार के लिए इस्तेमाल करने के लिए अपने आप में एक साफ बरतन जैसा होना चाहिए (प्रकाशितवाक्य 12:10-11)।

सबसे पहले अपने आस पास अपने परिवार और अपने गुणों और संपत्ति के लिए **परमेशवर से सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें** (अय्यूब 1:10,3:23, यशायाह 5:5)। शत्रु के हस्तक्षेप से सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें कि सभी चीज़े शालीनता से कि जाएगी और कि सुरक्षा और सेवकाई के लिए स्वर्गदूत मौजूद होगें ,कि दानव न छिपेंगे और न हस्तक्षेप करेंगे और जो कुछ भी होगा उसका मार्गदर्शन और नेतृत्व पवित्र आत्मा करेगा। जगह ,समय और शामिल लोगो पर अपने अधिकार और शक्ति का दावा करें। सभा जारी रखने के लिए इसके दौरान किसी भी तरह का हस्तक्षेप विचलित करने या शर्मिंदा करने जैसी हरकतों पर पाबंदी लगाए। परमेशवर से कहें कि उनकी शक्ति और अधिकार छीन लें जैसा यीशु ने दानवो को फ़िटकरने पर किया था (मत्ती 17:18 , लूका 9:42)। आज परमेशवर की शक्ति को शैतान की ताकतों पर देखकर परमेशवर की महिमां होती हैं (भजन सहिता 149:6-9) परमेशवर ने विजय का वादा किया हैं यह कहते हुए कि हम शैतान को अपने पैरो तले कुचला हुआ देखेंगे (रोमियो 16:20) आज पृथ्वी पर परमेशवर के काम के खिलाफ नर्क के दरवाजे भी टिक नहीं सकते (मत्ती 16:18-19)

कुछ भी सकारात्मक होने से पहले व्यक्ति को **अपना पुरा जीवन परमेशवर को सौपने को त्यार होना चाहिए** (रोमियो 12:1-2)। और जीवन में किसी भी पाप से निपटने के लिए इच्छुक रहें (1यहुन्ना 1:9)। कोई ज्ञात पाप नहीं हो सकता ,जिस पर वह अनैतिकता या अभिमान रखते हैं। उनको एक बाइबिल विश्वासी चर्च में नियमित रूप से जाना चाहिए, बाइबिल पढ़नी चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए। यदि वे परमेशवर को मानने और प्रस्तुत करने के लिए तैयार नहीं हैं , तो उन्हें उद्धार नहीं मिलेगा। उनसे किसी भी ऐसे पाप को स्वीकार करने कि प्रार्थना करने को कहें जो अभी भी उनके जीवन में हैं, और यीशु के लिए उनकी कुल अधीनता और जो कुछ भी वह दिखाता है उससे निपटने कि उनकी इच्छा होनी चाहिए।

यह हमारे विश्वास के उत्तर में नहीं हैं कि परमेशवर उद्धार देता हैं परन्तु उस में विश्वास करना अति महत्वपूर्ण हैं । ऐसा नहीं है कि अगर हमारा विश्वास पर्याप्त है तो अच्छे काम होंगे और अगर कम हो जाता है तो नहीं होंगे, परमेशवर का उद्धार न तो हमारे विश्वास तक सिमित हैं और न ही किसी और हद तक

सिमित हैं। जो जरूरी है उसे प्रकाश में लाने के लिए उस पर भरोसा रखें। उस पर विश्वास रखें जो स्वंत्रत करने में सक्षम हैं।

अब यह जानकारी इकट्ठा करने का समय हैं इससे पहले कि एक डॉक्टर कोई नुस्ख़ा लिखे या उपचार दे वह पहले सभी तथ्यों को इकट्ठा करता हैं जितना भी वह कर सकें। तब वह लक्षण और तौर तरीके को जानेगा कि क्या नुस्खा लिखना हैं और आगे कैसे बढ़ना हैं। अध्यात्मिक युद्ध का भी यही सच हैं। यह कुछ सवाल हैं जो मैं उन लोगो से पूछता हूँ जिनकी मैं कांउसलिंग कर रहा हूँ। उनके उत्तरो के आधार पर अन्य प्रशन उत्पन हो सकते हैं।

क्या आप संक्षेप में मुझे बता सकते हैं कि आपकी कुछ शुरूआती यादें क्या हैं ? (यह बचपन कि घटनओ अघात आदि में प्रकाश डाल सकता हैं, जिसने दानवग्रस्ति में योगदान दिया हो सकता हैं।

आपकी संमस्याए और कठिनईयाँ कब शुरू हुई ?(शुरूआती समय में वापस जाना यह समझने में बहुत मददगार हैं कि वे क्यों शुरू हुई। यदि वे हमेशा रहे हैं तो पीढ़ीगत आत्माओ का असर समझा जा सकता हैं।

क्या आप किसी भी घटना के बारे में जानते हैं जो पहले वाली का कारण जो सकती हैं ? (यह एक दरार के रूप में दिखाई दे सकती हैं जिसे वापस लेने की आवश्यकता हैं या एक पाप जिसे कबूल किये जाने की आवयश्कता हैं ।

आप कब से मसीही हैं ? (सुनिशिचत करें कि वे समझते हैं कि एक विश्वासी होने का क्या अर्थ हैं और वास्तव में यीशु पर भरोसा किया हैं। यह देखते हुए कि दानवग्रस्ति के दौरान जब वह मसीही रिश्ते में आऐ तो तब दी गई सहायता भी उपयोगी थी? ।

क्या आप के परिवार में किसी अन्य व्यक्ति या किसी पूर्वज के साथ भी ऐसा कुछ हुआ है ? (यह पीढ़ीगत दानवग्रस्ति दर्शाता हैं) ।

आपके माता-पिता अध्यात्मिक रूप से कहां हैं ? (यह दिखा सकता है कि क्या यह पीढ़ीगत होने के साथ साथ व्यक्ति कैसे प्रभावित हुआ) ।

क्या आप शादी शुदा हैं।?

अध्यात्मिक रूप से आपका जीवन साथी कहाँ हैं ?(योन संघ के माध्यम और आत्मा बंधन के माधयम से दानव दूसरे व्यक्ति तक पहुंच का दवा कर सकते हैं)।

क्या अपने कभी शादी से बाहर किसी के साथ यौन संबध बनाये हैं ? (यौन संध के माध्यम और आत्मा बंधन के माध्यम से दानव दूसरे व्यक्ति तक पहुंच का दवा कर सकते हैं) ।

क्या कोई पाप है जिसे आप अपने जीवन में रहने दे रहें हैं? (परमेशवर उन्हें इसके लिए दोषी ठहराएगा यदि वे ईमानदार नहीं हैं तो बहुत अच्छा नहीं होगा) ।

क्या आप ने जीवन में कोई आघात अनुभव किया हैं ?(दुषविवहार , कार दुर्घटनऐ ,अत्यधिक भय किसी व्यक्ति के बचाव को तोड़ सकता हैं और उनके जीवन का निंत्रण उनके हाथो से ले सकता हैं ,इस प्रकार दानवग्रस्ति के लिए यह एक शुरुआत हो सकती हैं)।

क्या आपके पास कोई चर्च हैं जहां आप जाते हैं ?(बाइबिल कि आज्ञाएं हैं कि हम अपने आप को संगति करने से पीछे न हटाए)। यदि इस आज्ञा को तोड़ा जा रहा हैं तो यह पाप और अवज्ञा हैं। और परमेशवर को अपने जीवन में काम करने देने के लिए इसे बदलना जरूरी हैं। केवल बहुत ही विषम परिस्थतियो में , ही चर्च में न जाना बुराई नहीं मानी जाएगी।

यह कोन सा संप्रदाय हैं ? (यह आपको उनकी मान्यताओं और प्रार्थओ के बारे में कुछ बता सकता हैं) ।

क्या आप कभी जादू /मनोगत या दानवी गतविधियों में शामिल थे ? (कई लोगो ने अतीत में कुछ इसी तरह के कविजा बोर्ड का इस्तेमाल किया हैं और यह एक निश्चित दानवग्रस्ति के लिए शुरुआत हैं) ।

आप भाषओं में बोलते हैं या प्रार्थना करते हैं ? (मैंने और बहुतो ने अध्यात्मिक युद्ध में यह पाया हैं कि झूठी जीब, वास्तव में एक दानव हैं, मौजूद हैं, और भाषायों कि आत्मा के लिए किसी के द्वारा कि गई मांग के माध्यम से प्रवेश किया हैं) ।

क्या किसी ने कभी आपके ऊपर हाथ रखे हैं ताकि आपको भाषओं को वरदान प्राप्त हो या किसी दूसरे कारण के लिए ? (जब कोई व्यक्ति दूसरे पर हाथ रखता हैं और उनके लिए प्रार्थना करता हैं, तो कुछ भी दानवी जिस के लिए वह खुला या खुली हो सकता या सकती हैं जिसे उस व्यक्ति के लिए स्थानांतरित हो सकता हैं जिसके लिए वह प्रार्थना कर रहे हैं) ।

इस समय मैं उन्हें कह सकता हूँ कि दानवग्रस्ति के लक्षणों की सूचि पढ़े (पेज नं :20) और या उन पापो की सूचि बनये जो दानवग्रस्ति की तरफ ले जाती हैं (पेज नं :32-33 ,37-38) यदि मैं महसूस करता हूँ कि अधिक विस्तृत जानकारी कि आवश्यकता हैं। मैं चाहता हूँ कि इससे पहले कि हम मिले या फिर शुरू करें वह इन पेपरों को भर ले। मैं इन पेपरों का और नोटस का जो मैंने प्राप्त किये हैं जैसे मैंने उन को प्रशन पूछे हैं ताकि मेरे प्रार्थना करने में अगुवाई हो सके। इस स्तर को तेज़ी से न जाऐ :उत्पाद केवल उतना ही अच्छा होगा जितना कि इस जानकारी का एकत्रीकरण। एक डॉक्टर कि तरह ,परिणाम प्रकिया के इस हिस्से पर निर्भर करते हैं।

बेशक ,जो भी पाप आएंगे ,उन्हें निपटना होगा और **काबूल करना होगा** (1यहुन्ना 1:9)। एक व्यक्ति को खुद अपना पाप स्वीकार करने और प्रार्थना करने वाला होना चाहिए आप उनके लिए ऐसा नहीं कर सकते। दांनव कचरे के प्रति आकर्षित चूहों की तरह हैं ,इसलिए चूहों से छुटकारा पाने के लिए कचरो से छुटकारा पाए।

यह सुनिश्चित करना अत्यंत महत्वपूर्ण हैं की दुसरो की माफ़ी जिन्होंने उन्हें अतीत या वर्तमान में चोट पहुंचाई हैं ,जिसमें माता-पिता ,पुर्व साथी आदि शामिल हैं ,इस समय निपटा जाता हैं। उनसे पूछे अगर कोई ऐसा व्यक्ति हैं जिनके विरुद उनकी कोई कड़वाहट की भावना हैं , जिनके विरुद उनके पास कुछ हैं या जिसको वह आगे बढ़ते देखना पसंद नहीं करते। आपको यह समझ आ जाएगी जैसे वह पिछले सवालों का उत्तर देते हैं , परन्तु उद्धार को नियंत्रत बनाऐ रखने के लिए क्षमा करना आवश्यक हैं। क्षमा न करना दानवो के लिए काम करने का एक मजबूत गढ़ स्थान बनता हैं। (इफिसियों 4:26)

क्षमा के रूप में, क्षमा क्या हैं ? भूल जान या किसी का फंदे से निकल जाने को क्षमा नहीं कहते। क्षमा का मतलब हैं बदला न लेने की इच्छा को चुनना ,और जिन्होंने हमे दुख पहुंचाया हैं उसके बदले उनको दुखी देखने की इच्छा न रखना। जब हम चोटिल होते हैं तो हम वापस चोट मरना चाहते हैं जो हमारी चोट का कारण बने हैं ,उनको भी चोटिल स्थिति में देखना चाहते हैं। न्याय की यह इच्छा सामान्य हैं लेकिन क्षमा का अर्थ हैं कि हम न्याय कि उम्मीद नहीं करते हैं ,हम अपने दुख को ले लेगें और इसे गुस्से में बदल देने कि बजाय इससे निपटेंगे। याद रखे क्रोध चोट से आने वाली दूसरी भावना हैं। क्षमा करने का अर्थ है किसी भी अधिकार को छोड़ना जिससे आप दूसरे को उसके किए का नतीजा दिखा सकते हैं। आप भूल नहीं सकते ,लेकिन जब भी चोट या गुस्सा वापस आता हैं तो आप उन्हें पीड़ित देखने के लिए आप किसी भी अधिकार को छोड़ने का चुनाव करते हैं। इसी तरह से परमेशवर हमे माफ़ करता हैं - वह हमे हमारे पाप के बदले भुगतान किए जाने के लिए हर अधिकार को छोड़ देता हैं। इसलिए जब हम क्षमा करते हैं तो हम उसके जैसे ही होते हैं और जब हम नहीं करते हैं तो हम नहीं होते। अगर आपको माफ़ करने में परेशानी हो रही हैं तो परमेशवर को बताये कि आप तैयार हैं लेकिन संघर्ष कर रहे हैं। जैसे परमेशवर दर्द को ठीक करता हैं आप बेहतर रूप क्षमा करने में संक्षम होंगे।

दुसरो को क्षमा करने के लिए प्रार्थना

यीशु, तेरा धन्यवाद हो मरने के लिए, कि मुझे क्षमा किया जा सकता। मुझे क्षमा करने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। यह मेरी संवत्र इच्छा का चुनाव हैं कि मैं उन्हें माफ़ करों जिन्होंने मुझे दुख पहुंचाया हैं (लोगो का नाम) मैंने जो कुछ भी उनको वापस दुख देने के लिए जो किया या सोचा हैं उसके लिए मुझे क्षमा करें। मैं यह सारे दर्द आप के पास लाता हूँ कि आप इसे चंगा करें। यीशु के नाम में मैं वह सारे अधिकार वापस लेता हूँ जिनको मैं महसूस करता हूँ कि उनको दुख देने के लिए जिन्होंने मुझे दुख दिया ,मेरे पास हैं। यीशु के नाम में मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन

जब आप आगे बढ़ने के लिए तैयार महसूस करते हैं तो **पहले बताये कि क्या होगा** ताकि उनको पता रहे कि क्या उम्मीद करें। भूत भगाने को लेकर लोगो की अपनी अपनी अजीब अजीब विचारधारा हैं। हलाकि यह भूत भगाना नहीं है (एक धार्मिक अनुष्ठान द्वारा जबरदस्ती दानवो का बाहर निकाले जाना) परन्तु उद्धार (दानवग्रस्त व्यक्ति के द्वारा स्वंत्र रूप से सहमति उपयोग को वापस लेना) बहुतो को इसका अंतर मालूम नहीं हो सकता। उन्हें बताऐ की आप प्रार्थना करेंगे और जो दावे दानवो ने किए हैं उनको वापस ले और दानवो को वहा से चले जाने का हुकम दे, मैं इसे एक दरवाजा खोलने और किसी को एक कमरे में प्रवेश करने की अनुमति देने की तरह समझॉता हूँ और तब आप महसूस करते हैं कि आपको ऐसा नहीं करना चाहिए था। आपको दरवाजा बंद करने कि आवश्यकता हैं ताकि कोई प्रवेश न कर सके ,लेकिन जो लोग पहले से ही अंदर प्रवेश कर चुके हैं उनको वहा से चले जाने की आज्ञा देने की

आवश्यकता हैं। पाप को स्वीकार करते हुए और हर पहुंच को वापस लेते हुए दरवाजा बंद करें। उनको फिटकारने और निकल जाने की आज्ञा देने से कमरा साफ होता हैं। उस क्रम में दोनों कदम उठाने होंगे। उन्हें याद दिलाऐ की डरने की कोई बात नहीं हैं (लुका 10:17-21) और डर शैतान के सबसे बड़े औजारों में से उनके विरुद एक हैं। उन्हें बताऐ की परमेशवर जो भी उन्हें बताता हैं उनके मन में या दिल में उसके प्रति संवेदतशील रहें। अगर वह आपको पाप कूबूल करने के लिए कहता हैं तो इस प्रकिया को बाधित करें ताकि उस समय पाप के साथ निपटा जा सके। यदि परमेशवर कहता हैं की इसे हटाने की आवश्यकता है तो आगे बढ़ने से पहले इसे हटाया जाऐ।

जैसे आप उनके लिए प्रार्थना करनी शुरू करते हैं **सबसे पुरानी समस्याओं और पहली पहुँचो के साथ शुरू करें।** उनके किसी भी दावे को यीशु के खून तले लाओ ,उस व्यक्ति के खिलाफ उनको कोई भी काम करने से रोको और उनको तुरंत और हमेशा के लिए वहा से हट कर उस स्थान को जाने के लिए कहें जहाँ यीशु चाहता है कि वो जाएं। आम तौर पर किसी **पीढ़ीगत** आत्मा के साथ शुरू करना अच्छा विचार हैं। सुनिश्चित करें कि उनमें से अब कोई भी काम नहीं कर रहा हैं और फिर वहाँ से चले जाए।

अगली बार **बचपन** कि घटनओ और अनुभवों के लिए प्रार्थना करें :आघात ,अस्वीकृति ,आदि उन्हें यीशु के खून तले रख दे और दानवो द्वारा दावा कि गई हर पहुंच को वापस ले ले और उनको वहाँ भेज दे जहाँ यीशु उन्हें भेजना चाहता हैं।

तब बचपन से आए पापो और रहो में निपटो। यह सब आराम से करो। जल्दबाजी किसी में न करो।

जैसे आप कारवाई करते हैं यह जानने के लिए सवेदनशील रहे कि **मुख शासक** (जबर व्यक्ति कौन) हैं। कभी कभी उस पर पहले हमला करना उचित होगा क्योकि वह सब दानवो को पकड़े रहता हैं। कई बार वह इतना भड़क जाता है कि कमजोर दानवो को पहले निकाल कर उसे कमजोर किया जाना चाहिए जो लोगो के जीवन में पाप और कठिनइयों के लक्ष्ण पैदा करते हैं। परमेशवर से प्रार्थना करे और इस काम के लिए उसकी अगुवाई के प्रति सवेदनशील रहे कि वह आपको क्या करने केलिए अगुवाई करता हैं।

आम तोर पर पहले **मुख्य शासक (मत्ती 12:29) को बांधन सबसे अच्छा हैं** तब यीशु के नाम में उन सब दानवो को जो इसमें शामिल बाधना चाहिए (मत्ती 16:18-19) दांनव कभी भी अकेले काम नहीं करते। मूल आत्माओ को खोजे और उनके खिलाफ प्रार्थना करो। अक्सर यह एक दांनव होगा जिसका नाम मौत है जो शैतान का हमारे खिलाफ अंतिम काम होगा। दूसरे शक्तिशाली शासक भय ,अभिमान या ऐसे अनेक कार्य हो सकते हैं। प्रत्येक नाम दानव का काम दर्शाता हैं। आप उनके काम देखकर जो वह किसी व्यक्ति के जीवन में करते हैं उसका नाम जान सकते हैं। याद रखे कि हर दानवी समस्या के पीछे एक शरीरिक समस्या होती हैं। शारीरिक समस्या को पहचानने से जो सब समस्या की जड़ हैं ,उसके मुख्य शासक की पहचान कर सकते हैं। हलाकि वह शारीरिक समस्या पुरण रूप स्वीकार करने के साथ तयाग दी जानी चाहिए । कचरे से छुटकारा पाए चूहों से छुटकारा मिल जायेगा।

आप उनके संगठन को **तोड़कर उनकी संरचना को कमजोर कर सकते हैं** क्योकि वह एक दूसरे पर ही पलते हैं। उसके बच्चे की तोड़ दो और उन पर यीशु के नाम में दवा ठोक दो। खून लाइन ,नाम आदि के माध्यम से बनी हर पहुंच को वापस ले ले और उन्हें आजाद करें। आप उससे शक्ति संरचना को अलग कर सकते हैं जिसमें उसके साथी ,माता-पिता या जो आप की समझ के अनुसार उसमें शामिल हैं। बस दानवो को बांध दे या एक साथ बांध दे और एक दूसरे की मदद करने से मना करें। वे अक्सर व्ही शैतान होते हैं जो व्यक्ति को साझा करते हैं लेकिन एक व्यक्ति तक मदद करने को सिमित रहते हैं। फाड़ो और जीतो। किसी भी अन्य आत्मा को इसकी मदद के लिए बाहर से आकर उनकी जगह लेने से रोको। शैतान की रणनीति हमे दूसरे मसीहियों से या परमेशवर से अलग करने की होती हैं और फिर जब हम हो जाते हैं, हम कमजोर हो जाते हैं, और हमारे खिलाफ काम करता हैं। यही रणनीति उसके खिलाफ भी काम करती हैं।

और हाँ आप इसके प्रति भी सवेदनशील रहे कि **काउंसलिंग किये जाने वाले को किन पापो को कबूल करने जी जरूरत हैं** यदि परमेशवर आपके विचारो को छुता है तो उसके साथ चले और सुनिश्चित करें के आप आने वाले पाप से निपटने के लिए रुक गए हैं। दृष्टिकोण के पापो से निपटा जाना चाहिए भय,अक्षमता ,अपराधबोध ,धमंड ,इर्षा आदि।

आप कैसे जान सकते हैं कि जो बल आपके खिलाफ काम कर रहा है वह दानवी है या नहीं ? हमे उनके स्रोत को देखने के लिए ,आत्माओ का परिक्षण करने कि आज्ञा दी गई हैं। उन्हें यीशु के नाम प्रभुता और आधिपत्य से चुनौती दे (1यहुन्ना 4:11, 1कुरिन्थियों 12:3 , 1यहुन्ना 5:6-7) अपने खुद के या दूसरे व्यक्ति के आत्मा में आये प्रतिउतर के प्रति सवेदनशील रहे। स्वर्गदूत लोगो के अंदर नहीं आते और न हो लोगों के माधयम में बात करते हैं जैसे दानव करते हैं। याद रखे कि दानव हमेशा झूठ बोलते हैं और धोखा देते हैं कभी कभी वह अपने आपको परमेशवर और पवित्र आत्मा होने का भी दावा करते है, अपने मन या जिस व्यक्ति को आप काउसलिंग करते हैं उनके मन में आने वाले विचारो के प्रति सवेदनशील रहे। अगर परमेशवर किसी को आध्यत्मिक उपहारों के साथ परिक्षण का उपहार देता हैं तो यह बहुत मददगार होगा। (प्ररितो के काम 13:9-10 ,1कुरिन्थियों 12:10)।

इससे पुर्व देखी कि गई बातो को याद रखे : हम यीशु में सुरक्षित हैं और हमे दुश्मन से भागना नहीं हैं। हमे अपनी शक्ति और अधिकार का उपयोग करना हैं। सुनिश्चित करें कि सभी खुले राहो को स्वीकार किया जाता हैं और हर पहुंच को वापस लिया जाता हैं।

दानवो को यीशु के नाम से जाने कि आज्ञा दे (मत्ती 10:1,लुका 9:49,1017, मरकुस 8:22)। इसे यीशु में विश्वास रखते हुए करो (मत्ती 17:18-27 ,यहुन्ना 5:4) , डर से नहीं (यहोशू 1:9 ,10:8, 23:9-11, लैव्यव्यवस्था 26:8, निर्गमन 14:13, 1शमूएल 17:45-47 ,2 शमूएल 22:33-35 ,40:41)। प्रार्थना कि सूरत में बने रहे (परमेशवर के साथ संचार और संवेदनशील -मरकुस 9:29)। गर्व मत करे मसीह के प्रति विनम्र और सम्पत्ति बने रहे (लुका 10:10 , 2 पतरस 2:11, प्रेरितो के काम 19:12-16)।

जब उनको निकाला जाता हैं तो दानवो को यीशु के अधिकार में छोड़ दो कि वह उन्हें कहा ले जायेगा ,और उनके विरुद अपनी सजा सुनएगा ,(भजन सहिता149:6-9 , रोमियो 16:20, अय्यूब 30:3-8) याद

रखे कि दानवो को हटा दिए जाने के बाद घर परमेशवर के पवित्र -आत्मा से भर जाना चाहिए नहीं तो हालत पहले से भी बदतर हो सकते हैं (मत्ती 12:43-45)।

कभी कभी परमेशवर आपको उस व्यक्ति पर हाथ रखने के लिए प्रेरित कर सकता हैं जिसके लिए आप प्रार्थना कर रहे हैं ,कई बार यीशु ने खुद ऐसा किया (लुका 4:29 ,13:11-23 , मत्ती 8:15) जैसे शुरूआती चर्च ने भी किया (1कुरिन्थियों 1:14 ,12 :4 ,2 कुरिन्थियों 1:21, याकूब 5:13-16)। इस क्षेत्र में परमेशवर कि अगुवाई के प्रति संवेदनशील रहे और जो भी वह आपको करने के लिए प्रेरित करता हैं। कि तरीका दूसरे से बेहतर नहीं हैं। परमेशवर जो आप से कारवाई चाहता हैं उसके प्रति आज्ञाकारी होना आप में एक कारक हैं।

जितना संभव हो उतना वचन का हवाला दे (मत्ती 4:1-10)। हमारे उपयोग किए जाए वचनो से कही बढ़ कर परमेशवर का वचन शक्तिशाली हैं और शैतान कि ताकतों के खिलाफ भारी साबित होता हैं (इब्रानियों 4:12)। परमेशवर का वचन हमारा अधिकार हैं (1यहुन्ना 2:14)। वचन रुपी हमारी तलवार ही हमारा एकमात्र आकर्मक हथियार हैं।

छुटकारे के दौरान या अपने घर में अन्य समय पर मसीही संगीत बजाना अक्सर सहायक होता हैं क्योकि दानव यीशु कि प्रशंसा सुनना पसंद नहीं करते (शमूएल 16:23)। प्रशंसा में शक्ति हैं (भजन सहिता 22:3) ,इसलिए अपने युद्ध कि प्रार्थना में स्तुति और प्रशंसा का उपयोग करें। छुटकारे के दौरान या इसके बाद आप परमेशवर कि स्तुति प्रार्थना में या गीतों में कर सकते हैं। जब भी हमला होता हैं इसका उपयोग करें।

दानवो से बातचीत न करें न तो उन्हें दूसरे व्यक्ति के दिमाग को संदेश देते हुए और न उसकी जुबानी बोल चाल के द्वारा छुटकारे में दानवो से संपर्क नहीं करना बल्कि उनको हटाना हैं। उनके साथ बातचीत आपको एक माध्यम बनाता है और परमेशवर का वचन इसे मना करता हैं (व्यवस्थाविवरण 18:9-13) उनके साथ बातचीत न करने के अच्छे कारण हैं। न तो यीशु और न ही पौलूस ऐसा करते थे (मरकुस 1:25 , प्रेरितो के काम 16:17)। वे झूठे और धोखेबाज हैं (यहुन्ना 8:44) और आप उन पार विश्वास नहीं कर सकते जो भी वह कहते हैं। परमेशवर आप से केवल यही चाहता हैं कि आप उसके संपर्क में रहे (व्यवस्थाविवरण 4:24)। पवित्र -आत्मा के माध्यम से हमारे पास सब सत्यऔर शक्ति तक पहुंच हैं (यहुन्ना 8:31-32, 1कुरिन्थियों 12:7-11)। उनके साथ संवाद करने से आप उन्हें पहचान देते हैं अड्डा लगाने कि अनुमति देते हैं , और शामिल लोगो परफ बहुत अधिक कठिन बोझ का कारण बनते हैं , और अपने आप को गर्व के लिए खोलते हैं। इसके आलावा वह कल झूठे और धोखेबाज़ के और इसलिए कुछ भी सकारात्मक नहीं होगा।

जब छुटकारा धीमी गति मे हो या फिर ना हो तो क्या होगा ? याद रखे कभी कभी परमेशवर के पास कोई बड़ी योजना होती हैं बजाय इसके कि जैसे हम प्रार्थना करते हैं वह उसी समय दानव को निकाल दे। कभी-कभी देरी होती हैं। यहां तक कि यीशु के पास भी ऐसा समय था जब उन्हें थोड़ी देर के लिए इसमें द्रढ़ रहना पड़ा (लूका 8:32)। आमतौर पर छुटकारा एक प्रकिया हैं। यह एक प्याज से परतो को छिलने जैसा हैं। जैसे कोई नया पाप दिखाई देता हैं और उसे हटा दिया जाता हैं ,शैतान कि ताकतों से उतनी

जमीन वापस ले ली जाती हैं। यह क्रमिक प्रकिया किसी व्यक्ति को बेहतर ढंग से भरने कि अनुमति देती हैं जिसे परमेशवर के पवित्र -आत्मा के साथ पुन प्राप्त लिया गया हैं और उसे अगली परत हटाने से पहले आध्यात्मिक रूप से बढ़ने का समय देती हैं (भजन सहिता 59:11, 119:50 ,67,71)। यही कारण हैं कि यहोशू के आधीन यहूदियों ने एक ही बार में वादे कि भूमि को जितने के बजाए थोड़ा करके जीता। अगर उन्होंने कननियो को एक दम निकाल दिया होता तो शेर अंदर आ जाते और उन्हें नुकसान पहुंचते। इसमें सीखने कि एक प्रकिया शामिल हैं जिसका उपयोग दुसरो कि मदद करने के लिए भी किया का सकता हैं ,(2 कुरिन्थियों 1:3-4)। अन्य समय पूर्ण उदार कभी नहीं आता पौलूस का मांस में कांटा एक उदाहरण हैं (2 कुरिन्थियों 12:7)। पौलूस परमेशवर कि गवाही देता हैं फिर मुकाबला करने के लिए आवश्यक अनुग्रह प्रदान करता हैं। परमेशवर चाहता हैं कि हम उस पर निर्भर रहना सीखे (भजन सहिता119:59 , 92)। बेशक अगर रास्तो का खुलना जारी रहता है तो दानवग्रस्ति भी जारी रहेगी (भजन सहिता 94:12-16 , 8:11-14)।

जब आप यह महसूस करना शुरू करते हैं कि जितना हो सकता था उतना हो चूका है तो जिस दिशा में आप जा रहे हैं ,उसे बदलना शुरू कर सकते हैं। जिस व्यक्ति के साथ आप काउंसिलिंग कर रहे हैं उससे पूछे कि क्या उसके पास कोई ऐसा विचार या निशान है जिसे उसको साझा करना चाहिए। यह जो भी हो उससे निपटे। उनको पूछे कि अगर कोई ऐसा है जिसके बारे में वह बात करना चाहते हैं या प्रार्थना करना चाहते हैं।

बुद्धि और ज्ञान के लिए फिर से प्रार्थना करें ,परमेशवर से पूछे अगर कोई और चीज़ हैं जिस के साथ यहा निपटना चाहिए और साथ ही साथ उसके लगातार अगुवाई और मार्गदर्शन के लिए परमेशवर से पूछे कि और क्या करने कि आवश्यकता हैं। कई बार आध्यात्मिक विकार और परिपक्वता कि बहुत आवश्यकता होती हैं। अन्य समय यहा पाप का परिणाम हैं जिसका सामना करना पड़ता हैं। विश्वास कि परीक्षा होती हैं। अक्सर कई बार अन्य दानव या शासक होते हैं (जो दानव लेकिन अगुवे हैं) जिन्हे बाद में निपटा जाना होगा।

सुनिश्चित करें कि वे समझ गए हैं कि क्या हो चूका है और अगले कुछ छोटों या दिनों में क्या उम्मीद कि जा सकती हैं। संदेह ,अविशवास, अपराधबोध दुश्मन की काफी समान्य रणनीति हैं। प्रार्थना करने ,विश्वासयोग बने रहने, बाइबिल पड़ने आईतो को याद करने और जब भी हमला हो उनका उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें और यदि उनके पास कोई प्रशन हैं तो उसे नोट करने के लिए कहें। यदि वे अपने जीवन में खाली स्थान नहीं भरते हैं ,तो दानव और भी अधिक संख्या में वापस आ जायेगे (लूका 11:24-26 , मत्ती 12:43 -45)।

जरूरत पड़ने पर **उन्हें प्रार्थना के लिए बुलाने को प्रोत्साहित करें**। उनकी ओर से किया गया यह काम विनमरताभरा हो सकता हैं ओर उनके गर्व के खिलाफ काम कर सकते हैं, इस प्रकार यहा बहुत मुक्त करता हो सकता हैं ,यदि दानवो को पता चले कि वह मदद के लिए प्रार्थना में बुलाएंगे तो उन्हें हमला करने में अधिक संकोच होगा यदि वे जानते हैं कि व्यक्ति अकेले उनके साथ व्यवहार करने कि कोशिश करेगा।

उन्हें याद दिलाऐ कि यह एक प्रकिर्या है ना के एक ही बार किया गया काम । यहा उतना स्पष्ट ओर तैयार नहीं हैं। याद रखें पौलूस के मांस में कांटा ? आखिरकार परमेशवर का यहा कहना हैं , दानवो का नहीं। अय्यूब को याद करो इसलिए हमारे यह सोचने के बाद कि दानव भाग चुके हैं और होते वही है तो पहला काम जो हमे करना चाहिए वह यह है कि हमे परमेशवर से पूछनना चाहिए कि वह हमे क्या सिखा रहा हैं ,और वो हमे क्या दिखाना चाहता हैं। वह यहा सब कुछ हमारे विकास के लिया उपयोग करता है। क्या हमे दृढ़ता सीखने कि जरूरत हैं ?धीरज ? पाप कि जड़ के लिए गहरा खोदने की ? अपने आप को अधिक विनम्र करना ? विश्वास करना ? क्या हम दुसरो के लिए एक उदाहरण होना (जैसा कि अय्यूब था) ? आपके द्वारा पूछे गयीप्रार्थनाका अंतिम उत्तर परमेशवर कि इच्छा में हैं , न कि दानवो की शक्ति में।

परमेशवर ने जो किया है उसके लिए **धन्यवाद और प्रंशसा की प्रार्थना के साथ समांप्त करें** ,परमेशवर से कहें कि उस व्यक्ति में शुरू लिए गए अच्छे काम को क्रृपा बनाये रखें। उनकी सुरक्षा और विकास के लिए प्रार्थना करें। उनकी यादो को चंगा करने के लिए और उनके खली स्थानों को पवित्र -आत्मा के द्वारा भरे जाने के लिए प्रार्थना करें। परमेशवर से प्रार्थना करें कि वह उन्हें आशीष दे और उनको अपनी महिमा और सम्मान के लिए इस्तेमाल करें।

<u>सफल और स्थायी उद्धार कि आवश्यकता :- संक्षेप में</u> .

1. <u>विनम्रता</u> :- अपने आप पर या अपनी खुद कि ताकत पर कोई गर्व नहीं (याकूब 4:6-7 ,5:16)।

2. <u>ईमानदारी</u> :- किसी भी पाप को स्वीकार करना (भजन संहिता 32:5,139:23-24)।

3. <u>कबूल करना</u> :- किसी भी और सब पापो को यीशु के खून तले रखना (1यूहन्ना 1:9) सुनिश्चित करें कि दूसरो कि कोई अक्षमता नहीं हैं (मत्ती 6:14-15 , 18:21-35)।

4. <u>क्षमता को स्वीकार करना</u> :- किसी भी अपराध बोध को आगे न ले जाना (1यूहन्ना 1:9)।

5. <u>पश्चाताप</u> :- कभी पापो से मुड़ने की इच्छा का रवैया (आमोस 3:6 ,यहेजेकल 20:43)।

6. <u>बुराई को छोड़ना</u> :- मौखिक रूप से किसी भी चीज़ को जिस ने शैतान की पहुंच दी हो उस पहुंच को वापस लेना और उस चीज़ को अस्वीकार करना ,और जो कुछ भी आप अपने गलत किये को सही करने के लिए करना चाहिए, करें (प्रेरितो के काम 19:18-19 , मत्ती 3:7-8)।

7.प्रार्थना:- परमेशवर से मणो के वह यीशु के नाम में आपको स्वंत्रत करें (योएल 2:32)। यह मत भूलो की आपके पास यीशु नाम में दानवो को बाहर निकालने का अधिकार है और परमेशवर आप से इसका उपयोग करने की उम्मीद करता है।

8. <u>नित्य युद्ध</u> :- पाप और शैतान के खिलाफ रोजान लड़ाई और प्रार्थना करना।

ग . उद्धार के बारे विशेषताएं

शारीरिक चंगाई

आध्यात्मिक उद्धार और शरीरिक चंगाई के बीच अक्सर एक भजबूत रिशता होता हैं। दानवो के चले जाने पर अक्सर शारीरक समस्ये भी चली जाती हैं। ऐसा इसलिए होता हैं क्योकि दानव शारीरक समस्याओ का कारण बने होते हैं। बाइबिल में इनको उदाहरणों में शामिल हैं : अपाहज अंग (लूका 13:11) पौलूस का कांटा (आँखों की बीमारी ? 2 कुरिन्थियों 12:7) आवाज का बंद होना , (कभी कभी गूंगा पन -मत्ती 9:32-33 ,12:22 , मरकुस 9:17-18, 24-25), अंधापन (मत्ती 12:22) , बरामदी (मरकुस 1:26 , 9:17-18 , 20 ,25 , मत्ती 17 ,15,18 , लूका 9:39) , बहरा पन (मरकुस 9:17-18 , 20,25) फोड़े (चरम कैंसर) ? (अय्यूब 2:7), घाव और अन्य? दर्दनक पीड़ाये (भजन सहिता78:49 – मिसर में विपत्तिया दानव -कारण थी) , और सभी प्रकार की शारीरिक पीड़ाये (प्रकाशितवाक्य 9:5,10)। बाइबिल बताती हैं कि शैतान बीमारी का कारण बन सकता हैं (अय्यूब 2:7-8) यहां तक कि मौत का भी (अय्यूब 1:19)।

शारीरिक चंगाई उद्धार का परिणाम हो सकता हैं। यदि दानवो में से कोई भी शारीरिक समस्याएं पैदा कर रहा होगा तो जैसे दानवो को हटाया जाता है समस्याएं भी हल हो जाएगी। पीढ़ीगत आत्माये यह बीमारिया पीढ़ी दर पीढ़ी पैदा कर सकती हैं। शारीरिक समस्याएं आम तौर पर परमेशवर की मुख्य चिंता नहीं हैं ,बल्कि वह ह्रदय की आध्यात्मिक स्थति के लिए अधिक चिंतत हैं। हम अक्सर शारीरिक लक्षण (शारीरक समस्या) को दूर करने के लिए प्रार्थना करते हैं।,जबकि परमेशवर हम से चाहता हैं की हम उसको खोजे और उसको जो उनके माध्यम से वेह हमें क्या सिखाने की कोशिश कर रहा हैं। पौलूस के मांस में कांटा एक स्पष्ट उदाहरण हैं। उस दानव को हटाने के लिए यह परमेशवर की इच्छा नहीं थी परन्तु यह की पौलुस इस अनुभव के माध्यम से और आध्यात्मिक रूप से और सामर्थी बने।

यदि कोई शारीरिक समस्या मौजूद है ,तो यह पता लगाना अच्छा हो सकता हैं कि यह पहली बार कब शुरू हुआ और उस समय और क्या चल रहा था। भौतिक लक्षण को हटाने ऊपर ध्यान केंद्रित करने के बजाये मूल कारण की तलाश करें ,यह दानवी हो ,अधयत्मिक हो या जो भी हो।

यह ध्यान दिया जा चाना हिए कि **सब बीमारियां मूल रूप से दानवी नहीं हैं**। यीशु ने उन शारीरक बीमारियों को ठीक किया जो दानवी नहीं थी (मत्ती 4:23-24,8:16-17 , यशायाह 53:54 ,मरकुस 1:34, प्रेरितो के काम 10:34)। बाइबिल स्पष्ट रूप से उन बीमारीयो के बारे में बात करती हैं। जो दानवी नहीं हैं : गंभीर दर्द (मत्ती 4:24) पक्षाघात (मत्ती 4:24 , प्रेरितो के काम 8:7) , कुष्ठ रोग (मत्ती 10:8) अंधापन (लूका 7:21) ,अपाहज अंग (प्रेरितो के काम 8:7) और कई अन्य विभिन्न बीमारियां (मत्ती 4:24)। यह सच है कि कुछ शारीरिक बीमारिया दोनों सुचीयो पर हैं, यह बताती हैं कि कई बीमारियों में दानवी या प्रकृतिक कारण हो सकते हैं। वे एक स्रोत या दूसरे से हो सकतें हैं ।

यीशु ने अक्सर दानवो को निलकाला और उसी समय बीमारी को भी ठीक किया। यीशु ने कहा कि वह ऐसा करेगा (लूका 13:32)। यह अपनी सेवकाई के शुरू में किया तीयार और सिदोन के पास

और अपनी सेवकाई के दौरान (मत्ती 4:23-24 ,8:16 ,मरकुस 1:34 , लूका 4:41) ,(मरकुस 3:10-12 , लूका 6:18-19) , (लूका 7:21)। यीशु कि कई महिला अनुयाई दोनों ठीक हो गई (लूका 8:2)।

इससे भी अधिक सटीक बात यह हैं कि जब **यीशु ने दानवो को निकाला और उसी समय एक व्यक्ति में बीमारी को भी चंगा किया** (मरकुस 6:13 , प्रेरितो के काम 5:16)। फिलिपुस ने यह सामरिया में किया (प्रेरितो के काम 8:7) और पौलूस ने यह इफिसुस में किया (प्रेरितो के काम 19:12)।

इस प्रकार यह स्पष्ट हैं कि **कुछ ही बीमारियां दानवी है सभी नहीं** ,ऐसी कुछ बीमरियां नहीं है जो विशेष रूप से दानवी हैं और न ही अन्य हैं जो नहीं हैं। कोई भी शारीरिक बीमार दानवी हो सकता हैं लेकिन हर बीमार हमेशा दानवी नहीं होता। हमारे दिन और उम्र में हम हर छोटी बीमारों को दानवी के रूप में देख कर भूल करते हैं। और इस प्रकार हम अक्सर इलाज से चूक जाते हैं। हम कैसे बता सकते हैं कि कोई बीमारी या शारीरक समस्या दानवी हैं या नहीं। देखने के लिए कुछ सुराग हैं :बीमारिया जिनका इलाज या राहत डॉक्टर नहीं दे सकता ,परिवार में इसका एक नमूना चल रहा है ,यह अजीब लगता हैं और लक्षणो का नमूना एक सा नहीं रहता है (किसी विशेष कारण के बिना यह होता हैं और हट जाता हैं) यहां आप अपने में महसूस करते हैं कि इसके बारे प्रार्थना कि जनी चाहिए और इसे संभवत दानवी के रूप में देखा जाना चाहिए।

फिर उदार के द्वारा शारीरिक बीमारियों को दूर करने के लिए हमारा ढंग **यीशु की उदाहरण कि पालना करने वाला होना चाहिए**। उसने बुखार को झिड़क दिया और यह तुरंत हट गया और उसी समय ताकत वापस आ गई (लूका 4:39)। यीशु के अंदर से एक बार चंगाई देने के लिए शक्ति निकाली थी लुका 6:19, उसने अक्सर उद्धार और चंगाई लेन के लिए एक व्यक्ति पर हाथ रखे (लूका 4:40 , 13:13 , 4:29 , मत्ती 8:15 , लूका 13:1-13)।

आज हमारे लिए ऐसा करने को फिर **परमेशवर कि शक्ति और समर्थ में ही किया जाना चाहिए**। अगर वह चंगाई के माध्यम से उद्धार लानेको चुनता हैं तो यह उसकी इच्छा हैं। हमे प्रयप्त विश्वास पर निर्भर हो कर कभी भी इसकी मांग करनी चाहिए और न इसे करना चाहिए। आज किसी के पास किसी को और सभी को ठीक करने का उपहार नहीं हैं। हमारे लिए यह सही हैं कि हम उद्धार के समय चंगाई के लिए प्रार्थना करें और परिणाम परमेशवर पर छोड़ दे। यह भी आवश्यक हैं कि हम किसी दानव से निपटे जो बीमारी का कारण हो रहा हैं (शारीरिक या मानसिक ,पुष्ठ 7 देखे) अक्सर दानव हमारे स्वास्थ्य को अप्रत्यक्ष तरीको से प्रभावित करते हैं ,जैसे कि हमारे अंदर काम करके, कि हम वह खाते हैं या ऐसे काम करते हैं जो लंबे समय में हमारे लिए अस्वास्थ्यक होते हैं और हमारे स्वास्थ्य को कमजोर करते हैं। इन सभी को भी यीशु के नाम में निपटा जाना चाहिए (मत्ती 10:1) कभी-कभी परमेशवर आपको पवित्र आत्मा के रूप में **तेल से अभिषेक करने** का नेत्रव कर सकता हैं जो चंगाई देता हैं (मरकुस 6:13) तेल या किसी भी अनुष्ठान में विश्वास मत रखो यह केवल एक सहायक नजरिया हैं। चंगाई पर अधिक पड़ने के लिए पेज 116-117 देखे।

इसलिए ध्यान रखे कि **अक्सर बीमारी दानवी होती हैं** खासकर जब डॉक्टर इलाज करने में असमर्थ होते हैं। यहा तक कि वे बिमारियां भी दानवी हो सकती हैं जिनका इलाज डॉक्टर कर देते हैं खासकर

अगर किसी व्यक्ति के जीवन में दानवग्रस्ति के चिन्ह हैं। प्रार्थना करते समय और बुद्धि मांगते समय इसको ध्यान में रखो। किसी भी बीमारी को लाईलाज मत समझो। हमेशा सुनिश्चित करें कि यह दानवी नहीं हैं (ज्ञान के लिए परमेशवर से पुछ कर और उसकी बीमारी में शामिल किसी भी दानव को यीशु के नाम मेंजाने कि आज्ञा देना) याद रखे कि आध्यात्मिक और भावनत्मक बीमारियों से निपटते हैं तो शारीरिक बीमारिया बाहर नहीं जाती। कभी भी भय न करें ,शैतान केवल परमेशवर कि स्वीकृति के साथ ही बीमारी ले सकता हैं। (अय्यूब 1:6-12)

चेताबनी का एक शब्द : क्योकि दानव बीमारी का कारण बन सकते हैं वे खुद **नकली चंगाई** भी ला सकते हैं और बीमारी को रोक सकते हैं (मत्ती 12:24 ,24:24 , 2 थिस्सलुनीकियो 2:9 , प्रकाशितवाक्य 16:14) यह उन चमत्कारी चंगाई कि व्याख्या करता हैं जो परमेशवर कि इच्छा और वचन के अनुसार नहीं किये जाते।

<u>उपवास</u> आज उपवास को अक्सर **अनदेखा किया जाता हैं** परन्तु जब इसे सही मकसद से किया जाता हैं तो आध्यात्मिक युद्ध में काफी लाभदायक होता हैं। यीशु अक्सर उपवास करता था (मत्ती 4:1-11) यीशु मानता था कि उसके चेले भी ऐसा करेंगे (नोट करे **जब** , **अगर** नहीं) (मत्ती 6:16) उपवास प्रार्थना से अलग एक आध्यत्मिक व्यायम हैं हलाकि अक्सर प्रार्थना के सबंद में किया जाता हैं। जिसे करना चाहिए (मत्ती 9:15)। आम तौर पर उपवास भोजन से किया जाता हैं। (सभी या एक निश्चित भोजन समूह जैसे मिठाई या दिन का एक निश्चित भोजन ,या पूरा दिन कोई भोजन नहीं)। कई बार पानी पीने से परहेज किया जाता हैं और कई बार नहीं। कभी-कभी नींद या सेक्स भी शामिल हैं (2 कुरिन्थियों 6:5 , 11:27 और 1कुरिन्थियों 7:3-5)। कब और कैसे परमेशवर आपको उपवास करने कि अनुवाई करे इसके लिए संवदेनशील रहें।

उपवास का **मकसद** पापो के लिए संव्य को दंडित करना या परमेशवर के प्रति वफादारी साबित करना नहीं हैं , कि वह निश्चित स्थिति में खुश होकर ज्यादा अनुग्रह करेगा। भूख विनम्रता कि तस्वीर हैं (भजन संहिता 69:10 ,व्यवस्थाविवरण 8:2-3 ,11-14, होशे 13:6)। भूख को सहना आत्म अनुशासन और गर्व के खिलाफ काम करना सिखाता हैं (एज्रा 8:21,यशायाह 58:3)। यह समर्पण का एक प्रतीक हैं। उपवास प्रार्थनाऔर परमेशवर कि तलाश के लिए उपलब्ध होने वाले अधिक समय पैदा करता हैं। यह परमेशवर के करीब जाने के लिए कुछ भी त्याग करने कि इच्छा दिखाता हैं।

यह दानवी ताकतों को चितावनी देता हैं कि आप परमेशवर कि इच्छा और महिमा की खोज में गंभीर हैं (यिर्मयाह 29:13-14)। उपवास का एक पक्ष लाभ यह है कि व्यक्ति आत्म-नियंत्रण के लिए परमेशवर पर निर्भर रहना सीख सकता हैं और इस प्रकार अपनी भूख को बेहतर नियंत्रण कर सकता हैं (1कुरिन्थियों 6:12-13 , 2 पतरस 2:19)। इससे आत्म-नियंत्रण के साथ यौन पापो पर काबू पाने में भी मदद मिलती हैं।

जब हम आम तौर पर उपवास के बारे में सोचते हैं कि यह बिना भोजन खाये रहने की स्थिति है , उपवास के अनेक विभिन्न रूप भी हो सकते हैं। आशिंक उपवास में कुछ खाद्य पदार्थ या भोजन को समाप्त करना

शामिल हो सकता हैं। यहाँ तक की भोजन के पूर्ण उम्मूलन के साथ स्वस्थ पेय का सेवन किया जा सकता हैं।

उपवास परमेशवर के हाथ को मजबूर करने या जल्दी से हमारी प्रार्थना का जवाब पाने का तरीका नहीं हैं। यह सही मकसद के लिए किया जाना चाहिए नहीं तो इसका कोई फायदा नहीं होगा (मत्ती 6:6-15 ,यशायाह 58 , लूका 8:11-12)। उपवास समर्पण का दृष्टिकोण प्रदान करता हैं। (परमेशवर को खुश करने की इच्छ, संव्य को नहीं)। यह प्रार्थना के लिए अतिरिक्त समय दे सकता हैं। भूखे पेट रहना लगातार प्रार्थना में बने रहने के लिए स्मरण किया हो सकता हैं और भूख परमेशवर के लिए एक बलिदान रूपी भेट चढ़ाई जा सकती हैं।

पहली बार धीरे -धीरे उपवास करना शुरू करना अच्छा है और पहली बार उपवास की अवधि लंबी नहीं रखनी चाहिए। बहुत सी अच्छी किताबे और लेख उपलब्ध हैं जो यह सीखने में मदद करते हैं कि उपवास के पहले या बाद में किया खाना बेहतर हैं। बस याद रखे कि ध्यान परमेशवर पर क्रेद्रित रहे न कि उपवासी पर। दुश्मन इसे गर्व के स्रोत के रूप में उपयोग कर सकता हैं और यह उपवास के पूरे उदेश्य को निकार सकता हैं।

<u>बच्चे</u>

जैसा कि हम ने देखा हैं कि **बच्चे दानवग्रस्त हो सकते हैं**। वास्तव में, जितने से हम अवगत हैं यह उससे कही अधिक चल रहा हैं। दानवी हमले कुछ इस तरह के रूप में होते हैं ,एक छोटे बच्चे का रात को अधिक रोने से लेकर बड़े बच्चे के द्वारा रात को आपना बिस्तर गीला करना या विद्रोह और अवज्ञा आदि। कुछ भी जो आपको या आपके बच्चे को हराने के लिए संदिग्ध लगता हैं। परमेशवर का उदार उनके लिए भी हैं।

बाइबिल में दानव बीमारी से पीड़ित बच्चो को दर्ज लिया गया हैं (मत्ती 17:15 ,मरकुस 9:18 , 25)। वे बच्चो को अपनी भावनओ को नियंत्रित करने में सक्षम होने से रोकते हैं (मरकुस 9:17 , 22)। वे शारीरिक रूप से बच्चो को नुककसान पहुंचाने कि कोशिश करते हैं (मरकुस 9:20-22)। वे अपने संव्य के दृष्ट स्वभाव को संतुष्ट करने के लिए बच्चो को अपवित्र करते हैं (मरकुस 1:24 ,34,5:9 , लूका 4:41)। वे बच्चो को दिखावा करने और कला दिखाने के साथ-साथ उस व्यक्ति की जो उन बच्चो को नियंत्रत से मुक्त करने कि कोशिश कर रहा हैं उसकी अवदेलना करने के लिए उकसाते हैं (मरकुस 9:20,25 ,19,23)। जब वे छोड़ने के लिए मजबूर हो जाते हैं तब वे मृत्यु के लक्षणों को प्रेरित कर सकते हैं (मरकुस 9:26-27)।

एक जेठे पुते के लिए सबसे पहले और सबसे ज्यादा पीढ़ीगत हमलो से प्रभावित होना एक आम नमून हैं। यहूदियों में जेठे पुत्र परमेशवर को समर्पित होते थे इसलिए शैतान भी उन पर आपना पहला दवा करने कि कोशिश करता था। अक्सर यह परिवार का जेठा पुत्र होता हैं जिस पर आध्यात्मिक हमला किया जाता हैं।

सुनिश्चित करे कि बच्चा जानता है कि वह समस्या नहीं है परन्तु उसे समस्या है। **अक्सर बच्चे इन बातो से जितना हम सोचते हैं उस से ज्यादा जागरूक होते हैं**। अंको अक्सर अपने सर में गूँजती आवाजे सुननी हैं ,और रात को अपने कमरे में परछाई दिखती है या अपनी भावनओ से बढ़ कर अन्य भावनओ द्वारा नियंत्रित किये जाना महसूस होना आम बात लगती हैं। उनके साथ उनकी बात सुनने के लिए कुछ विश्राम का समय बिताये। उन्हें बहुत सारे प्रशन पूछे और उनके उत्तरो को ध्यान से सुने। अपने आपको उनके स्थान पर ,उनकी सिमित शब्दावली के साथ रखने कि कोशिश करे। सभी क्षेत्रो की धीरे-धीरे जाँच करें (आवाजे , परछाईये ,बहुत वास्तविक काल्पनिक मित्रो आदि)। चीज़ो को मत मानों। उनकी हर बात को गंभीरता से लें। बाद में प्रार्थना करने या बात करने के लिए बातो को लिख लें। परमेशवर कि अनुवाई के प्रति सवदेनशील रहें। अपने आवेगो और विचारो के साथ आगे बढ़े , इस तरह के समय पर वे परमेशवर से हैं। परमेशवर से बुद्धि के लिए प्रार्थना करे (याकूब 1) और उन सब चीजों के लिए जो हो सकती हैं।

बच्चे अक्सर आध्यात्मिक क्षेत्र के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। बहुतो के पास अपनी युवा वर्षो से एक स्वर्गदूत को देखने कि कहानी होती हैं। वे बुराई के प्रति भी अधिक संवेदनशील होते हैं। किसी घर के लिए दानवी ताकतों के लिए उसके पूरी तरह कुछ हिस्सों में खुले रहना असामान्य नहीं हैं ,अतीत में किये गए कामो और कहे गए शब्दों के कारण। यदि आपके घर का एक **निश्चित क्षेत्र** समस्याओ का कारण बनता हैं (विशेष रूप से भय लेकिन यह कुछ भी हो सकता हैं) उस क्षेत्र में जाये और यीशु के नाम से उस पहुंच को वापस लें जिस पर शैतान या उसकी सेना दावा करती हो। हमने दीवारों पर सलीब ने निशान बनाने के लिए तेल का उपयोग किया हैं ,एक रोशनी भी होने दे (अँधेरे पर रोशनी का प्रतीक) और मसीह संगीत चलने दें जो कुछ क्या घर में कोई ऐसी जगह हैं , यहाँ उन्हें डर लगता हैं ,या कुछ अजीब लगता हैं ,या उन्हें लगता है कि भूत या ऐसी चीज़ हो सकती हैं। वे आम तौर पर बड़ो कि तुलना में इस चीज़ो के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।

जब बच्चे छोटे होते हैं (5 य 6 से कम) समझने के लिए तो जब आप उनके उद्धार के लिए प्रार्थना करते हैं तो **उनको उपस्थित होने कि आवश्यकता नहीं होती**। माता-पिता के रूप में आप अधिकार के साथ अपने बच्चो के लिए प्रार्थना कर सकते हैं ,उसी तरह जैसे आप अपने लिए प्रार्थना करते हैं। जब वे बड़े होते हैं (लगभग 5 से 10 साल) तो उन्हें इन चीज़ो के बारे में शिक्षित करने के उदेश्य से शामिल किया जाना चाहिए। वे खुद के लिए प्रार्थना कर सकते हैं ,और वे आध्यात्मिक युद्ध के बारे में भी सीखना शुरू कर सकते हैं। बेशक उनके जीवन में विशिष्ट ,पाप होते हैं तो उन्हें यह कबूल करना चाहिए। जैसे जैसे वह बढ़ते हैं उतने ही ज्यादा वह जिम्मेदार होते हैं (विशेष रूप में 8 साल से ऊपर) और उतना जो ज्यादा उन्हें शामिल होना चाहिए। बहुत कुछ खुलने पर भी निर्भर करता हैं। खुली मर्जी से किय गए पाप का उनके लिए कबूल करना जरूरी हैं , जबकि पैतृक उत्पीड़न कुछ ऐसा है जो उनके माता-पिता उनके लिया कर सकते हैं जब वे अभी युवा ही होते हैं। गोद लिए गए बच्चो के विशेष रूप से सभी पैतृक दरारे यीशु के खून तले रखी जानी चाहिए। आध्यात्मिक अगुवा के रूप में पिता को अपने बच्चो के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। प्रत्येक सुबह उसको प्रत्येक का नाम ले ले कर प्रार्थना करनी चाहिए। यदि किसी भी कारण से पिता इस भूमिका को नहीं भर रहा हैं , तो माँ को यह काम लेना चाहिए और करना चाहिए।

बच्चो के उद्धार के लिए प्रार्थना करने में यीशु के उदाहरण का अनुसरण करें। उसने बच्चो को भी व्ही दिया जो उसने बड़े को दिया था (मरकुस 7:24-30,9:14-25)। दानव एक जैसे हैं , एक सा काम करते हैं इसलिए उन्हें एक समान ही निपटे।

नियमित रूप से और विशेष रूप से अपने बच्चे के लिए प्रार्थना करें। शैतान के पास भी उनके जीवन के लिए एक योजना और उदेश्य हैं। जो कुछ भी हो सकता हैं उसके प्रति संवेदनशील बने और यीशु के नाम में इसे तोड़े। कुछ समय उनके साथ ऊची आवाज में प्रार्थना करें ताकि वे सीख सके कि कैसे खुद के लिए प्रार्थना करनी हैं और वे जाने कि वह परमेशवर कि देखभाल और सुरक्षा में सौंपे गये हैं। प्रार्थना करें कि यीशु बच्चे में उत्पन हो (गलतियों 4:19) ताकि वे शैतान से छुड़ाए जाये (मत्ती 6:13 ,नीतिवचन 11:21) ताकि वह परमेशवर के द्वारा सिखाये जायेगे और वह उसकी शांति का अनुभव करें (यशायाह 54:13) , ताकि परमेशवर के सिदांत उनके दिमाग में और दिलो में होंगे (इब्रानियों 8:10) , ताकि वे उन दोस्तों को चुने जो बुदिमान हो और अच्छे प्रभावी हो (नीतिवचन 13:20, 1कुरिन्थियों 5:11) , ताकि वे योन रूप से शुध्द रहेंगे (इफिसियों 5:3 ,31-33) , ताकि वे अपने माता-पिता पर भरोसा करेंगे और उनका सम्मान करेंगे (इफिसियों 6:1-3) ,कि वे सही साथी होने के साथ -साथ यह पाएंगे कि उनकी शादी पूरी जिन्दगी चलेगी ,और यह कि वे परमेशवर के चुनाव किय गए क्षेत्र जो जानेगे।

<u>एक पुत्र या पुत्री कि स्वतंत्रता के लिएप्रार्थना</u>

प्रिय पिता मैं अपने बच्चे-------के लिए आपके पास विनती करने आया हूँ। मैं उसे प्रभु यीशु मसीह के नाम में आप के सामने लाता हूँ , मैं उनके लिए आपके बिनशर्त प्यार के लिए धन्यवाद करता हूँ। उनका मार्गदर्शन करने में हमारी तरफ से रही असफलताओ के लिए मैं आपसे क्षमा मांगता हूँ, मैं माता/पिता होते हुए उसके सब पापो को प्रभु यीशु मसीह के खून तले लाता हूँ। मैं वह हर एक पहुंच वापस लेता हूँ जिस पर दानव दावा करते हो जो हमारे पैतृक दरारों के माध्यम से बनी हो मैं उन सब को प्रभु यीशु मसीह के खून तले रखता हूँ। मैं प्रभु यीशु मसीह के खून को उनके जीवनो पर होने की प्रार्थना करता हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ ,कि आपका पवित्र आत्मा उन्हें भर दे और उन्हें हमेशा आपकी महिमा और सम्मान के लिए उपयोग करें ,ताकि वे बड़े और आपकी सेवा करें। यीशु के नाम में मैं प्रार्थना करता हूँ आमीन

<u>पति और पत्नी</u>

आज यह स्पष्ट है कि शैतान की हमारे देश के पतन की योजन का बड़ा हिस्सा हमारे परिवार के पतन से शुरू होता हैं। वह मसीह विवाहता जीवन को कम आंकने में काम करता हैं , गलतफहमी पैदा करने का कारण बनता हैं ,साझेदारों में स्वार्थी विचारो को विकसित करने , दुसरो की कमीयो पर ध्यान केंद्रित करने ,थोड़ी कमजोरी और नकारात्मक भावनओ को स्थापित करने ईष्या को बढ़ाने, माफ़ी और बहाली से भागीदारों को दूर रखने ,नराजगी पैदा करने दूसरे से अधिक अपनी जरूरतों को पहले रखने ,पेसो पर या बच्चो की परवरिश पर असहमति पैदा करने, अपने साथी की दूसरे के साथ तुलना करना ,जिससे उनको हीन महसूस करवाने के लिए , एक दूसरे से रहस्य रखने में उकसाने और सामान्य रूप से अलग-

अलग बहाने का कारण बनता हैं। इसके प्रति संवेदनशील रहे कि शैतान की आपकी शादी के लिए क्या योजना हैं (वह इसे कैसे नष्ट या बेअसर करने के लिए काम कर रहा हैं)। उसके झूठ के बारे में सोचे जिनको आप मान लेते हैं और वह उसकी योजना का काम करते हैं। इन सभी को यीशु के खून तले रखो।

जब एक साथी दानवग्रस्त होता हैं ,तो दूसरे को धीरज ,प्रेम ,नेतत्व और प्रार्थना में संयम का उपयोग करना चाहिए। ऐसे करने के लिए परमेशवर कि सामर्थ पर निर्भर रहें। यह सब कुछ जो क्षमा करने ,कड़वाहट , क्रोध ,अभिमान आदि के बारे में कहा गया हैं अपने विवाह संबंधो के लिए लागू करें।

परमेशवर के अधिकार स्वरूप को बनये रखे : पति को अगुवा और पत्नी को समर्पण स्थिति में (इफिसियों 5)। पति और पत्नी को एक साथ प्रार्थना करना चाहिए , अपनी शादी और परिवार के लिए। इसमें पति को आगे बढ़ना चाहिए।

परिवार में जब एक आदमी या आध्यात्मिक अगुवा यात्रा पर दूर जाता हैं तो दानव इसे एक कमजोरी के रूप में ले सकते हैं और उस परिवार पर हमला कर सकते हैं। तब आदमी को तमाम आत्माओ को यह घोषणा करनी चाहिए कि मैं , परिवार का महायाजक यह कहता हूँ कि मैं जब तक बाहर हूँ परिवार पर मेरी पत्नी अधिकार में हैं / उसका अधिकार हैं। उन्हें बताये कि बच्चे परमेशवर को समर्पित हैं उन्हें परेशान करने के लिए शैतान की सेना को कोई अनुमति नहीं हैं। पुष्टि करें कि परिवार पर हमला करने के लिए किसी भी आत्मा को परिवार के प्रमुख के माध्यम से ही आना हैं, और फिर उन में से किसी को भी आप हमला करने से रोक दें।

<u>विवाह के लिए प्रार्थना</u>

प्रिय स्वर्गीय पिता हमारी शादी के लिए आपकी पूर्ण योजना के लिए मैं आपका धन्यवाद देता हूँ। मैं जनता हूँ कि अपने शादी कि योजना एक सुन्दर और संतष्ट बंधन होने के लिए योजना बनई थी ,यह आपके साथ हमारे रिश्ते कि एक तस्वीर हैं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप हमारी शादी को आपकी मर्जी के अनुसार बनने के लिए जो कुछ मेरे माध्यम से होना चाहिए वह करेंगे ।

मेरी शादी में असफलता में मेरे पापो के लिए मुझे क्षमा करे मैं आपना _____स्वीकार करता हूँ (व्यकिगत रूप से सभी पापों और कमीयो के बारे में जो आप जानते हैं)। मैं आपको माफ़ करने के लिए बिनती करता हूँ। मैंने उन्हें यीशु के खून तले डाल दिया है और उनके द्वारा दानव को दी गई किसी भी पहुंच को वापस ले लिया हैं। उन सब क्षेत्रो जहाँ मैंने धोखा खाया है मेरी आँखे खोल दे और उन क्षेत्रो में आपके सत्य को लागू करने में मदद करें।

मैं अपने साथी के लिए भी प्रार्थना करता हूँ और उसके पापो को यीशु के खून तले डालता हूँ। मैं उनके लिए आपकी दया के लिए प्रार्थना करता हूँ कि आप पापो और कमीयो को ढांप ले, मैं शैतान कि किसी भी ताकत को उनके माधयम से दावा की गई पहुंच को वापस लेता हूँ।

पिता, मैं आपसे बिनती करता हूँ कि आप हम में से प्रत्येक को अपने पवित्र-आत्मा से भरेंगे। हमे अपने आत्मा के फल से भरे : प्यार ,आनंद।, शांति , धैर्य , अच्छाई ,दया , सौम्यता ,नम्रता ,विश्वास और आत्मा नियंत्रण। हमे अपने आप को और एक दूसरे को दिय गए दरदों से चंगा करें। हमे एक दूसरे को माफ़ करने कि भावना दें। अपने अलौकिक प्रेम को हमारे दिलो में बसाये और हमे एक दूसरे से प्यार करने में हमारी मदद करें जैसे आप हम से प्यार करते हैं।

मुझे दिखाए कि अतीत से अपनी पीड़ा और त्रुटियों को ठीक करने के लिए मुझे क्या करने की आवश्यकता हैं। जहाँ आवश्यक हो हमारे रिश्ते को बहाल करने के लिए मुझे जो करना हैं उसमें और माफ़ी मांगने में मेरी मदद करें। मैं अपने आप को आपके द्वारा बदले जाने की रूप में समर्पित करता हूँ। मैं अपने विवाहित जीनव को आपके सामने समर्पित करता हूँ कि आप इसे चंगा करें और इसे अपने सम्मान और महिमा के लिए उपयोग करें।

माता-पिता और बच्चे।

दानव अक्सर माता-पिता या इसके विपरीत परिवार में समस्यो के लिए बच्चो को कारण बनते हैं। वर्षों तक हमने निराशा और कष्ट नामक दानवो से युद्ध किया हैं ,जिनका काम उनका नाम ही दर्शाता हैं। वह बच्चो के बीच सघर्ष का कारण बनते हैं और यह पूरे घर में फैल जाता हैं। उनकी योजना होती हैं कि हालात कष्ट भरे हो जाये और वह इसमें सफल हो जाता हैं। हमने प्रत्येक दिन इसके खिलाफ प्रार्थना करना हैं दिन कि शुरुआत में ही या जैसे हमे इसके होने का अहसास होता हैं। हाल ही में यह तर्क भावन कि आत्मा हैं जो आपना बदसूरत सिर उठाती हैं। जिन बच्चो के लिए हम प्रार्थना करते हैं जब हम उनमें कई बाते उभरती देखते हैं। हम बच्चो के साथ भी व्यवहार करते हैं लेकिन आध्यात्मिक युद्ध भी शामिल करते हैं। यह वासतव् में बाते बेहतर बनाने में मदद करते हैं। अक्सर दानव बच्चो को ऐसा व्यवहार करने को उकसाते हैं जो परिवार में दुसरो को प्रभावित करता हैं।

हमने बहुत मामलो में देखा हैं कि बच्चे ऐसे काम करने हो प्रेरित होते हैं जिससे वह मुश्किल में पढ़ जाये और वह बहुत डांट खाते हैं। यह उनके अंदर हीन भावन पैदा करती हैं और उनकी ऐसी छवि बन जाती हैं कि जो बुरी है या माता -पिता को न पसंद होती हैं। जब तक कि उल्ट न हो जाये जो जीवन के लिए एक नक्शा तय करता हैं, जो कि बहुत आम हैं। हमने माता-पिता कि नींद में बाधा डालने और माता-पिता के दिन के समय को कठिन बनाने के लिए बच्चो को रात में पीड़ित होता देखा हैं (बिस्तर गिला करना ,रोना ,आदि)। जल्दबाज माँ-बाप अधिक डांट देते हैं और बच्चा अपने आप को **नकारा** महसूस करता हैं।

दानव अक्सर एक लम्भीब दूरी के कारण --प्रभाव सबंध बनाने के लिए चीजों को स्थापित करते है ,जैसे कि गिरने वाली पंक्ति में डोमिनोज उदाहरण के लिए बेतशेबा के साथ दाऊद का पाप कई साल पहले स्थापित किया गया था जब उसने महिलाओ के साथ (एक से अधिक पत्नी) अपनी वासना भोगी थी। शैतान ने बड़े सबर के साथ फंन्दा खींचने के लिए सही समय का इंतजार किया। यह महत्वपूर्ण हैं कि हम अपने बच्चो को यीशु के लिए सही ढंग से बढ़ाये और किसी भी ऐसी विकास को न होने दे जिसका शैतान लाभ उठा सके।

चर्च कि भूमिका

यीशु का वादा है कि शैतान और उसकी सेनये चर्च को नष्ट नहीं कर सकती ,मैं अपने चर्च और सेवकाई को इस आधार पर रखता हूँ (मत्ती 16:18)**। दानवी शक्तियों को कलीसियाएँ नष्ट करने और उनको हराने के लिए समुंदेशित किया गया हैं**। अन्य मामलो कि तरह ,वहां एक शासक भावना भरा दानव जिसके आधीन अन्य दानव होते हैं जिनका एकमात्र उदेश्य चर्च कि सेवकाई को कम आंकना हैं (जब तक कि चर्च पहले से ही उस तरह नहीं चल रहा हो जैसे शैतान चाहता है कि वह चले)। एक चर्च को

पूरी तरह से एक जुट होते हुए शैतान के विरोध भरे कामो के बारे में पता होना चाहिए ताकि वे इकठ्ठा होकर इसके विरुद्ध प्रार्थना कर सके।

अपने चर्च और समुदाय के लिए प्रार्थना करें ,इसके खिलाफ काम करने के लिए सुमनदेशित हर दानव शक्ति को बांध दे।

अपने **अगुवों** के लिए विशेष रूप से प्राथन करें ,क्योकि शैतान सब से ज्यादा पहले उन पर हमला करता हैं क्योकि वे चर्च में प्रभावशाली होते हैं (लूका 22 :31-32 ,1पतरस 5:1,8)। अपने चर्च के लिए प्रार्थना करें कि वह झुठे शिक्षको और शिक्षाओ से सुरिक्षत रहे जो आज कल बहुत शातिर और प्रचलित हैं।

चर्च पाप करने वाले सदस्यों को **अनुशासित** करने के लिए हैं ताकि उन्हें पश्चाताप करने कि आवश्यकता दिखाई दे, और वे दूसरो को गुमराह नहीं करेंगे। कलीसिया में भी दानवग्रस्ति होने के लिए दरारे हो सकती हैं। अक्सर यह उन लोगो के माध्यम से होता है जो स्वेच्छा से स्वंय को दानवग्रस्त होने कि अनुमति देते हैं या अपने जीवन में पाप को अनुमति देते हैं। यह सब यीशु के खून तले रखा जाना चाहिए। अनुशासन का मतलब यह नहीं है कि उन्हें स्थानीय चर्च सहभागिता से हटा कर शैतान के राज्य में रख दिया जाये वहा वे उसके आधीन होंगे (मत्ती 18:15-18)। वास्तव में यह एक व्यक्ति को बिना रोक टोक के अपने पापो का पालन करने को एक स्थान पर रखना हैं, इस तरह वे अपनी पसंद के परिणाम देखेंगे और पश्चताप करेंगे (1कुरिन्थियों 5:5 इसके बारे में बात करती हैं।)

स्थानीय निकाय दानवग्रस्ति से **आजादी पाने के लिए बहुत सहायक हो सकते हैं।** परमेशवर मसीहियों को एक स्थानीय निकाय में कई तरीके से एक दूसरे की मदद करने के लिए कहता ,और आध्यात्मिक युद्ध निश्चित रूप से एक ऐसा तरीका हैं। सभी आध्यात्मिक उपहारों का उदेश्य दूसरो की सेवा करना हैं। परमेशवर एक व्यक्ति को एक उपहार देता हैं कि वह इसका दूसरो के लिए उपयोग करें न कि अपने आप के लिए। कुछ उपहार जो विशेष रूप से आध्यात्मिक युद्ध में उपयोगी होते हैं यह हैं :

बुद्धि :परमेशवर के मन को जानने की विशेष क्षमता इस बात की जानकारी प्राप्त करने के लिए कि कैसे कुछ ज्ञान को मसीह कि देह में उत्पन होने वाली विशिष्ट आवश्तकताओ के लिए सर्वोत्तम रूप से लागू किया जा सकता हैं। (1कुरिन्थियों 12:8)

आत्माओ की पहचान : विशेष क्षमता परमेशवर देता हैं जो किसी को सथिरता और आश्वासन के साथ यह जानने के लिए सक्ष्म बनाता हैं कि ईश्वरीम व्यवहार मना जाने वाला किया वास्तव में ईश्वरीय हैं ,मानवीय हैं या शैतानी हैं (प्रेरितो के काम 5:1-10,8:23)।

हिमायत : एक नियमित आधार पर समय की अविधि से प्रार्थना करने के विशेष क्षमता और विशिष्ट उत्तर देखने के लिए जो आम मसीही की औसत अपेक्षित से अधिक होती हैं। (1तीमुथियुस 2:1-2 , कुलुस्सियों 1:9-12,4:12-13 , प्रेरितो के काम 12:12 , याकूब 5:14-16 , लूका 22:41-44)

झाड़ फूंक : विशेष क्षमता जिसमें दानवो को आदेश दिया जा सकता हैं कि वह लोगो को छोड़ दे और निकल जाये (प्रेरितो के काम 16:16-19)

सावधान : शैतान इन उपहारों की नकल कर सकता हैं और आज बभी चमत्कार कर सकता है। सुनिश्चित करें कि आप स्रोत को पहचानते हैं (2 थिस्सलुनीकियों 2:8 , मत्ती 24:24 , प्रकाशितवाक्य 13:13-14 ,19:20 ,प्रेरितो के काम 13:8) शैतान लोगो माध्यम से बोल सकता हैं एक प्रकार के दानवी जबान का उपहार (यशायाह 8:19,29:4,24:8) और वह चमत्कार कर सकते हैं (मत्ती 7:22-23) जब तक आप शक्ति के स्रोत को नहीं जानते तब तक आलौकिकता से प्रभावित न हो क्योकि शैतान एक बड़ा जालसाज हैं।

V.लगातार बने रहना

<u>क . कठिनई :चल रहा युद्ध</u>

जैसा कि पहले कहा गया हैं ,उदार एक बार किया गया काम नहीं है। यह एक प्रक्रिया हैं , जैसे प्याज से परतो को छीलना। कभी-कभी प्रगति बहुत धीमी होती हैं। कभी ऐसा महसूस होता हैं कि प्रगति हो ही नहीं रही हैं। फिर यह भी निश्चित है कि जो कुछ आपने प्राप्त किया हैं वह उस का खो जाना संभव हैं (पाप के माध्यम से किसी दरार को पुन उपयोग होने के लिए अनुमति देना)। शैतान की सेना आसानी से नहीं छोड़ती हैं ,और सिर्फ इसलिए कि वे हार गए हैं या कमजोर हो गए हैं इसका मतलब यह नहीं कि सब ख़त्म हो गया हैं। अक्सर लड़ाई थोड़ी देर के लिए बद से बदतर हो जाती हैं। जितना अधिक वे परमेशवर का पालन करने और उसकी नजदीकी में रहने कि कोशिश करते थे ,यहूदियों को भूमि पर विजय प्राप्त करते समय उतना ही अधिक विरोध और लड़ाईयों का सामना करना पड़ा। पौलूस के मांस में काँटा इसका उदाहरण हैं (2 कुरिन्थियों 12:7-10)।

एक और उदाहरण नहेमायाह का हैं। जब यरूशलेम कि दीवारें अस्त व्यस्थ थी और कोई भी उन्हें बनाने के लिए प्रयास नहीं कर रहा था , वह सब चुपचाप थे। लेकिन जब नहेमायाह ने लोगो को पुननिर्माण के लिए प्रोत्साहित करना शुरू किया तो बहुत विरोध हुआ। कुछ तो बाहरी था , कुछ अंदरूनी। बाहरी तौर पर नहेमायाह ने इन चीजों का सामना किया जैसे ठठा (2:19) , क्रोध (4:1) , आलोचना (4:2) , खिल्ली (4:3) , यद्ध कि धमकी (4:8) , समझौता (6:2) , और आपने बारे में बताया गया झूठ (6:6)। इन से भी अधिक मजबूत आंतरिक हमले थे। शैतान ने उसे अंदर से हतोत्साहित किया (4:10) , काम छोड़ देने के लिए उकसाया (4:10) लालच (5:1,3,5) और भय (6:10) के साथ उस पर हमला किया। यह सब होने के बावजूद नहेमायाह कायम रहा और आख़िरकार काम पूरा हुआ (6:15) और परमेशवर के दुश्मन हार गये (6:16)।

हम भी ,अधिक विरोध और निंरतर विरोध का सामना करेंगे। जब हम परमेशवर के राज्य के प्रति सच्चे हो कर शैतान के राज्य के प्रति लड़ते हैं ,तो हमे यह एहसास होना चाहिए कि दुश्मन लड़ेगा। हमे इसके बारे में क्या करना हैं ? शैतान कि योजना हमें हतोत्साहित करने ,छोड़ने के लिए , द्रढ़ता न करने के लिए ,जिस जगह पर हैं वही रहने के लिए और उसके लिए जमीन छोड़ देने के लिए। यह सुनिश्चित करने के ऐसा न हो।

जब यहूदियों ने लाल सागर को पार किया तो परमेशवर ने पानी में रास्ता खोल दिया और वह सुखी जमीन पर चले, लेकिन जब वे विश्वास में परिपक्व हुऐ तो चीजे बदल गई। जब वे यरदन के पास पहुंचे तो उन्हें पहाड़ी से उतरना पड़ा और पानी में कदम रखने पड़े ,जबकि अभी भी परमेशवर पर भरोसा था कि जैसे उनके पैर पानी को टकराएंगे परमेशवर इसे हटा देगा। उसने किया ,और फिर वे सुखी भूमि पर चले। अब आप लाल समुन्दर में नहीं हैं।

अब आप उससे आगे बढ़ चुके हैं। अब परमेशवर आपसे चाहता हैं कि आप उसके प्रति समिर्पण और आज्ञाकारी दिखाए ,चाहे कुछ भी हो ,चलते पानी में उतर जाओ यह भरोसा रखते हुए कि वह आपके साथ होगा। यदि आप पानी के दो भाग होने का इंतजार करेंगे तो आप कभी नहीं चलेंगे। शुरू करने के लिए सर्मपण करें चाहे कुछ भी हो - भले यह आपको मार डाले। तय करें कि आप अनआज्ञाकारी होने के बजाय मृत हो गए तो भला हैं। अब मुझे यह नहीं लगता हैं ,कि यह जीवन या मृत्यु का मामला हैं लेकिन फिर भी आपको किसी भी कीमत का भुगतान करने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता हैं। जिसे आप महसूस कर सकते हैं। मुझे पता है कि परमेशवर इसके माध्यम से आपकी देखभाल करेगा। यह उन संघषों से कही अधिक होगा , यहाँ आप कुछ अन्य जीत के साथ थे , क्योकि परमेशवर दबाव बढ़ाता हैं जिससे हमारे विश्वासी जीवन कि मांसपेशियां विकसित होती हैं। मुझे एक बूढ़ी औरत कि कहानी पसंद है जो अपने विश्वास के कारण जानी जाती थी। एक बार किसी ने उससे कहा मैं शर्त लगाता हूँ कि अगर परमेशवर तुम्हे एक दीवार से कूदने के लिए कहता हैं तो आप ऐसा जरुरु करेंगी ! महिला ने कहा , हाँ अगर उसने मुझे ऐसा करने के लिए कहा तो मैं करुँगी। दीवार पर दौड़ना मेरा काम है और दीवार कि देखभाल करना उसका काम हैं।

<u>क्यों परमेशवर युद्ध स्थिति बने रहने कि अनुमति देता हैं ?</u>

यह सदियों पुराना सवाल हैं। परमेशवर लोगो को पीड़ित और संघर्ष करने कि अनुमति करने देता है ?

प्यार करने वाला परमेशवर इतनी बुराई को जारी रहने के लिए कैसे अनुमति दे सकता हैं ?

परमेशवर आपना बचाव नहीं करता या इसका वर्ण करता हैं कि वह किस चीज़ कि अनुमति देता हैं। वह हमे एक स्वतंत्र इच्छा शक्ति और पाप देता हैं और परिणामी बुराई प्राकृतिक परिणाम हैं या उससे मुहं मोड़ लेना हैं।

फिर भी निर्दोष लोग दुःख उठाते हैं। हम इन चीज़ो से परमेशवर के ब्यक्तित्व और चरित्र का मूल्यांकन करने कि कोशिश नहीं कर सकते क्योकि उसने स्वर्ग छोड़ कर एक मनुष्य बन कर , पृथ्वी पर रह कर ,और फिर हमारे द्वारे कभी भी किय गये पापो का दंड सहन करने सलीब पर जाने द्वारा अपने चरित्र और प्रेम को साबित किया हैं। हमारे लिए उसके प्यार को शक के साये से परे साबित करता हैं। अगर यह नहीं होता तो हम सभी अब से लेकर अनंत काल के लिए नर्क के लायक होते। इसलिए अब नर्क से कम कुछ है तो उसकी कृपा और दया हैं। वह कुछ को दूसरो से ज्यादा दिखाता मालूम होता हैं हमारा इस पर न्याय करना नहीं बनता। परमेशवर हमारे लिए जवाब देह नहीं हैं। हम जब तक उसके सब तथ्यों को नहीं जानते हम उसका न्याय करने के लिए खड़े नहीं हो सकते हैं जैसे वह हमारे बारे सब कुछ जानता है और जितना देखता है उतना ही अच्छा जानता हैं। कई चीज़े छोटे बच्चो कि अनुचित लगती हैं लेकिन

उन्हें अपने माता-पिता पर भरोसा करना चाहिए। डॉक्टर से टनाका लगवान ,एक चमकीला सुन्दर चाकू बच्चे के हाथ से ले लेना , काई बातो से बच्चो को लगता हैं कि उनके माता-पिता उनसे प्रेम नहीं करते,परन्तु वास्तव में उनके पास हकीकत में क्या हो रहा है यह देखने का द्रष्टिकोण नहीं होता ,और इसी तरह हमारे जीवनो पर परमेशवर का क्या नजरिया हैं, वह देखने कि क्षमता नहीं रखते। हम जानते हैं कि उन चीज़ो का सामना करना जिन्हे हम नहीं समझते हैं। यह हमे विश्वास करने का अवसर देता हैं। हमारा विश्वास बढ़ता है और हम बढ़ते है। परमेशवर महिमा होती हैं जब वह हमारा उद्धारकर्ता करता हैं और दूसरे लोग हमे धैर्यपूर्वक विश्वास करते हुए देखते हैं। अध्यात्मिक युद्ध कई तरह के संघर्षो में से एक रूप हैं जिसे परमेशवर हमारे भले और अपनी महिमा के लिए उपयोग करता हैं। यह दूसरी बात है कि छुटकारा अक्सर तात्कालिक नहीं होता हैं लेकिन एक लंबी प्रकिया हैं।

ख . समाधान : जारी युद्ध

आपको यह समझाने की कोशिश करने के बाद कि आपके द्वारा अनुभव किया गया उद्धार वास्तव में नहीं हुआ हैं (अविश्वास) शैतान का अगला हथियार झूठ होता हैं कि आपकी विजय नहीं होगी ,आप नहीं बदलेंगे , हालात बेहतर नहीं होंगे ,आदि यह सच नहीं हैं ! यदि आप परमेशवर के सिधांतो का पालन करते हैं तो आपको निरंतर विजय और प्रगति प्राप्त होगी कितनी जल्दी और कितनी पूर्ण यह सब होगा सब परमेशवर पर निर्भर करता हैं।

<u>उद्धार को बनये रखना</u>

1. परमेशवर के पूरे कवच पहन लो (इफिसियों 6:10-18)

2. किसी भी पाप को तुरंत स्वीकार करें लेकिन उस में बने न रहे (1यहुन्ना 1:9)

3. पवित्र शस्त्र में बने रहो (भजन सहिता1:1-3)। वचन एक दर्पण हैं (याकूब 1:22-25) , एक दीपक हैं (भजन सहिता119:105) एक जूफा (इफिसियों 5:25-26) , एक तलवार (इब्रानियों 4:12) और भोजन (1पतरस 2:2 , मत्ती 4:4)। इन सब का उपयोग करो।

4. पुराने पापो को आदतों कि और तौर तरीके को तोड़ डालो नहीं तो शैतान फिर वापस आएगा (मत्ती 12:43:45 , लूका 11:24-26)। परमेशवर के आत्मा और उसके फल के साथ खालीपन को भरे (गलतियों 5:9 -24 , यहुन्ना 15:3)। अपने घर को अशुद्ध पुस्तकों और उन सब चीज़ो से साफ करो जो वहां नहीं होनी चाहिए (व्यवस्थाविवरण 14:7-19)। अपने आपको और अपने घर को परमेशवर के लिए मखसूस/अभिषेक करें।

5. निरंतर प्रार्थनाऔर स्तुति का जीवन विकसित करें (1थिस्सलुनीकियो 5:17)।

6. अन्य विश्वासियों के साथ नजदीकी संगति में रहे (इब्रानियों 13:5)।

7. परमेशवर को पूरी तरह से मानने व उसके पीछे चलने के लिए आपना समर्पिण करें (इफिसियों 6:16)।

आध्यात्मिक रूप में विकास करें

हम सब या तो आगे बढ़ रहे हैं या पीछे जा रहे हैं। हम एक ही जगह पर मृतक कि तरह पड़े नहीं रह सकते। यदि आप आध्यात्मिक रूप से नहीं बढ़ रहे हैं तो आप तृप्त हो रहे हैं। आध्यात्मिक रूप में बढ़नना जारी रखे। मसीही जीवन की मूल बातो पर ध्यान केंद्रित रखे : प्रार्थना करे , बाइबिल अध्यन करें संगति करें ,आराधना करें , साक्षी आदि। कभी-कभी विकास में तेजी आती हैं ,और कई बार बहुत अधिक बाहरी परिवर्तन नहीं दिखता है (यह उस समय होता है जब आपकी आध्यात्मिक जड़े गहरी हो रही होती हैं और आपको आगामी विकास के लिए तैयार किया जाता हैं)। प्रकृति में भी यही सब है , हमेशा निंरतर विकास नहीं होता हैं , और चीज़े बहुत बढ़ जाती हैं।

शैतान या दानवो पर ध्यान केंद्रित न करें , हमेशा उनके बारे में न सोचे या डरे कि वे क्या करेंगे। हर झाड़ी के पीछे दानव मत देखो। उन्हें यह ध्यान पसंद हैं , भले ही यह नकारात्मक हो। यह आपकी आँखे यीशु से हटा जकर उन पर लगाती हैं और यही वह चाहते हैं। आध्यात्मिक युद्ध के इस क्षेत्र में संतुलना बनाना बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसे संतुलन में रखे। यह विकास के कई महत्वपूर्ण आध्यात्मिक उपकरणों में से एक हैं। इस एक के लिए दूसरो का अनादर न करें।

पवित्र आत्मा के प्रति समर्पण करो

याद रखे , जब दानव चले जाते हैं तो क्षेत्र को परमेशवर कि आत्मा से भरा होना चाहिए नहीं तो यह उनके वापस आने को निमंत्रण होगा - हालात पहले से बेदतर होंगे (मत्ती 12:43-45)। उनको बाहर निकालना एक बात हैं ,और उन्हें बाहर रखना दूसरी बात हैं। उनके द्वारा कभी इस्तेमाल किया गया रास्ता बंद करें (पश्चताप के साथ यीशु के खून से ढकते हुए) और उनके द्वारा कब्जा किया गये स्थान को पवित्र आत्मा से भरें।

पवित्र आत्मा के द्वारा भरे जाने को लेकर यहाँ विस्तार में बात करना मेरी उदेश्य नहीं हैं क्योकि बहुत सी अच्छी पुस्तके हैं जो इस विषय पर गहराई से बात करती हैं। यहाँ यह कहना काफी होगा कि प्रत्येक व्यक्ति उद्धार पाते ही पवित्र आत्मा प्राप्त करता हैं (इफिसियों 1:13 , 1कुरिन्थियों 12:13)। वह कभी नहीं छोड़ता (इफिसियों 4:30)। प्रत्येक विश्वासी के पास पवित्र आत्मा हैं जो उसके अंदर रहता हैं ,परन्तु प्रत्येक के पास उसे भरने के लिए (शाब्दिक रूप से नियंत्रित करने को) नहीं हैं (इफिसियों 5:18)। हमे उसको भरने की / नियंत्रित करने की अनुमति देना पल पल पर निभाए जाने वाली जिम्मेदारी हैं। इसका मतलब यह हैं कि हमे अपने जीवन के सभी क्षेत्रो में पूर्णता से समर्पित होना चाहिए (1थिस्सलोनिका 5:19) जीवन में किसी भी पाप को अनुमति नहीं देनी हैं (इफिसियों 4:30) , और हर क्षेत्र में उस पर और उसकी ताकत पर निर्भर रहना चाहिए (गलतियों 5:16)। इस तरह से वहां कोई भी गढ़ नहीं होगा (रास्ता) पुर्नस्थापित (2 कुरिन्थियों 10:3-5)।

पवित्र आत्मा के प्रति समर्पण कि प्रार्थना

प्रिय स्वर्गीय पिता आप ने कहा हैं कि विद्रोह जादु टोने के रूप में हैं और अधर्म (अवज्ञा) मूर्तिपूजा और अधर्म के पाप के रूप में हैं (1शमूएल 15:23) , मैं जानता हूँ कि मैंने अपने विद्धोह दिल भरे व्यवहार और कामो के माध्यम से आप के विरुद्ध पाप किया हैं। मैं अपने विद्रोह के लिए आप से क्षमा मांगता हूँ कि प्रभु यीशु मसीह के बहाये गये खून के वसीला से मेरे विद्रोह के कारण दृष्ट आत्माओ द्वारा प्राप्त की गई हर जमीन रद की जाये। यहाँ और जब मैं घमण्ड से चला हूँ मुझे दिखाए और मेरी सहायता करें कि मैं आपकी सामर्थ से उन सब की तरफ से मुड़ सकों। मुज्झे आपने आत्मा से भरे और अपनी महिमा के लिए इस्तेमाल करें। मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम मैं यह प्रार्थना करता हूँ।

कवच को पहनों

युद्ध का लिबास

जब मैं 19 साल का था तो मुझे संयुक्त राज्य की सेना में शामिल किया गया। अन्य लोगो ने कहा कि एक सेनिक ,एक विशेषधिकार , बहुत ही अच्छा होगा। लेकिन मुझे बहुत ही कठिन लगा। मुझे यह सीखना था कि जो लोग मुझे नष्ट करना चाहते हैं उनके खिलाफ आपना बचाव कैसे करना हैं , मुझे यह सीखना था कि दुश्मन सेना के साथ कैसे लड़ना हैं। जब मैं सेना में था तब मैंने आपना जीवन परमेशवर को सौप दिया , ताकि मैं उसके लिए जीवन व्तीक करू। अन्य लोगों ने कहा एक मसीही होना एक विशेषधिकार बहुत ही अच्छा होगा लेकिन मुझे यह बहुत कठिन लगा, मुझे यह सीखना था की कैसे एक और दुसमन से जो मुझे नष्ट करना चाहता है आपना बचाव किया जाये । मुझे यह सीखना था कि एक न दिखने वाले दुश्मन से कैसे लड़ना हैं। मैं अब संयुक्त राज्य सेना में नहीं हूँ इस लिए मुझे अमेरिका के दुश्मनो के साथ

नहीं लड़ना हैं। परन्तु मैं अभी भी परमेशवर कि सेना में हूँ - और मुझे परमेशवर के दुश्मनो से लड़ना जरूरी हैं। यदि आप परमेशवर कि सेना में हैं तो आप समझेंगे कि मेरा क्या मतलब हैं। आप भी कई लड़ाईयों का सामना करते हैं जैसे उसके लिए जीवन जीते हैं।

हम युद्ध में हैं (1यहुन्ना 5:19)। हम दुश्मन के कब्जे वाले इलाके में रह रहे हैं (2 कुरिन्थियों 4:4) उन से घिरे हुए जो हमे नष्ट कर देना चाहते है (1पतरस 5:8)। एक सेना में ,कमांडर उपकरण प्रदान करता हैं और सेनिक इसका उपयोग करना सीखते हैं। परमेशवर , हमारा कमांडर , हमारे बचाव और विजय हासिल करने के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान करता हैं लेकिन हमे उनका उपयोग करना सीखना चाहिए। (2 कुरिन्थियों 10:4 , इफिसियों 6:10-18) में पौलुस इसका विवरण करता हैं।

पौलूस में इन शब्दों को जेल में लिखा यहाँ वह एक रोमी सिपाही के साथ जंजीर में बंधा हुआ था। जैसे ही वह इफिसियों कि किताब के अंत में आया उसने हमारी लड़ाई का वर्णन करने और उस पर विजय हासिल करने का तरीका खोजा। उसके साथ रोमी सिपाही को देखते हुए , पौलूस ने उसके उपकरणों कि तस्वीर परमेशवर के द्वारा प्रदान किये गया उपकरणे को दिखाने के लिए उपयोग किया।

पौलूस हमे मजबूत होने की आज्ञा देकर शुरू करता हैं ,परन्तु हमारी ताकत में नहीं केवल परमेशवर की ताकत में (इफिसियों 6:10)। व्ही शक्ति जिसने शैतान को क्रूस पर हराया था (इब्रानियों 2:14-15) और जिसने मसीह को मृतकों में उठाया (इफिसियों 1:18-23) हमारे लिए उपलब्ध हैं। परमेशवर की

शक्ति शैतान की शक्ति से अधिक हैं (1यहुन्ना 4:4)। शैतान हम से ताकतवर हैं , लेकिन परमेशवर से नहीं।

पौलूस इस शक्ति को कवच के टुकड़ो के रूप में वर्णित करता हैं जिन्हे हम पहनते हैं और जिनका हम उपयोग करते हैं (इफिसियों 6:11)। हमे इसे पहनने की आज्ञा हैं। इसका उपयोग वैकल्पिक नहीं हैं , परन्तु परमेशवर के सेनिक के लिए अनिवार्य हैं। और हमे यह सब पहनने की आज्ञा दी गई है , न कि कुछ को।

हमे इसकी आवश्यकता इसलिए है ,क्योकि शैतान के पास हमे फ़साने और धोखा देने कि योजनए हैं (इफिसियों 6:11)। यह शब्द किसी जानवर को फ़साने वाले शिकारी के लिए उपयोग होता हैं। पौलूस हमारी लड़ाई को संघर्ष कहता हैं (इफिसियों 6:12)। यह शब्द मौत की लड़ाई को दर्शता है शैतान आप को आप के परिवार को और आपकी कलीसिया को नष्ट करने के लिए कुछ भी कर सकता हैं।

तो हम क्या करें ? इन योजनाओ और संघर्ष के खिलाफ विजय कैसे प्राप्त होगी ? यहाँ वर्णन हैं कि यह कवच कहा से आता हैं।

इफिसियों 6:10-13 एक अंतम वचन : इसलिए प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवत बनो। परमेशवर के सारे हथियार बांध लो कि तुम शैतान कि युक्तियों के सामने खड़े रह सको। क्योकि हमारा यह मल युद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रदानो से , और अधिकारीओ से और इस संसार के अंधकार के हकीमो में और उस दृष्टता की आध्यात्मिक सेनओ से हैं जो आकश में हैं। इसलिए , परमेशवर के सारे हथियार ब्रोध लो की तुम बुरे दिन में सामना कर सको और सब कुछ पूरा करके सथिर रह सको।

जब आपके मसीही जीवन जीने की बात आती हैं तो क्या आपके पास एक योद्धा जैसी मानसिकता हैं ? क्या आप अपने खिलाफ हमलो , फंदे और योजनओ के प्रति सतर्क हैं ? क्या आप जानते है कि दुश्मन आपको पाप करने के लिए कहाँ ले जाता है ? क्या आप उसके प्रयासों को हराने में संक्षम हैं ?प्रार्थना करे और अपनी लड़ाई में ज्ञान और अंतदृष्टि के लिए परमेशवर से मांगे ताकि आप बेहतर सामना कर सके।

<u>दिमाग के लिए युद्ध</u>

जब एक सिपाही अपने दुश्मन का सामना करता हैं , उसे विजय होने के लिए अपने कमांडर के द्वारा प्रदान किऐ गये सब हथियारों के उपयोग करने कि आवश्यकता होती हैं। हमारे मसीही जीवन का भी यही सच हैं। उपकरण का पहला टुकड़ा जिसे हमे पहनने की आज्ञा है वह है उद्धार का टोप (इफिसियों 6:17)।

जेल में पौलुस के लिए जंजीरदार रोमी सिपाही ने धातू से बन एक टोप पहना हुआ था। दुश्मन एक बड़ी भारी तलवार से हमला करते जिसे वे रोमी सेनिक के सिर पर लाने की कोशिश करते। इस प्रकार उनके सिर की सुरक्षा के लिए टोप का मजबूत होना जरूरी था। हमारा सच भी यही हैं। शैतान हमारे दिमाग और विचारो पर सब से पहले हमला करता हैं। यह हमारे मन में संदेह भय , भरम ,वासन , लालच और

जो कुछ भी हमे हरा देगा , डालता हैं। हमारी आध्यात्मिक लड़ाई सबसे पहले हमारे दिमाग में (विचारो में) जीती या हारी जाती हैं। इसलिए हमे विजय के लिए मसीह के दिमाग की जरूरत हैं (1कुरिन्थियों 2:16)।

हमे पता होना चाहिए कि हम मसीह में कोन हैं ताकि हम हतोत्साहित , भय या गुस्से के सामने न झूके। हमे उन सब के बारे में पता होना चाहिए जो हमारे पास हैं ताकि हम उन जरूरतो को पूरा करने के लिए पाप न करें ,जो परमेशवर ने पहले से ही पूरी कर दी है। हम एक नई रचना हैं , इसका अर्थ क्या हैं और यह कैसे लागु होता हैं हमे इसे जानना चाहिए (2 कुरिन्थियों 5:17)। यह जानते हुए कि परमेशवर की सच्चाई हमारे दिमाग को शैतान के झूठ के खिलाफ बचाये रखने का एक मात्र तरीका हैं।

परमेशवर ने हमे उद्धार के क्षण में दो सौ से अधिक लाभ दिए हैं। एक बार का वह वादा करता है कि अतीत वर्तमान और भविष्य के पाप हमेशा के लिए चले गए हैं (रोमियो 8:1)। वह हमारे साथ अपने अनुग्रह में देश आता हैं न कि हमारे कामो से।

हम जन्म से परमेशवर के परिवार में हैं (यहुन्ना 3:3) और गोद लेने से (इफिसियों 1:5)। इस प्रकार हम परमेशवर कि संतान हैं (यहुन्ना 1:12)। परमेशवर के साथ हमारा परिवारिक रिश्ता हैं , न कि राजा और नौकर का या स्वामी और दास का। परमेशवर हमारा पिता हैं , यीशु हमारा बड़ा भाई हैं (इब्रानियों 2:11-13)। हम परिवार हैं इसकी , सारी सुरक्षा , लाभ ,विशेषधिकारो , सहित। वे अब हमारे हैं , ऐसा कुछ नहीं है जिसके लिए हमे इंतजार करना होगा। न केवल हम उसके परिवार में हैं बल्कि हम परमेशवर के साथ दोस्त भी हैं (यहुन्ना 15:15)। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि परमेशवर आपको मित्र कह रहा हैं ? महान विशेषधिकार हमारे हैं ! जैसे वह अपनी योजना और आशीर्वाद को हमारे साथ साँझा करता हैं।

हमे संदेह से परे पता होना चाहिए कि परमेशवर ने हमे अब और हमेशा के लिए बिनशर्ता प्यार किया हैं (रोमियो 8:38-39)। हम किसके लायक हैं या किसके लायक नहीं हैं इसका इस बात से कोई लेना देना नहीं हैं और हम इस प्रेम को खो बैठे इसका भी कोई रास्ता नहीं हैं। ऐसा कुछ भी नहीं हैं जो हम करें जिससे वह हम से अधिक प्यार करें। ऐसा कुछ भी नहीं है जो हुम करें जिससे वह हमारे लिए अपने प्यार को कम कर दे। वह हम से अधिक प्यार नहीं कर सकता हैं और न ही अपने प्यार को हमारे लिए कम कर सकता हैं।

जब हम उसके प्रावधान के बारे में संदेह से टकराते हैं तो हमे याद रखना चाहिए कि उसने हमारी सभी जरूरतों को पूरा करने का वादा किया हैं (फिलिप्पियों 4:19)। जब हमे उसके प्यार पर शक होता हैं तो हमे याद रखना चाहिए कि हम आपना उद्धार कभी नहीं खो सकते (2 कुरिन्थियों 1:21-22)। जब हम थक जाते हैं तो हमे याद रखना चाहिए कि हम हमेशा के लिए स्वर्ग में रहेंगे (फिलिप्पियों 3:20) जब हम पाप से झुझते हैं तो हमे याद रखना चाहिए कि वह हमे पाप पर विजय दिलाता हैं (गलतियों 2:20)। जब हम शैतान की सेना के साथ अपने युद्ध में संघर्ष करते हैं तो हमे याद रखना चाहिए की उसने हमे उन पर विजय का वादा किया है (कुलुस्सियों 1:13 ,लुका 10:18 - 19)।

जब दोनों पति -पत्नी विश्वास करने वाले होते हैं और समर्पित होते हैं और उद्धार का टोप पहने होते हैं तो वह जीवन में उनके मूल्यों , प्राथमिकताओं ,उदेश्यो और लक्ष्यो के बारे में एक मन होते हैं। वह जानते हैं

कि केवल यीशु ही उनकी सभी जरूरतों को पूरा कर सकता हैं , उनका साथी नहीं , और इसलिए वह उनकी आपूर्ति के लिए उसकी और रुख करते हैं। बच्चो को भी यह समझना चाहिए कि मसीही होते हुए उनके पास क्या है। यह हमारे दिमाग और विचारो पर शैतान के हमलो को रोकने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

कुलुस्सियों 1:13 उसी ने हमे अंधकार के वश से छुड़ा कर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रेवश कराया

2 कुरिन्थियों 5:17 इसलिए यदि कोई मसीह में हैं तो वह नई सृष्टि हैं पुरानी बाते बीत गई और देखो सब नई हो गई हैं

2 कुरिन्थियों 10:5 इसलिए हम कल्पनओ का और हर एक ऊँची बात का जो परमेशवर कि पहचान के विरोध में उठती हैं , खंडन करते हैं , और दर एक भावन को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।

आपके दिमाग की लड़ाई कोन विजय रहा हैं ? क्या आपके विचार यीशु के विचारो के अनुरूप हैं ? क्या आप अपने विचारो को नियंत्रिण करने और उन्हें मसीह के आज्ञाकारी बनाने में संक्षम हैं ? यदि नहीं , तो लिखिए कि आपको क्या करना चाहिए और परमेशवर से उसकी मदद के लिए प्रार्थना करें।

हमारी कवच में दरारे

जीवन में पाप हमारे खिलाफ काम करने को दानवो के लिए एक रास्ता हो सकता हैं (इफिसियों 4:26 - 27 , मरकुस 7:21-23, गलतियों 5:19-21, कुलुस्सियों 3:5-8) । यहाँ तक कि एक पाप जिसे बने रहने की अनुमति दी गई है दानवग्रस्ति के लिए एक रास्ता बन सकता हैं। इसी लिए परमेशवर हमे सीने पर पहनने के लिए आध्यात्मिक कवच प्रदान करता हैं।

पौलूस के लिए जंजीरदार सिपाही ने अपने दिल और महत्वपूर्ण अंगो की रक्षा के लिए सीने पर कवच पहन रखा था। इसे पहनना हमेशा आसान या आरामदायक नहीं था, लेकिन अगर वह इसे नहीं पहनता तो वह कमजोर होता। भले ही उसने इसे पहना हो , लेकिन इसमें छेद या कमजोर हिस्से दुश्मन को इन के माध्यम से हमला करने और उसे हराने की अनुमति मिल जाती। आध्यात्मिक रूप से भी यही सच हैं।

पौलूस कहता हैं कि यह हमारी धार्मिकता का प्रतिनिधित्व करता हैं (इफिसियों 6:14)। यह हमे यीशु की धार्मिकता से ढपे रहने के महत्व कि याद दिलाता हैं। जब हमारे पाप क्षमा होते हैं तो यह हमे उद्धार के साथ प्राप्त होता हैं (मत्ती 9:6 , मरकुस 2:10 , लुका 5:23)। जब हम अपने पापो का पश्चताप करते हैं तो करजोर और टूटे हुए क्षेत्र कवर होते हैं। (1यहुन्ना 1:9)।

विवाह में पति और पत्नी को एक दूसरे को पाप पर विजय होने के लिए प्रोत्साहित करने और एक दूसरे कि मदद करने के लिए कहा जाना चाहिए वह एक दूसरे के लिए एक अच्छा उदाहरण बनें। बहुत बार एक ऐसा बोलेगा या करेगा ,जो दूसरे को पाप कि ओर ले जाता हैं , जैसे हवा ने आदम के साथ किया।

जब हर एक यीशु कि तरह रहता हैं,एक दुसरे की सेवा करताऔर क्षमा है तो दंपति एक साथ धार्मिकता की कवच पहनता है। प्रत्येक साथी के लिए अपने जीवन में पाप को दूर करने और अपने साथी को ऐसा करने में मदद करना सबसे महत्वपूर्ण हैं। जब उनके बच्चे होते हैं तो वह भी इसमें शामिल होते हैं और इस तरह पूरा परिवार पवित्रता का एक उदाहरण हैं।

जबकि सीने का कवच कमर के ऊपरी हिस्से को सुरक्षा प्रदान करता हैं , सच्चाई की पेटी (कमरकस) कमर और कमर के नीचे के हिस्सों को सुरक्षा प्रदान करती हैं (इफिसियों 6:14)। बेल्ट सिपाही को उसके वस्त्र और हथियार सुरक्षित रखने में मदद करती है ताकि वह ठोकर न खाये। परमेशवर का सत्य हमे आध्यात्मिक रूप से ठोकर खाने और गिरने से बचता हैं। शैतान हमे अपने झूठ और धोखे से भटकाना चाहता हैं। जब कभी हमे कोई विचार आता है जो बाइबिल में परमेशवर के सत्य से मेल नहीं खाता तो हमे इसे अस्वीकार कर देना चाहिए। इसका मतलब है कि हमे परमेशवर के वचन को अच्छी तरह जानना चाहिए।

शादी में भी हमे उस झूठ से बचना चाहिए जो शरीर और संसार हमे शादी के बारे बताता हैं। आत्म केंद्रित मूल्य , गैर अपेक्षाये ,(जो बाइबिल पर आधारित नहीं हैं) अत्याचारी स्वभाव और दुनिया मे सब से पहले मेरा स्थान , स्वार्थ वह आम बाते हैं जिनसे मसीहियों का प्रभावित हो जाना भी आसान हैं। बच्चो को भी परमेशवर कि सच्चाई को जानना चाहिए नहीं तो वह शरीर और शैतान के झूठ में गिर जायेगे। हमे परमेशवर के सत्य को जानन चाहिए , केवल व्ही हमे मुक्त करता हैं। (यहुन्ना 8:32)।

(यहुन्ना 8:32) तब तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हे स्वंत्रत करेगा।

(1पतरस 1:16) यह लिखा हैं: पवित्र बनो क्योकि मैं पवित्र हूँ।

क्या आपके जोवन में कोई पाप है जिसका आप पर नियन्त्रण हैं ? परामर्श लो , दुसरो को प्रार्थना करने के लिए कहो और जो कुछ भी हो सकता हैं इस पर विजय पाने के लिए करों।

सुनिश्चित करे कि आप परमेशवर के सत्य को जानते हैं और उसमें बने रहते हैं। इस तरह के झूठ से कि तुम्हे इस पाप पर कभी भी विजय प्राप्त नहीं होगी। कौन से झूठ के साथ आप संघर्ष करते हैं ? कौन आपको इन पर विजय बनता हैं ?

<u>शांति + विश्वास = विजय</u>

शांति सब इसके बारे बात करते हैं परन्तु यह हैं कुछ के पास। शब्द बहुतायत का मतलब हैं जो दर्द के खालीपन को ढकने कि खोज करता हैं। तो भी परमेशवर कि शांति हमारे जीवनो में विजय प्राप्ति के लिए आवश्यक हैं। पौलूस अपने साथ खड़े सिपाही कि तरफ देखते हुए कहता हैं जैसे एक सिपाही को निर्भर किऐ जाने वाला मजबूत जूता चाहिए हमे भी इस तरह की मजबूत निर्भर किऐ जाने वाली शांति की आवश्यकता हैं (इफिसियों 6:15)। दुश्मन हमला करने के लिए उस स्थान को चुनता जो उनके लिए तो लाभदायक परन्तु रोमियो के लिए कठिन होते। पानी , रेतली जमीन ,नोकीली चटाने या टेड़े मेडे रास्ते जो

दुश्मन को लाभ देते हैं। इसलिए रोमियो को अपने पैरो के लिए मजबूत टिकाऊ और हर हालात में चलने वाले जूतों की जरूरत होती। अगर वह फिसल जाते या ठोकर खा जाते तो वे हार जाते।

कब और शैतान सोचता हैं कि उसके पास विजय पाने का अच्छा मौका है शैतान हम पर हमला करता हैं। हमे परमेशवर के साथ शांति से रहने कि आवश्यकता है फिर हम उसमें सुरक्षित हैं चाहे कुछ भी क्यों न हो। (जीवन में) परमेशवर ने कभी नहीं कहा कि वह हमारे संघर्ष को दूर करेगा लेकिन यह कि वह उनके माध्यम से हमारी मदद करेगा (यहुन्ना 17:15)। वह हमे कठिनइयों के आभाव का वादा नहीं करता लेकिन वह इनके बावजूद शांति का वादा करता हैं (फिलिप्पियों 4:6-7 , यशायाह 26:3 , यहुन्ना 14:27 , 2 थिस्सलोनीकियो 3:16)।

अगर पति या पत्नी के पास परमेशवर कि शांति नहीं हैं , बल्कि अशांति चिंता , तनाव या भ्रम है ,तो यह उनकी शादी को नकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा। प्रत्येक को पहले परमेशवर के साथ शांति कि आवश्यकता हैं , फिर इसके अधार पर वह एक दूसरे के साथ शांति से रह सकते हैं। यह उनके लिए स्थिरता से खड़े होना होगा फिर दुश्मन उन पर कुछ भी क्यों न फेके इससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। आपके दिल और रिश्ते में परमेशवर कि शांति के बिना आपको शादी संघर्ष भरी होगी। यह न केवल आपको बल्कि आपके बच्चो को और शादी की धारणा को भी नुकसान पहुँचता हैं। बच्चो को भी यीशु की शांति की आवश्यकता हैं ताकि वे उसके जैसा हो सके और अपनी आध्यात्मिक लड़ाई लड़ सके।

पौलूस द्वार सूचीबद्ध कवच का अगला टुकड़ा विश्वास की ढाल हैं। अब तक सभी कवच सैनिक की आंतरिक रक्षा का हिस्सा थे। ढाल रक्षा की बहरी दिवार हैं (इफिसियों 6:16)। रोमी सिपाही आपने साथ बड़ी ढालें ले कर चलते थे जो दुशमन के द्वारा उन पर जलती हुई मिशालों को फेकने द्वारा किये गए हमले से बचाती थी (इफिसियो 6:16) ढाल के बिना वह जलती हुई मिशलों को चकमा देते और फिर किसी भी तरह से लड़ाई लड़ने में संक्षम नहीं रहते। पौलूस कहता था कि यह ढाल उस सैनिक के लिए जो करती हैं हमारा विश्वास हमारे लिए वही करता हैं।

परमेशवर के प्रेम और संप्रभुता में विश्वास हमारी रक्षा कि बाहरी दिवार हैं। यदि हम वास्तव में मानते हैं कि कोई बात नहीं परमेशवर का सब पर नियंत्रण है और केवल उसकी महिमा और हमारे भले के लिए किसी परस्थिति को अनुमति देता हैं , तो हम जीवन कि समस्याओ और पीड़ा से से पराजित नहीं होंगे (रोमियो 8:28)। जितना बड़ा हमारा विश्वास हैं , उतनी ही मजबूत हमारी सुरक्षा हैं। यह बहुत ही छोटी ढाल की तुलना में एक बड़ी ढाल हैं।

विवाह भी विश्वास पर बनाया जाना चाहिए परमेशवर और एक दूसरे में। प्रेम बिना शर्त होना चाहिए , प्रतिबद्धता स्थिर होनी चाइये। और क्षमा भावन नित्य होनी चाहिए। जब कठिन समय विवाह से टकराता हैं तो दोनों व्यक्तियों का विश्वास परमेशवर पर केद्रिंत होता हैं न कि कठिनाई पर, या एक दूसरे की असफलता पर। अपने साथी से लड़ाई न करें। परमेशवर पर भरोसा रखे और मिलकर अपने आम दुश्मन से लड़ाई करे। विश्वास रखे कि परमेशवर जनता हैं और वही करता हैं जो आप के लिए सब से अच्छा है औए यह किआपका साथी जीवन भर के लिए उसकी सही पसंद हैं।

अपने बच्चो को विश्वास और आज्ञाकारिता से चलना सिखाऐ। जब वह छोटे ही होते हैं तो उन्हें सिखाऐ कि वह आप पर भरोसा करे और आपकी आज्ञा का पालन करें। उन्हें दिखाए कि आप भरोसा करने के योग्य हैं। जब वे बड़े होते हैं तो उनकी यह भावन परमेशवर के लिए तब्दील करने में मदद करें। उनका खुद के प्रति विश्वास होना चाहिए। वे आपकी ढाल के पीछे नहीं शिप सकते , उनका परमेशवर में खुद का विश्वास विकसित होना जरूरी हैं। अभी से उनके विश्वास का निर्माण शुर करें।

यहुन्ना 17:15 मेरी प्रार्थना यह नहीं है किन्तु उन्हें संसार से अलग करदे परन्तु यह कि उन्हें दष्ट से बचा लें।

रोमियो 1:17 क्योकि उसमें परमेशवर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिए प्रगट होती हैं , जैसे लिखा हैं , विशवास से धर्मी जन जीवन रहेगा।

1 (बहुत कमजोर) से 10 (बहुत मजबूत) आओ अपनी शांति को क्या अंक देते हैं ? आपकी शन्ति को सबसे ज्यादा कौन भंग करता हैं ?आपको इसके लिए क्या करना चाहिए ?

1 (बहुत कमजोर) से 10 (बहुत मजबूत) आप अपने विश्वास को क्या अंक देते हैं ? कब / कहाँ आपका विश्वास अति मजबूत हैं ? कहाँ और कब अति कमजोर हैं ? आपको आपना विश्वास बढ़ाने के लिए क्या करना चाहिए ?

<u>अपराध के साथ चलते रहना</u>

इफिसियों 6 में अब तक देखे गए सभी उपकरण रक्षात्मक हैं। हम अपने आपकी रक्षा कर सकते हैं लेकिन विजय प्राप्त नहीं कर सकते हैं। हमे हमले पर जाने और अपने दुश्मन को हराने के लिए एक आक्रामक हथियार की जरूरत हैं। वह आत्मा की तलवार हैं (इफिसियों 6:17)। अपनी छोटी दोधारी तलवार से रोमियो ने संसार भर को जीत लिया। उनकी पीठ के लिए कोई सुरक्षा नहीं थी, इसलिए वे मुड़कर भाग नहीं सकते थे उन्हें अपने दुश्मन के खिलाफ आगे बढ़ना था , और यही हमे भी करना चाहिए।

आत्मा की तलवार परमेशवर के वचन को संदर्भित करती हैं -यह इतन महत्वपूर्ण हैं कि हमे यह अधिकार मिलता हैं ,पौलूस कहता हैं (इफिसियों 6:17)। यीशु ने प्रलोभन दिए जाने पर बाइबिल का हवाला दिया (मत्ती 4:1-11)। बाइबिल को पढ़े। बाइबिल को याद करें। बाइबिल का हवाला दें। बाइबिल की प्रार्थना करे। बाइबिल को सोचे। यह एक मात्र तरीका हैं जिसमें हम दुश्मन के प्रलोभन , झूठ और हमलो को दूर भगा सकते हैं।

एक स्वस्थ , बढ़ती , ईश्वरीय शादी के लिए ,एक पति और पत्नी को परमेस्वर का वचन जानना आवश्यक है। उन्हें इसका व्यक्तिगत रूप से और इकठे मिलकर अध्यन करने की आवश्यकता हैं। उन्हें पता होना चाहिए कि आध्यात्मिक युद्ध में इसे कैसे लागु किया जाये। उन्हें बाइबिल की आयतो को पढ़ने में आसानी होनी चाहिए। उन्हें अपने बच्चो को भी बाइबिल सिखानी चाहिए। बहुत से मसीही परिवार के बच्चे विश्वास छोड़ देते हैं जैसे वे घर छोड़ते हैं क्योकि यह कभी भी उनका हिस्सा बना ही नहीं होता। उन्हें परमेशवर

के वचन को जानने , इसका कुछ हिस्सा याद करने और इसे अपने लिए मानने की जरूरत हैं। यदि हमारे बच्चे यीशु का अनुसरण करते हैं तो उन पर हमला किया जायेगा ,इसलिए उन्हें अब अपने एकमात्र आक्रामक हथियार , परमेशवर के वचन का उपयोग कैसे करना हैं , जानना आवश्यक होगा।

पौलूस ने कवच को सूचीबद्ध करना पूरा किया हैं ,लेकिन यह बताना खत्म नहीं किया कि जित कैसे प्राप्त होगी। वह आगे प्रार्थना का उल्लेख करता हैं (फसियो 6:18-20)। हम प्रार्थना को कमांडर और सेनिको के बीच संचार का दर्जा दे सकते हैं। एक अच्छे संचार के बिना , सैनिक को नहीं पता होगा कि कहाँ जाना हैं और क्या करना हैं। उसे अपने हाल पर छोड़ दिया जायेगा। हमे परमेशवर से बात करने और हमारे लिए उसकी योजना जानने के लिए उसे सुनने के लिए समय चाहिए। मसीही जोड़ो के लिए एक साथ प्रार्थना करना बहुत महत्वपूर्ण हैं। गहरी , (गंभीर) खुली , हार्दिक प्रार्थना एक जोड़े को करीब लाएगी और उनको विजय प्राप्त करने में मदद करेगी।प्रार्थनारहित विवाह एक शक्तिहीन विवाह हैं। यदि आपकी शादी उतनी मजबूत हैं जैसे आप दोनों का प्रार्थना जीवन , तो यह कितनी मजबूत होगी ? शायद इसी लिए यह हमले के लिए इतना खुला हैं। बच्चो को भी परमेशवर के साथ अपने प्रार्थना जीवन को विक्सित करने कि आवश्यकता हैं। उन्हें (उससे) बात करने के साथ - साथ उसके द्वारा उनसे बात करने कि आवाज को पहचानने के लिए सीखने कि जरूरत हैं। विजय के लिए प्रार्थना द्वारा संचार आवश्यक हैं।

यीशु ने हमे उसके नाम से प्रार्थना करने और दानवो को जाने कि आज्ञा देने का अधिकार दिया हैं (मत्ती 28:18-19 , लुका 9:1, 10: 18-19) । वह हमे अपनी आध्यात्मिक लड़ाई में विजय हासिल करने कि अपनी शक्ति भी देता हैं (प्रेरितो के काम 1:8)। हमारे अंदर उसके ईशवरीय स्वभाव से शक्ति मौजूद हैं (2 पतरस 1:4)। हमारे पास बहुतायत का जीवन जीने कि शक्ति हैं जो वह हमे देता हैं (यहुन्ना 10:10) । हम सभी को प्रार्थना और उसके वचन के माध्यम से विजय हासिल करने कि आवश्यकता हैं। हमारे लिए कितनी बड़ी आशीष हैं।

इब्रानियों 4:12-13 - क्योकि परमेशवर का वचन जीवित और सक्रिय हैं। किसी भी दोधारी तलवार कि तुलना में तेज़ हैं और प्राण और आत्मा को , और गांठ - गांठ और गुदे-गुदे को अलग करके आर-पार छेदता हैं और मन की भावनओ और विचारों को जाचता हैं। सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं हैं ,वरन जिससे हमे काम हैं उसकी आँखों के सामने सब वस्तुए खुली और प्रगट हैं।

आप बाइबिल को कितनी अच्छी तरह जानते हैं ? हमला होने पर विजय हासिल करने के लिए आप इस हथियार का उपयोग करने में कितने कुशल हैं ? आप का प्रार्थना जीवन कितन मजबूत हैं ? परमेशवर के साथ बेहतर संवाद करने के लिए आपको क्या करने की आवश्यकता हैं ? अब कुछ समय बाइबिल पढ़ने और प्रार्थना करने में बिताये।

<u>परमेशवर के वचन का उपयोग करें</u>

परमेशवर के वचन को जानना और उपयोग करना विजय के लिए आत्मा के रूप में महत्पूर्ण हैं (यहोश 1:8 ,भजन सहिता77:12 , 1इतिहास 28:9 , मत्ती 22:37-38 , 1कुरिन्थियों 2:16 , फिलिप्पियों 4:8)।

इसी तरह यीशु ने शैतान को हराया (मत्ती 4:1-11)। शैतान मनुष्य के मन में परमेशवर के वचन के बारे में संदेह पैदा करने की कोशिश करता हैं। इसी तरह वह हव्वा के पास गया। उसने शैतान को परमेशवर के वचन का सही हवाला नहीं दिया और जब उसने परमेशवर के वचन में जोड़ा तो उसने इसे नहीं समझा (ऐसा लगता है कि जैसे परमेशवर उनसे कुछ अच्छा छिपा रहा हैं) शैतान परमेशवर के वचन को कम आंक रहा था , और वह जीत गया ! हमे अपनी तलवार का विजय प्राप्ति के लिए उपयोग करने में निपुण होना चाहिए। नीचे दी गई कुछ आयते याद करने और उपयोग करने के लिए हैं।

जब यीशु को लुभान गया तो उसने शैतान के प्रलोभनों पर विजय पाने के लिए पवित्र शास्त्र का हवाला दिया। पौलूस कहता हैं कि हमारा एकमात्र आकम्रक हथियार आत्मा कि तलवार , परमेशवर का वचन हैं। भजन सहिता119:9,11बताती हैं कि यह परमेशवर का वचन हैं जिसके माध्यम से हमारी विजय हैं। जब आपके पास यह विचार और हमले होते हैं तो विजय के लिए पवित्रशास्त्र का उपयोग करें। परमेशवर से आपको कुछ ऐसी आयते देने के लिए कहे जो इन चीज़ो के खिलाफ मदद करेगी उन्हें लिखे और याद करें , जब यह विचार आप पर हमला करे तो उन्हें बार-बार बोले। यह विजय का एकमात्र तरीका हैं , और परमेशवर इस बात कि गारंटी देता हैं कि यह काम करेगा।

याद करने के लिए बाइबिल की आयते

<u>परमेशवर का प्रेम और स्वीकृति</u> :- यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी हैं , विलम्ब से कोप करने वाला और अति करुणा मय हैं। (भजन 103 :8)।

<u>दी बाइबिल , परमेशवर का वचन</u> :- परमेशवर का वचन जीवट और प्रबल हैं और हर दोधारी तलवार से भी बहुत तेज हैं ,और प्राण और आत्मा को , और गांठ - गांठ और गुदे -गुदे को अलग अलग करके छेदता हैं , और मन की भावनओ और विचारो को जाचता हैं। (इब्रानियों 4:12)

<u>परमेशवर का सत्य स्वंत्रत करता हैं</u> :- यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे ,तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हे संवत्र करेगा। (यहुन्ना 8:31-32)

<u>पवित्रता में जीवन जीना</u> :- इसलिए हैं भाईयो मैं तुम से परमेशवर की दया समरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीर को जीवित , और पवित्र और परमेशवर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। (रोमियो 12:1) ।

<u>परमेशवर को समर्पण , शैतान का सामना करो</u> :- वह तो और भी अनुग्रह देता हैं ,इस कारण यह लिखा हैं , परमेशवर अभिमानियों का विरोध करता हैं दीन पर का अनुग्रह करता हैं इसलिए परमेशवर के आधीन हो जाओ और शैतान का सामना करों तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा। परमेशवर के निकट आओ और वह भी तुम्हारे निकट आयेगा। (याकूब 4:6-8)।

<u>परमेशवर शैतान से अधिक महान हैं</u> :- क्योकि जो तुम में हैं वह उससे जो संसार में हैं , बड़ा हैं (यहुन्ना 4:4)।

परमेशवर तुम्हारी सब जरूरतों को पूरा करेगा :- मेरा परमेशवर अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में हैं तुम्हारी हर एक घटी को पूरा करेगा (फिलिप्पियों 4:19)।

मसीह के साथ अपने मन का नवीनीकरण करो :- इस संसार के सद्रश न बनो परन्तु तुम्हारे मन के नये हो जाने से तुम्हारा चल चलन भी बदलता जाये जिससे तुम परमेशवर की भली और भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो (रोमियो 12:2)।

प्रार्थना :- एक धर्मीजन कीप्रार्थनाशक्तिशाली और प्रभावी होती हैं (याकूब 5:16)

दानवो पर अधिकार :- यीशु ने उत्ता दिया मैं शैतान को आकाश से बिजली की तरह गिरता हुआ देखता हूँ। मैंने तुम्हे सांपो और बिच्छुओं को रोदने का और दुश्मन की सब शक्तियों पर ग़ालिब आने का अधिकार दिया हैं , कुछ भी आपको हानि नहीं पहुंचाएगा (लुका 10:18-19)।

शैतान का सामना करना :- यीशु पतरस की तरह मुड़ा और कहने लगा , शैतान मुझसे दूर हो जा ! तू मेरे लिए एक ठोकर हैं तेरा मन परमेशवर की बातो में नहीं परन्तु मनुष्यो की बातो में हैं (मत्ती 16:23)।

पाप दानवग्रस्ति के लिए एक रासते की तरह हैं :- हे, परमेशवर मुझे जाँच कर जान लें ! मुझे परख कर मेरी चिंता को जान लें। और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं और अनंत के मार्ग में मेरी अगुवाई कर। (भजन सहिता139:23-24)।

अभिशाप :- मसीह ने जो हमारे लिए शरापित बना हमे मोल लेकर व्यवस्था के अभिशाप से छुड़ाया , क्योकि लिखा हैं कि जो कांठ पर लटकाया जाता हैं वह शापित हैं (गलतियों 3:13)।

पूर्वज और बचपन कि दरारे :- इस लिये यदि कोई मसीह में हैं तो वह नई रचना हैं , पुरान सब कुछ जाता रहा और सब कुछ नया हो गया (2 कुरिन्थियों 5:17)।

मनोगत दरारे :- ओझाओ और भूत साधनो वालो कि ओर न फिरना ओर ऐसो कि खोज करके उनके कारण अशुद न हो जाना , मैं तुम्हारा परमेशवर यहोवाह हूँ (लैव्यवस्था 19 :31)।

नये युग कि दरारे :- क्योकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित छल से काम करने वाले ,और मसीह के प्रोरितो का रूप धारने वाले हैं। यह कुछ अचम्भे कि बात नहीं क्योकि शैतान खुद भी ज्योतिमय स्वर्गदूत का रूप धारण करता हैं। इसलिए यदि उसके सेवक भी धर्म के सेवको का सा रूप धरे तो कोई बड़ी बात नहीं , परन्तु उनका अंत उनके कामो के अनुसार होगा। (2 कुरिन्थियों 11:13-15)।

दानवग्रस्ति से छुटकारा :- हे प्रियो हर एक आत्में कि प्रतीति न करो , वर्ण आत्माओ को परखो कि वह परमेशवर कीऔर से हैं या नहीं : क्योकि बहुत से झूठे भविष्यदुक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं। परमेशवर का आत्मा तुम इस रीती से पहचान सकते हो : जो आत्मा मान लेती हैं की यीशु मसीह शरीर में हो कर आया वह परमेशवर की ओर से हैं। (1यहुन्ना 4:1-2)।

विंलबित छुटकारा :- प्रभु ने मुझ से कहा मेरा अनुग्रह तेरे लिए काफी है क्योकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती हैं। इस कारण जब में निर्बल होता हूँ तब में बलवंत होता हूँ। (2 कुरिन्थियों 12:9-10)।

नियंत्रित विजय :- आत्मनियन्त्रि बने और सर्तक रहे क्योकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जने वाले सिंह के सामान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाऐ। विश्वास में द्रढ़ होकर उसका सामना करों यह जान कर कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं ऐसे ही दुःख सह रहे हैं (1पतरस 5:8-9)

किसी भी जरूरत के लिए अंतिम में एक पूर्ण सूचि को देखे।

सामना करना स्थिर रहना स्वंत्रता और विजय कि कुंजी

आध्यात्मिक विजय प्राप्त करने और बनये रखने के लिए 2 कुंजी हैं :

1. आप इसे इस कदर चाहते हैं कि आप इसकी प्राप्ति के लिए कोई भी कीमत चुकाने को तैयार हो। इसके साथ 100 % जुड़े रहने के लिए आपको किसी हालात से कोई फर्क नहीं पड़ता।

2. दूसरी कुंजी यह हैं कि जैसे ही आप असफल होते हैं , आप सही तरिके से वापस उठते हैं और फिर से शुरू करते हैं। हार कि स्थिति में मत बैठे रहो लेकिन फिर शुरू करों। इसे पाने के लिए जीवन भर का समय लगा हैं , बाहर निकलने में थोड़ी देर लगेगी। धीरे-धीरे आप अधिकारों से अधिक सोबर और कम से कम प्रभाव के तहत क्रियाशील होंगे। यह ऐसे काम करता हैं।

यह कितना भी बुरा हो- स्थिर रहे

हर हार में स्थिर रहे। परमेशवर आपको इससे मुक्त कर सकता हैं और करेगा। उद्धार एक ऐसी प्रक्रिया हैं जिसका उपयोग को हमे अपने और हमारे बारे कि बातो को सीखने के लिए करता हैं। वह चाहता हैं कि हम उसके प्रति वफादारी में द्दढ़ रहे , चाहे कुछ भी क्यों न हो क्योकि यह हमे उस पर भरोसा करने और निर्भर रहने में मदद करता हैं। यह उसके तरीके का एक हिस्सा हैं जो वह हमे यीशु की तरह बनने के लिए इस्तेमाल करता हैं।

मैं जनता हूँ कि परमेशवर महान हैं और वह विजय दिलाएगा। मुझे पता हैं कि विजय धीरे-धीरे आती हैं , जैसे हम उस जमीन को वापस लेने के लिए जो कभी दुश्मन को दी गई थी , लड़ना सीखते हैं। जब यहोशू के तहत यहूदियों ने वादे कि भूमि पर प्रवेश किया , तो परमेशवर ने उन्हें विजय दिलाई , परन्तु एक समय पर एक ही लड़ाई यहाँ तक कि एक समय एक ही पीढ़ी। उसने उनको सब कुछ एक ही बार में नहीं दे दिया। वह चाहता था कि वह लड़ना सीखे उस पर भरोसा रखने कि जरूरत को जाने धैर्य और द्दढ़ता विकसित करें। जो कुछ उन में शारीरक रूप से सत्य था वह हमरे लिए आधिअत्मिक में सत्य । इसलिए हार मत मानो। दुढ़ रहो, प्रगति को देखना कठिन हो सकता हैं परन्तु याद रखो कि सुधार होता हैं। अपने जीवन को देखे और आप अतीत की तुलना वर्तमान में सुधार देखेंगे।

आप निश्चित रूप से वापस नहीं जान चाहेंगे , प्रगति धीमी है लेकिन स्थिर हैं , जैसे कछुए और खरगोश की कहानी। प्रोत्साहित जो जाओ क्योकि यह स्पष्ट हैं कि दुश्मन अब आप पर जो कुछ फेक सकता हैं फेल रहा हैं। इसका मतलब यह हैं कि यह जितना बुरा हैं , उतना ही बुरा हैं , वह सिर्फ इतना ही कर सकता हैं। अगर वह इससे ज्यादा कर सकता होता तो वह इससे ज्यादा भी करता। यह जानते हुए कि यह जितना बुरा हैं उतना ही बुरा हैं लेकिन निश्चित रूप से धीरे धीरे बहेतर हो जायेगा। इसमें समय लगता

हैं। परमेशवर उस प्रक्रिया में रूचि रखता हैं जिस रूप में आप विकसित हो रहे हैं न कि केवल अंतिम उत्पाद के रूप में। आप अपने बच्चो के साथ भी ऐसा ही करते हैं।

हमे बाइबिल में बार बार बताया जाता हैं कि यीशु कि ताकत में शैतान का सामना करो , दृढ़ता से खड़े रहो और हार मत मानो। शैतान का सामना क्रॉप तो वह आपके पास से भाग जायेगा , यह वादा दवा करने के लिए हैं (याकूब 4:7-8)। वादे पर दवा करने की शर्त , बेशक यह है कि हम परमेशवर के सामने समर्पित रहे (उद्धार के बाद पूर्ण सर्मपण) परमेशवर के निकट आओ (मनन और प्रार्थना में समय की मात्रा और गुणवत्ता) और शुध रहे (एक पवित्र जीवन सब पापो का इकरार करते हुए)। यीशु पर अपनी दृष्टि बनए रखना कुंजी हैं।

आत्मनियंत्रित रहे और सर्तक रहे तुम्हारा दुश्मन शैतान गरजने वाले सिंह की तरह दूधर उधर घूमता हैं इस तलाश में कि वह किसी को खा ले। उसका सामना करो विश्वास में घृढ़ रहो। (1पतरस 5:8-9) सर्तक का शाब्दिक अर्थ है नींदरहित होना इसका तत्प्रय जागरूकता के उदेश्यपूर्ण और संक्रिया स्थिति से हैं। इस का मतलब है इस कदर देखते रहना हर उस चीज़ को जो हमारी सतर्कता को कम करती है (जैसे दुनिया के आनंद में बहक जाना)। सामना करना एक मजबूत शब्द है जिसका अर्थ है विरोध करना। हम डर के छिपने वाले नहीं है , यह सोचते हुए कि वह हमे अकेला छोड़ देगा। प्रत्येक जन को अपनी लड़ाई लड़नी चाहिए , आप अपने माता-पिता , साथी , पादरी या मित्र को आप के लिए विरोधता में शैतान के सामने खड़ा होने की आशा नहीं कर सकते। द्रढ़ रहना मतलब है विश्वास में ठोस/ कठोर होना। यीशु ने प्रार्थना की कि जब शैतान हमला करे तो पतरस उसका सामना करेगा (लुका 22:32)। शैतान एक धमकाने वाले कि तरह हैं। जब वह या उसकी सेना किसी ऐसे व्यक्ति को देखती है जो उनके सामने हाथ खड़े कर देगा , तो वह उसे चारो और से दबाते हैं। दृढ़ता से खड़े रहना थोड़े समय के लिए लड़ाई मालूम होती है , लेकिन फिर वादा आता है कि वह भाग जायेगा। हमे साहसी होना चाहिए और भयभीत नहीं होना चाहिए , प्रभु में स्थिर रहना चाहिए (यहोशू 1:9,10:8 , 23:9-11, लैव्यवस्था 26:8 , निर्गमन 14:13, 1शमूएल 17:45-47 , 2 शमूएल 22:33-35 , 40-41) ।

क्योकि शैतान हमे अपने झूठ पर विश्वास करने के लिए काम करता हैं इसलिए हमे इस क्षेत्र में वास्तव में विरोध करना चाहिए और मजबूती से खड़ा होना चाहिए । यह जानकर कि आपके साथ शैतान कौन से झूठ के साथ सैर पर जायेगा जिसके लिए आप अच्छी तरह तैयार हो सकते हैं। यहाँ कुछ आम बाते हैं जिन्हे देखन चाहिए।

<u>प्रार्थना</u>

प्रार्थना शक्तिशाली हैं (यहुन्ना 14:13-14 , 15 :7 ,16 , मरकुस 11:24 , 11:22-24 , लुका 11:9-10 , 1यहुन्ना 5:14 , यिर्मयाह 33:3)। आपके प्रार्थना जीवन के छे भाग होने चाहिए , सभी बराबर विकसित यह हैं :

1.अपराध स्वीकृति (1यहुन्ना 1:9 , भजन सहिता 66:18, 51:1)। अपराध स्वीकृति का मतलब है कि परमेशवर के साथ इस बात पर सहमत होना कि जारी मुद्रा पाप हैं (एक गलती नहीं , किसी दूसरे का कसूर नहीं आदि)। पेज नं :15 से 17 में दी गई सूचि का इस्तेमाल इसमें मदद के लिए

करें। अपने अपराधों को स्वीकार करने के बाद परमेशवर कि माफ़ी प्राप्ति को सुनिश्चित करें (दानीऐल 9:9 ,19 , भजन संहित 130:4 , 86:5 , 78:30 , 99:8 ,103:3 , आमोस 7:2)। केवल; परमेशवर ही पाप क्षमा कर सकता हैं (मरकुस 2:7 11:25 , लुका 23:24 , 5:24 , मत्ती 6:14 , कुलिस्सियो 3:13)। परमेशवर पाप को अनदेखा नहीं करता , वह इसलिए माफ़ करता है क्योकि इसका भुगतान यीशु के खून के द्वारा सलीब पर किया गया था (इब्रानियों 9:22 ,इफिसियों 4:32 , 1:7 , 1पतरस 2:24 , 3:18 ,लुका 24:46-47 , कुलिस्सियो 1:14 , यहुन्ना 19:30)। क्षमा सब के लिए उपलब्ध हैं (यशायाह 53:6 , कुलिस्सियो 2:13 , रोमियो 8:1)। जब आप अपने पापो का इकरार करते हैं तो परमेशवर इन्हे माफ़ करता हैं। इसका मतलब यह है कि वह उन्हें मिटा देता है (यशायाह 43:25 , 1:18 , 44:22 , प्रेरितो के काम 3:19 , कुलिस्सियो 2:14 , भजन सहिता 32)। इनको अपने पीछे फेक देता हैं (ऐसी जगह पर जहाँ वह इसे दुबारा नहीं देख सकता - यशायाह 38:17, यिर्मयाह 31:34) , इन्हें भूल जाता है, इब्रनियो 8:12, 10:17, यशायाह 43:25 यिर्मयाह 31:34 उनको इस तरह से गायब कर देता है कि दुबारा नहीं मिल सकेंगे (यिर्मयाह 50:20) , और दोपहर में सुहब कि ओस की तरह खत्म करता हैं (यशायाह 44:22 , यहुन्ना 20:31, मत्ती 27 : 51) और इसको समुन्दर की गहराइयों में फेक देता हैं (मीका 7:19) , जो हमेशा हमेशा के लिए खत्म हो जायेगा (प्रकाशितवाक्य 21:1)।

2. प्रशंसा (भजन सहिता 34:1-3 , 48:1, इब्रानियों 13:15)। स्तुति से भाव हैं परमेशवर जो कुछ है उसके लिए उसकी महिमा करना। यह जो कुछ उसने किया है उसके लिए उसको धन्यवाद देने से अलग हैं। हम सभी अनंतकाल के लिए परमेशवर की प्रशंसा करेंगे ,इसलिए हमे अभी से शुरू करना चाहिए ! परमेशवर हमारी प्रशंसा से प्रसन्न होता हैं (भजन सहिता 22:3 , इब्रानियों 13:5)।

बाइबिल कहती हैं कि प्रशंसा में शक्ति है (भजन सहिता 22:3)। प्रशंसा शब्द या गीत से कि जा सकती हैं। सुनिश्चित करे कि आप एक मजबूत प्रशंसा जीवन का विकास करते हैं (फिलिप्पियों 4:4 , इब्रानियों 13:15)। निम्नलिखत पाठों को पढ़े और उनको अपनी प्रशंसा प्रार्थना में बदले : निर्गमन 15:1-2 , व्यवस्थाविवरण 10:21, 32 :3-4, 43 , 1शमूएल 2:1-2 , 2 शमूएल 22:4,50 , 1इतिहास 16:9 , 25,31,29:10-12 , 2 इतिहास 5:12-14 ,20:21-22 , 27 , भजन सहिता 8:1-2 ,9:1-3 ,31:21, 44:8, 40:16 , 47:1-3,68:3-4 , 72:18-19 , 86:12-13 , 104 :33, 108 :3, 117:1-2 , 119:108,175,138:1-4 ,142:7,149:1,3,6-9,150:1-6,यशायाह 25:1,9, 38:18-19,60:18 , दानिय्येल 2:20-23 , यिर्मयाह 20:13 , हबक्कूक 3:17-19 , जकर्याह 9:9 , लुका 1:46-47 , लुका 10:21,यूहन्ना 4:23,24 ,इफिसियों 1:3 , यहूदा 25 , प्रकाशितवाक्य 4:10-11,5:5 ,12-13 , 15:3-4।

3. धन्यवाद देना (भजन सहिता116:12, फिलिप्पियों 4:6 , 1थिस्सलुनीकियो 5:18)। धन्यवाद देने का मतलब हैं परमेशवर ने जो कुछ किया हैं ,जो कुछ कर रहा है और जो कुछ आपके जीवन में करेगा (और दूसरो के जीवन में भी) उसके लिए उसका शुक्र करना। हम सभी उन चीज़ो के लिए जो हम करते हैं, धन्यवाद दिया जाना पसंद करते हैं , और इसी तरह परमेशवर भी करता हैं। आपना धन्यवाद देने में विशिष्ट बने। याद रखे , सब कुछ उसी से आता हैं और हमारे भले के लिए हैं (रोमियो 8:28) इसलिए हमे हर चीज़ के लिए धन्यवाद देना चाहिए।

4. हिमायत (भजन सहिता28:9 , याकूब 5:14 -20 , 1तीमुथियुस 2:1-4 , 1शमूएल 12:23)। हिमायत से भाव है दूसरो के लिए प्रार्थना करना। अक्सर यह अच्छी बात हैं कि प्रार्थना अनुरोधों कि एक सूचि बनई पाए ताकि आप जिनके लिए प्रार्थना करते हो उन्हें याद रखे और साथ ही साथ आप प्रार्थना के उत्तर भी चिहिन्त कर सकते हैं। तब उत्तर के लिए परमेशवर का शुक्र करें। याद रखे कि परमेशवर हर प्रार्थना का उत्तर देता है। उत्तर भले इस तरह से हो सकता हैं , हाँ (अब) , प्रतीक्षा (बाद में) या नहीं (कभी नहीं)। प्रत्येक प्रार्थना को इनमें से एक उत्तर मिलता है। परमेशवर कुछ भी करने में संक्षम हैं , लेकिन वह हमेशा वह करने के लिए तैयार नहीं हैं जो हम सोचते हैं कि उसे हमे बाहर निकालने के लिए करना चाहिए (दानिय्येल 3:17)। इसलिए जब आप दूसरो के लिए प्रार्थना करते हो तो सब से पहले इसके लिए संवेदनशील हो जाओ कि परमेशवर आपको प्रार्थना के साथ स्वीकार करेगा बहुत जल्दी से समाधान तक न पहुँचो और उसको अपनी प्रार्थना बनए। परमेशवर के पास हो सकता दूसरा उपाय हो (जो हम से बेहतर हो)। परमेशवर के सामने प्रार्थना में रखो और उसको समस्या को प्रार्थना में रखो और उसको समाधान करने दो। जब आप उसको किसी चीज़ कि उसके तरीके से देखभाल करने कि अनुमति देंगे तब आप कि प्रार्थनो को अक्सर आप जल्दी उत्तर मिलता देखेंगे। अक्सर बजाय इसके कि वह किसी चीज़ को हटा दे वह इसे सहन करने को हमे अनुग्रह देता हैं (2 कुरिन्थियों 12:7-10)। दूसरो के लिए अपनी प्रार्थनो में इस विकल्प को शामिल करें।

<u>दूसरो के पापो का इकरार करना</u>

दूसरे व्यक्ति के लिए प्रार्थना करना महत्वपूर्ण हैं किसी अन्य व्यक्ति के पापो को स्वीकार करने से उन्हें दानवी उत्पीड़न से मुक्त करने में मदद मिल सकती है। पाप , विशेष रूप से कुछ पाप , एक व्यक्ति के जीवन में दानवो के काम करने के लिए एक दुवार खोलने जैसा होता हैं। यह पाप एक खुला निमंत्रण हो सकता हैं। उदाहरण के लिए डिप्रेशन (आत्म दया) , शैतान के लिए लगभग एक प्रार्थना हो सकती हैं क्योकि एक जन बहुत ही नकारात्मक हैं और हर चीज़ को बहुत ही आत्म - केंद्रित दृष्टिकोण से देखता है कि यह कैसे उस पर असर करती हैं। यह लगभग वैसा ही है जैसे वह इसमें दीवार बनाने का आनंद लेते हैं ,इसलिए दानव उनके दिमाग में विचार डाल कर उन्हें उसी दिशा में जाने को मदद करते हैं और व्यक्ति इन विचारो को स्वीकार करता हैं और इनको आपना भोजन बनाता हैं। जब वह व्यक्ति परमेशवर को बताता है कि वह यह दरवाजा खोलने के लिए अफसोस करता हैं और इसको एक पाप के रूप में कबूल करता हैं तो वह उसे माफ़ कर देता हैं और अब वह पाप व्यक्ति और परमेशवर के बीच सहभागिता के सामने ठोकर नहीं रहता। हलाकि दरवाजा अभी भी खुला है और दानव , जो बहुत ही तकनिकी प्राप्त कर सकते हैं और मिली हुई पहुंच को कभी छोड़ना नहीं चाहते हैं इसका उपयोग करना जारी रखेंगे। जब आप हालातो में प्रवेश करते हैं और सब पापो को यीशु के खून तले लाते हैं और यह धोषणा करते हैं कि शैतान अब इस पहुंच का इस्तेमाल नहीं कर सकता इस व्यक्ति तक पहुंचने के लिए इसका दरवाजा आप बंद कर रहे हैं। यदि व्यक्ति ने खुद उस पाप को कबूल नहीं किया हैं , जो अभी भी परमेशवर के साथ उसके रिश्ते को रोकता हैं , लेकिन उनके लिए हिमायत करके हम इसे धीमा या कम से कम (अस्थापि रूप से) आसुरी प्रभाव को रोक सकते है ताकि व्यक्ति उस प्रभाव से मुक्त हो सके और खुद परमेशवर की ओर मुड़ने में बहेतर संक्षम हो सके। अगर वह लगातार पाप करते हैं तो वह दरवाजा खोलते रहते हैं। आप बस इतना कर सकते हैं कि जब तक व्यक्ति खुद ऐसा नहीं करता , तब तक उसके

पापो को यीशु के खून तले डाल कर दरवाजे बंद करने कि कोशिश जारी रख सकते हैं या फिर यह जब तक स्पष्ट नहीं हो जाता , वह ऐसा नहीं करना कहते ओर न ही करेंगे।

5. याचिका (याकूब 4:2 , इब्रानियों 4:15-16 , यूहन्ना 15:7) याचिका का मतलब है परमेशवर से अपने लिए मांगना। यह वैध है हमे हमेशा अपने लिए प्रार्थना करनी चाहिए और कभी भी अपने लिए प्रार्थना करने में अयोग्य महसूस नहीं करना चाहिए। मैं बहुत कुछ जो ऊपर हिमायत के अतरंगत कहा हैं यहां पर उचित ठहराता हूँ। कुछ ऐसी चीज़े हैं जिनके बारे बाइबिल बताती हैं जो हमे माँगनी चाहिए, समझने वाला दिल (1राजा 3:7,9) दूसरे विश्वासियों से सहभागिता (फिलेमोन 4:6) क्षमा (भजन सहिता 25:11,18,20) मार्गदशन (भजन सहिता 25:4,5,27:11) पवित्रता (1थिस्सलुनीकियो 5:23) प्रेम (फिलिप्पियों 1:9-11) दया (भजन सहिता 6:1-6) समर्थ (इफिसियों 3:16) आध्यात्मिक विकास (इफिसियों 1:17-19) और परमेशवर कि इच्छा को जानना और करना (कुलुस्सियों 4:12) जैसे आप अपने लिए प्रार्थना करते हैं इसका दावा करने के लिए बाइबिल आयत को सोचे। परमेशवर वादा करता हैं कि वह हमे नहीं भूलेगा (यशायाह 49:15) न हमे असफल होने देगा (यहोश 1:5) हमे दिखाएगा कि क्या करना हैं (1शमूएल 16:3) हमारी सहायता करेगा (यशायाह 41:10) और हमें समर्थ देगा (2 यशायाह 41:10)।

यह रखे हमेशा समस्या को प्रार्थना में रखना चाहिए , समाधान नहीं। परमेशवर को खुद समाधान के साथ आने दो। अक्सर हम इसे भूल जाते हैं क्योकि वह हमारे उम्मीद किऐ गए तरिके से नहीं बल्कि अलग तरिके से जवाब देता हैं। वह परमेशवर हैं वह जिस तरीके से चाहे जवाब दे सकता है। आप केवल अंतिम परिणाम के बारे में सोचे। आप बढ़ रहे हैं और परमेशवर कि महिमा हो रही है। उसके लिए प्रार्थना करे कि परमेशवर कि महिमा हर हाल में हो।

6.सुनना (शमूएल 3:10 , इब्रानियों 1:1-2 , 3:15 , भजन सहिता62:5 , 46:10) अच्छा संचार एक दोतरफा सड़क हैं। कुछ पल रुके और परमेशवर को बात करता सुने। दिन भर आप ऐसा करे। आख़िरकार जो महत्वपूर्ण हैं यह कि आप अपनी बात परमेशवर से कहो और परमेशवर को अपनी बात आपको कहने दो। अपने आप में रहो, उसको आप के मन में विचार और भावनाऐ उत्पन करने दो जिनकी आपको आवश्यकता हैं। उसकी अगुवाई के प्रति सवेदनशील बनो। जैसे हर रिश्ते में होता हैं जितना आप एक व्यक्ति को जानते हो संचार उतना ही बेहतर होता हैं। अच्छा और गम्भीर संचार एक अजनबी से मुश्कल होता हैं परन्तु जब आप किसी व्यक्ति के साथ समय व्यतीत करते हैं तो उसे बेहतर सुन सकते हैं , और परमेशवर के साथ भी यही सच्च है। यह वह कला हैं जिसको विकसित होने से समय लगता हैं, परन्तु ऐसा तब तक नहीं होगा जब तक आप इस पर काम नहीं करते। इस महत्वपूर्ण कला पर महत्वपूर्ण जानकारी के लिए एपेंड़ेक्स 7,8,101-108 पेज पड़े।

आम हालातो में आध्यात्मिक युद्ध के लिए प्रार्थना

दयालु परमेशवर मैं इकरार करता हूँ कि आप ही सब महिमा, सम्मान और प्रशंसा को लेने के एकमात्र हक़दार हैं। मैं आपके पुत्र यीशु के द्वारा मेरे लिए सलीब पर किये गए विजय कार्य के लिए धनवादी हूँ। मैं उस विजय को अपने जीवन में लागु करता हूँ जैसे मैं अपने जीवन के हर क्षेत्र को बड़ी चाहत से आपकी इच्छा को समर्पित करता हूँ।

आपके आपनाये गए बच्चे कि सूरत में मुझे जो क्षमा और धार्मिकता मिली हैं मैं उस के लिए आपका धन्यवाद करता हूँ। मैं आपकी रोजमरा प्रावधान और सुरक्षा के लिए आपका धन्यवाद कात्या हूँ। मैं जानता हूँ कि मेरे लिए आपका प्रेम कभी ख़त्म नहीं होता। पिता मै आनंद करता हूँ कि आपने आकाशी प्रधानताओं पर विजय के लिए विश्वास में मैं आप की विजय में समर्पित खड़ा रहता हूँ और आज्ञाकारी का जीवन जीता हूँ मेरे राजा।

मैं ईशुक हूँ कि मेरी आपके साथ सहभाग्यिता बढ़े। मुझ पर वह बाते प्रगट करे जो आपको निराश करती और दुश्मन को मेरे जीवन में लाभ सुनश्चित करती हैं। मैं अपने जीवन में पवित्र आत्मा कि ताकतवर सेवकाई की जरूरत महसूस करता हूँ ताकि वह मुझे मेरे पाप के लिए दोषी ठहराए ,पश्चातापी दिल दे , मेरे विश्वास को मजबूत करे और आजमाइश के सामने मेरी द्धढ़ता जकी बढ़ाये।

मुझे खुद में मरकर नई रचना में जीवन जीने में मदद करे जो अपने मुझे प्रदान किया हैं। मेरे अंदर से आत्मा के फल बाहर निकलने दे ताकि आप मेरे जीवन के माध्यम से महिमा प्राप्त करें। मुझे आपने प्रेम , अनंद शन्ति , धीरज ,दया , भलाई ,बिनम्रति , वफादारी और आत्म - नियंत्रण सेभर दे।

कृपया मेरे , मेरे, परिवार ,मेरी ज्यादाद और मेरे बच्चो के लिए अपनी रक्षा का बढ़ा बांध दे। हमे उस हर गतविधि से सुर्क्षित रखे जो दुश्मन हमारे विरोध में करता हैं।

मैं जानता हूँ कि यह आपकी इच्छा हैं कि मैं अपनी खिलाफ शैतान कि हर गतविधि का सामना करने के लिए खड़ा रहूँ। मेरी भावनाओ और विचारो पर हमलो को पहचानने में मेरी मदद करें। मुझे शक्ति दे ताकि मैं अपने ऊपर आऐ हर दोष को ,निंदा को और विकृति का सामना कर सकूँ।

यह मेरी इच्छा है कि मैं अपने मन के नविनिकरण से रूपंत्रत हो जाऊँ ,ताकि मैं संसार कि राहो से हट कर रहूं या अपने आपको दुश्मन के हमलो के सामने कमजोर न हो जाऊँ बल्कि आपकी इच्छा को आज्ञाकारिता से मानता रहूं। इस लिए मुझे मसीह का मन दो ताकि मैं उस जैसा दृष्टिकोण , ज्ञान , करुणा , पवित्रता और सच्चाई रख सकूँ।

मैं उन आध्यात्मिक संसाधनों कि ओर आता हूँ जो आपने मुझे प्रदान किये हैं ओर मैं अपने खिलाफ शैतान के हर किले ओर योजनाओ पर हमला करता हूँ। मैं यीशु मसीही के नाम में आज्ञा देता हूँ कि दुश्मन मेरी भावना इच्छा , मन और देह को पूरी तरह छोड़ दे। वह प्रभु के साहमने अर्पण की गई हैं और आब मैं उसी का हूँ।

प्रभु मुझे शक्ति दे ताकि मैं व्ही बन सकूँ जो बनने के लिए अपने मुझे बनाया हैं। जैसे मैं प्रार्थना करता हूँ मुझे विश्वास में मजबूत बनने को सहायता करे मुझे दिखाए की मै आप के वचन को आपने रोजान जीवन में कैसे लागु करूँ।

मैं जानता हूँ कि जब मैं आपके वचनो के प्रति समर्पित होता हूँ और उसके आधार पर स्थिर रहता हूँ तो मैंने परमेशवर की कवच पहनी होती है। मैं चाहता हूँ कि मेरे जीवन में आपको सर्वउच स्थान हो। मुझे आपको बेहतर जानने आपका वचन पढ़ने और आपसे प्रार्थना करने और अपने विचारो में आपको पहला स्थान देने की भूख और प्यास दे।

परमेशवर मैं अपने आपको पूरी तरह से आपको आत्मसमर्पण करता हूँ। आप हमेशा भले हैं और आपना अनुग्रह मुझे पर और अधिक बढ़ाये , यहाँ तक की जब मुझे इसका अहसास भी नहीं होता। मैं आपकी क्षमा और शुद्दिकरण के वादे पर दावा करता हूँ। मैं विश्वास ही में उस विजय को प्राप्त करता हूँ जो आपने मेरे लिए पहले से ही तह कर दी हैं। मैं बड़े ही धन्यवाद भरे दिल से मेरे उदारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के नाम में यह कहता हूँ आमीन :
डान रोजर्स , आध्यात्मिक युद्ध सेवकाई वरिगरान P.A.

दूसरो की सहायता करना

जब आप एक बार उद्धार में शामिल हो जाते हैं तो आप यह देखना शुरू करते हैं कि यह कैसे आपके आस पास के लोगो की मदद करता हैं। अपने जो पाया है आप **दूसरे के साथ उसे पारित करना** चाहोगे। यह बहुत बढ़ी बात हैं। याद रखे इसमें आप का समय शक्ति और धैर्य लगता हैं (मरकुस 7:24 , 6:31, मत्ती 17:17) इसलिए पहले अपनी लागत को गिनो (मरकुस 3:8-15) आध्यात्मिक युद्ध में दूसरो कि मदद करते आप पर भी हमले हो सकते हैं, पर ऐसी बातो से मत डरो (मत्ती 10:24-27) अक्सर जो सब से बुरा आप अनुभव करेंगे वो हैं दूसरो से आपकी निंदा और अस्व्कृति विश्वासियों और गैर विश्वासियों से भी (मत्ती 9:32-34 , 10:24-27) इन से भी मत डरो (लुका 13:31-32)

सब से बड़ा खतरा जिसका आपको ख्याल रखना होगा यह है कि आप अपने विचारो में सोचने लगेंगे कि मैं कितना रूहानी हूँ और दानवो पर अधिकारी होने का **अभिमान** करने लगेंगे। दूसरे भी आप को बहुत रूहानी समझेंगे। यह ही सबसे बढ़ा खतरा हैं। यीशु ने यह साफ़ किया कि उद्धार लाना कोई आत्मिकता या उद्धार का चिन्ह नहीं हैं (मत्ती 7:21-23)

इस बात को ध्यान में रखे कि **दूसरे भी उद्धार लाते हैं पर अलग तरीके से**। मैं महसूस करता हूँ कि मैंने जो कुछ भी यहाँ लिखा हैं वही है जो परमेशवर मुझे चाहता था कि मैं लिखूं। हलाकि जो दूसरे ढंग से करते हैं मैं उनका न्याय करने वाला नहीं हूँ न ही उनको रद करता हूँ (मरकुस 9:38-40)

इस पुस्तिक में पेज 48-54 तक दी गई ईशारो का पालन करें।

जब आप ऐसे हालात में अपने आपको पाते हो जहां परमेशवर चाहता है कि आप उद्धार के बारे बात करें और प्रार्थना करे तो आगे बढ़े। **अपने कम ज्ञान और अनुभव के लिए मत चिंता करे** (यह शैतान कि तरफ से आप को चुप कराने का एक झूठ हैं) यह परमेशवर का काम हैं और वह आपको सही समय पर सही वचन देगा। इससे बुरा और कोई काम नहीं हैं कि चुप चाप बैठे रहो और शैतान को काम करने की अनुमति देते रहे। अपनी तरह से अच्छा करें ,हर कदम पर परमेशवर पर भरोसा करते हुए। यहा पर कुछ गलत या सही नहीं है कोई जादूई फ़ारमुला नहीं हैं। परमेशवर महान हैं इसलिए परमेशवर की शक्ति को शैतान के खिलाफ बुलाओ।

हलाकि सावधान रहने वाली एक चीज़ हैं , वह हैं आपका समय और इसका कार्यक्रम। आप अपने आपको कभी भी किसी के लिए एक बैसाखी बनने की अनुमति मत दे, क्योकि यह उनकी मदद नहीं है। उनको अपने आपसे जल्दी अलग कर परमेशवर के साथ जोड़े। जिस किसी के लिए आप सेवकाई कर रहे हैं, उससे बहुत ज्यादा मत घुलो मिलो। यह आपको खाली करने का जरिया और उनको आपसे अलग करना मुश्किल हो जाऐगा। शुरुआत में आपको अच्छा लगेगा कि आप किसी की जरूरत हैं परन्तु वास्तव में यह आप नहीं, परमेशवर उनकी जरूरत हैं।

उद्धार के लिए प्रार्थना करते समय हमेशा बड़ी तस्वीर पर विचार करे। उद्धार का संतुलना बना कर रखे। क्या उन्हें किसी काउंसलर की जरूरत है ? क्या किसी डॉक्टर से मदद मिल सकती हैं ? कही ऐसा तो नहीं कि वह आपको पूरी बात नहीं बता रहे और केवल उतना ही जितना आप जान सकते हैं ? क्या वह वास्तव में आजाद होना चाहते हैं या केवल आपका ध्यान खींचना चाहते हैं ? क्या उनका कोई ऐसा पाप हैं जिससे वह छुटकारा पाना ही नहीं चाहते ?

<u>दूसरो कि सहायता करने में हमारी भूमिका (परमेशवर क्या उम्मीद करता हैं?)</u>

मैं अपने आपको (फुटबाल) में कवाटरबैक के रूप में देखता हूँ जो अपने प्राप्त कर्ताओं की तरफ पास फेकता हैं। कवाटरबैक को बहुत ही अच्छे ढंग से पास फेकना चाहिए , एक सुन्दर सीधा और सकरा घूमता हुआ ,अपने प्राप्तकर्ता कि तरफ। परन्तु एक बार कवाटरबैक के हाथ से पास निकल गया तो फिर उसके वश में कुछ नहीं रहता, चाहे बाल पकड़ी जाये या गिर जाये। कुछ प्राप्तकर्ता अच्छे से अच्छे पास को भी गिरा देते हैं जबकि कुछ बुरे से बुरे फेकने को भी अपने हाथो में प्राप्त कर लेते हैं । मुझे परिणामो का बहुत ख़याल रहता फिर मैं अहसास करता हूँ कि यह मेरे वश में नहीं हैं। अब मेरे दिल में किसी हद तक रूखापन होना चाहिए,नहीं तो मैं बहुत जल्दी खत्म हो जा सकता हूँ। मैं परमेशवर कि मदद से अच्छी सलाह देता हूँ और जानता हूँ कि परमेशवर मुझे इसके लिए जिम्मेदार ठहराएंगे , परन्तु वो मुझे एक अच्छा पास फेकने के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराएगा। यह पकड़ा जाता है है नहीं यह मेरा काम नहीं हैं परन्तु यह व्यक्ति और परमेशवर के बीच की बात हैं। अधिक समय मुझे नहीं पता होता कि क्या यह पकड़ा गया है या नहीं मैं बस फेकता रहता हूँ। और जितना कोई अभ्यास करता हैं उतना ही वह कुशल होता हैं। मैं उन लोगो कि सूची बनाकर रखता हूँ जो मुझे लिखते हैं मैं उनको और वो फिर मुझे। हजारो हजार नाम हैं जिनका कम से कम दो दो ईमेल तो आये हैं। कुछ के साथ तो मैं वर्षो से संपर्क में हूँ। वह मेरी मुख्य समूह बन गए हैं जिनको मैं प्रार्थना निवेदन भेजता हूँ खासकर अपने भारत यात्रा के लिए। यह वह हैं जिनको मै प्रार्थना करने के लिए बोलता हूँ जब अधिक जरूरत होती हैं। वह मेरे साथ बने रहते हैं और कभी कभी कई महीनो तक हम एक दूसरे को लिखते है जब कभी हालात ठीक नहीं होते। यीशु ने लाखो से बातचीत की, हजारो ने उसे पसंद किया परन्तु केवल बारह लोगो ने आपना सब कुछ छोड़ दिया उसके पीछे चलने को (और उनमें से भी एक धूम गया) तीन उसके नजदीकी समूह हो गए और एक उसका विशेष मित्र बन गया (यूहन्ना) और यह ऐसा चलता हैं। बीज और बोनेवालो के दृष्टांत में बताता

हैं कि बुए गए बीज में से केवल चौथा हिस्सा ही उगता हैं। इसलिए अगर यीशु के साथ यह था तो मैं इससे बेहतर कि उम्मीद नहीं कर सकता। एक सबसे अहम सच यह है की मै सेवक हूँ और यीशु उम्मीद करता हैं कि मैं वफादार रहूँ। वह गिन्ती (संख्या) पर ध्यान नहीं देता।

मैं सब से अच्छा पास फेक सकता हूँ और फिर उसके लिए प्रार्थना करता हूँ। कठोरता के उस भाग के लिए जो आत्मसुरक्षा के लिए लोगो को सेवकाई में चाहिए जिसका उन्हें ध्यान देना चाहिए। अब जब यह एक व्यक्ति हैं जिसे मैं अच्छी तरह जानता हूँ।, एक बहुत ही बुरा समय , जब कई रिश्तेदार हो तो यह मुझ पर अधिक भरी पड़ता हैं। परन्तु यह मुझे प्रार्थना में अधिक वफादार होने के लिए विविश करता हैं। यहा तक कि यीशु के लिए भी यहूदा था।

<u>संघर्ष कर रहे लोगो कि सहायता के लिए आप क्या कर सकते हैं ?</u>

प्रार्थना:उनके लिए नियमत रूप से प्रार्थना करें। विश्वासी के रूप में अपने अधिकार का उपयोग करें। उन्हें बिनशर्ता प्रेम करे और उन्हें इस का अहसास होने दो ,बिनशर्ता प्रेम परमेशवर के प्रेम को दर्शाता हैं। यह करना अति महत्वपूर्ण हैं।

रक्षा: अगर आप सक्षम हैं तो उन्हें बेसमझी के फैसले से रोको। उनको दूसरो से बचाये और उनके खुद से भी।

उमीदे काम करो: उनसे अपनी उम्मीद को कम करें। उनको समझने का बढ़ने का और कार्य करने का समय दे। उनके साथ उतना धैर्य बरते जितना परमेशवर ने आप के साथ बरता हैं। उनको बच्चे बनकर मत रखो या हर हालात से बाहर निकालने कि क्रिया न करे उनको ऐसा देखो जैसे वह है और परमेशवर को अपने ढंग से उनके लिए काम करने दो।

<u>समाप्ति में</u>

यदि आप इस पुस्तिका से उस सतर पर आ चुके हैं तो अपनी लड़ाई जीतने कि कला सीखने के लिए संभीर हो जाऐ । परमेशवर आपको आशीष देवे , बस अपने आप के साथ धैर्य बरते कोई भी रातो रात एक अनुभवी और उच्च लड़ाकु नहीं बन जाता। इसमें समय लगता हैं। इसमें अब्यास की जरूरत होती है और इस में असफलताए भी आती हैं। इसी तरह हम सब सीखते हैं। मसीहहीयों के लिए हमारी कोई भी असफलता घातक या अंतिम नहीं हैं, विजय मिलेगी इस जीवन में और अगले जीवन में भी।

मैंने जब पहली बात खरगोश और कछुए कि कहानी सुनी मैं बच्चा ही था , मुझे उसमें कुछ समझ कि बात मिली जिस पर मैंने विकास किया और उस कहानी ने मुझे इस कदर विविश किया कि मैं जो कुछ हूँ , और बन गया। मैं यह आपको देना चाहता हूँ। दृढ़ बनो छोड़े नहीं। आपको कोई जल्दी नहीं करनी हैं। आप शाईद जल्दी जल्दी चलेंगे भी नहीं। परन्तु इसे आपके लिए परेशानी का कारण न बनने दे। धीमा और सिधर यह होता हैं। परमेशवर के प्रति वफादार रहे। उस पर अपनी आंखे लगाए रखे , शैतान पर या उसकी सेना पर नहीं। वचन और प्रार्थना में रोज समय व्यतीत करें। जो लड़ाई लड़नी पड़ती हैं लड़े।

न तो छोड़े न भागे और न ही इसके सामने झुके। जब आप कोई लड़ाई हार जाते हैं (हम सभी हारते हैं)उस समय उठो और चलते रहो याद रखो की दौर तेजी की नहीं बल्कि चलते रहने वालो की है।

आप के सामने एक दौड़ है इसे मसीही जीवन कहते हैं। परमेशवर ने अंत तक हमारी मदद करने के लिए जो उपकरण दिया है वो है आधयाअत्मिकयुद्ध। प्रर्थना, आराधना, सुसमाचार का परचार करना, दूसरो की सहायता करना, वचन को सीखना और बहुत उपकरण हैं जो उस ने हमें दियें हैं। आपने सभी उपकरणों को तेज करें और जरूरत पर सही का इस्तेमाल करें। परन्तु जब कार्य आध्यात्मिक युद्ध हो तो सुनिश्त करे की आप अपनी क्षमता के अनुसार सही हथियार का उपयोग करते हैं। युद्ध आप के हथियारों को अगले युद्ध के लिए तेज करता है।

यह मेरी प्रर्थना है कि जिस ने आप को बुलाया है और जो आप को आपने पुत्र की छवि के रूप मे बनाने के लिए काम करता है, उसके के सामने वफादार पाया जाऐ।

मुझे आप से सुनना अच्छा लगेगा यदि आप का कोई प्रशन है, कोई टिप्णी है, कोई सुजाव है, कोई अनुबव है या कुछ और आप मुझे लिखना चाहते हैं, मुझे सचमुच में इस का आनंद होगा, मैं ने जो अनुभव किया है वो लिखा है। मै इस समय 61 वर्ष का हूँ और डोलीस्टोन में बैप्टिस्ट चर्च का पादरी हूँ। मेरी शिक्षा शिक्षा में Th.M और D.Min डालस थिओलॉजिकल सेमिनरी से शामिल है। मेरी ऑनलाइन आध्यात्मिक युद्ध सुचन एन काउंसलिंग वेबसाइट हैं , अगर मैं आपकी इस तरह से सहायता कर सकता हूँ , तो आप मेरे साथ संपर्क साध सकते हैं। jerry@schmoyer.net

काश परमेशवर आपको आशीष देवे और अपने राज्य के लिए इस्तेमाल करे। अगर हम इस जीवन में नहीं तो स्वर्ग में मिलेंगे उस विजय कि जो हमारे प्रभु यीशु मसीह ने हमे दिलाई हैं उसकी कहानियों को एक दूसरे के साथ साझा करेंगे।

यदि आपके पास कोई प्रशन हैं , टिपणो हैं सुझाव हैं , गवाही हैं और कुछ अन्य जिसके बारे में आप मेरे साथ संपर्क साधना कहते हैं तो बड़ी स्वंत्रत भावन से मुझे लिखे ; jerry@schmoyer.net

परिशिष्ट 1

<u>मैं कैसे सुनिश्चित करूँ कि मैं मसीही हूँ ?</u>

जब कोई बच्चा जन्म लेता हैं तो हर कोई जल्दी से यह देखता है कि यह जीवत और स्वस्थ हैं। कुछ चिन्ह होते हैं जो दर्शाते हैं कि जीवन हैं : शारीरक हिलजुल , रोना और नबज आदि। आत्मिक रूप से भी यही सच्चाई हैं। यहाँ पर कुछ आत्मिक चिन्ह भी है जो यह दर्शाते हैं कि हम परमेशवर के परिवार में जन्म ले चुके हैं। 1 यहुना इन में से 5 भी सूची बनता हैं।

1. <u>यीशु में विश्वास करना कि वह प्रभु और आधारकर्ता हैं।</u>

1यूहन्ना 5:1 हर एक जो यह विश्वास करता हैं कि यीशु ही मसीह हैं वह परमेशवर से जन्मा हैं और हर एक जो पिता से प्रेम करता हैं उसके पुत्र से प्रेम करता है। आध्यत्मिक जीवन का चिन्ह हैं कि

यीशु परमेशवर हैं और उद्धारकर्ता है और वही मुक्ति देता है , यह न तो कुछ ऐसा है जिसे हम करते हैं या जिसके हम हक़दार हैं।

2. <u>जीवन में पाप पर ग़ालिब आन</u>

1यूहन्ना 5:18 हम जानते हैं कि जो कोई परमेशवर से जन्मा है वभा पाप नहीं करता रहता , जो परमेशवर से पैदा हुआ है वह अपने आपको पाप से बचाये रखता हैं और दुष्ट उसका कोई नुकसान नहीं कर सकता। नये जन्म के साथ पाप के प्रति नया व्यवहार आता हैं। हमें तब पता चल जाता हैं कि यह गलत हैं और हमे इसे रोकने कि मजबूत इच्छा होती हैं। जब कि हम कुछ पापों से संगर्ष करते हैं, धार्मिकता में धीमे परन्तु सिथर विकास होना चाहिए। धीरे-धीरे हम अपनी सोच और कामो में यीशु जैसे बन जाते हैं।

3. <u>वह करना जो परमेशवर को भावता है।</u>

1यूहन्ना 2:29 यदि आप जानते हैं कि वह धर्मी हैं तो हर एक जो धर्म करता हैं उससे जन्मा है। एक बच्चा जन्म लेते ही नहीं जानता कि जीवन में कैसे रहना है और ना ही हम जब हम आध्यात्मिकता में जन्म लेते हैं। यह सीखने कि प्रक्रिया हैं । इसे विकास चाहिए। विकास जीवन का चिन्ह हैं। परमेशवर कहता हैं जो आत्मा में जीवत हैं वह आत्मा में विकास करेंगे और प्रभु यीशु मसीह मुक्तिदाता के अनुग्रहि और ज्ञान में बढ़ेंगे। 2 पतरस 3:18 । भाईयो मैं तुम्हे आत्मिक रीती से नहीं बल्कि सांसारिक रीती से बोलता हूँ, मसीह में मासूम बालको कि तरह। तुम्हे दूध दिया हैं, ठोस भोजन नहीं दिया क्योकि तुम अभी इसके योग्य नहीं थे। वास्तब में तुम अभी भी इसके लिए तैयार नहीं हो। तुम अभी भी सांसारिक हो। जैसे कि तुम्हारे भीतर आज भी लड़ाई झगड़े होते हैं, क्या तुम अभी भी सांसारिक नहीं हो ? क्या तुम अभी भी आम लोगो कि तरह नहीं करते ? 1 कुरिन्थियों 3:1-3

4. <u>दूसरे विश्वासियों के लिए प्रेम</u>

1यूहन्ना 3:14 हम जानते हैं कि हमने जीवन के लिए मौत को पार कर लिया हैं, क्योकि हम अपने भाईयो से प्रेम करते हैं। तो कोई प्रेम नहीं करता वह मृत में हैं। जो परमेशवर के परिवार में हैं उनके बीच एक सुभाविक बंधन होगा। हमारे पास आम जीवन में महत्वपूर्ण चीज़े है। आम तौर पर तुरंत तालमेल होता है । हमे अन्य मसीहियों के साथ समय बिताने और उनके बारे जानने की इच्छा होती हैं। यह एक ख़ुशी और प्रोत्साहन हैं क्योकि हम इसके लिए तैयार हैं।

5. <u>संसारिक रीतीयो पर विजय।</u>

1यूहन्ना 5:4 , क्योकि हर एक जो परमेशवर से जन्मा हैं संसार पर विजय होता हैं यह वह विजय है जिसने संसार पर विजय प्राप्त की अर्थात हमारा विश्वास। जबकि पाप पर विजय धीमी गति से आती हैं, मसीही होते हुए हम जानते हैं कि हमारे अंदर एक शक्ति हैं जो उसकी तुलना में अधिक बढ़ी हैं जो संसार में हैं और हम इसका अनुभव कर सकते हैं कि परमेशवर हमे उन बातो पर विजय दिलाता हैं जो कभी हमे हरा देती थी।

परिशिष्ट 2

मैं कैसे सुनश्चित करूँ कि मैं अभी भी मसीह हूँ ?

जब पहले जन्मे बच्चे बीमारी और कमजोरी के लिए अति संवेदनशील होते हैं उन्हें इससे बचाना चाहिए। वह बहुत कमजोर होते हैं। जब तक वह बड़े नहीं होते और ताकतवर नहीं बन जाते वह एक खतरे में रहते हैं जिससे लड़ना बाद में मुश्किल नहीं होगा। जब कोई नया विश्वास में आता हैं तो उसके सामने एक खतरा होता हैं ,वह संदेह करता हैं कि कही उसका उद्धार खो तो नहीं गया। इसलिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण हैं कि जवान मसीही भय और डर के रोगो से सुरक्षित हैं। शैतान उद्धार को नहीं छीन सकता लेकिन वह उद्धार से आई शांति को छीनने की कोशिश करता इन रास्तो से।

संदेह का रोग यह कोई खास बा नत हीं हैं कि शैतान किसी व्यक्ति के मन में संदेह डाल दे जब कोई जन मसीही बनता हैं। क्या इसने काम किया ? क्या उन्होंने इसे सही किया ? यह पूरा करने करने कोई जरूरत नहीं हैं और न ही यह कुछ गलत किया जाने के लिए हैं। मुक्ति केवल दिल का एक अहसास है कि यीशु परमेशवर हैं जिसने पापो का सारा दाम सलीब पर भुगतान कर दिया। अगर आप विश्वास करते हैं कि आप बचाए गये हैं ।

रोमियो 3:28 और हम यह मानते हैं कि विस्थ्था को मानने के साथ साथ मनुष केवल विश्वास ही से धर्मी ठहरता हैं।

यूहन्ना 3:16 क्योकि परमेशवर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने आपना एकमात्र पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न होकर अनंत जीवन प्राप्त करे।

इफिसियों 2:8-9 क्योकि यह अनुग्रहि हैं जिससे तुम बचाये गये हो , विश्वास करने के द्वारा -और यह तुम्हारी ओर से नहीं परन्तु परमेशवर का मुफ्त उपहार हैं ,यह तुम्हारे कामो के बदले में नहीं कि कोई अभिमान करने लेगें।

यदि आपको याद नहीं हैं कि कब आपने यीशु को मुक्तिदाता के रूप में स्वीकार किया हैं और इस कारण आप अश्चार्य हैं तो अभी प्रार्थना करें और आपने पापों की क्षमा मांगे और जीवन जीना शुरू करे। आप जान लेंगे कि उसने आप के लिए यह कर दिया हैं और आप को कभी भी इसके लिए अश्चार्य नहीं होगा और न ही कोई चिंता। आज की तारीख और समय लिखले जिसे आप कभी भी देख सकते हैं और इसे याद रख सकते हैं कि अपने कब उस पर विश्वास किया।

भय का रोग

यदि किसी व्यक्ति पर उनका अपनी मुक्ति पर संदेह करना काम नहीं करता तो शैतान उन्हें यह सोचने और विश्वास करने को कहने कि कोशिश करेगा कि वह आपना उद्धार खो बैठे हैं। और इस बात से आपकी शांति और ख़ुशी खत्म हो जाएगी और इसकी जगह भय आ जायेगा। यह यकीन करते ही कि

आपका उद्धार खो सकता हैं ,आप वह सब कुछ करने की कोशिश करेंगे जिससे यह न खो जाये । इस तरह बजाए इसके की उस पर ध्यान दिया जाऐ जो मसीह ने अशवासन और सुरक्षा में किया हैं एक मसीह जीवन के रूप में आप आपना सारा ध्यान इस पर लगाने लगेंगे कि क्या करना और क्या नहीं करना हैं। ईस बात का डर कि क्या करने से आपका उद्धार खो जायेगा आपके मसीह जीवन में अधिक केंद्रत्रिता का विषय बन जायेगा। यदि परिवार का हर जन इस डर से जीने लगे कि अगर उसने दूसरे के प्रति अच्छा व्यवहार न किया तो घर से निकाल दिया जायेगा तो एक परिवार कैसे चल सकता हैं ?

परमेशवर चाहता हैं कि हम सुनिश्चित करें कि ऐसा कुछ नहीं हैं जो हम करे और आपना उद्धार खो बैठे। वह चाहता हैं कि हम उसके प्रेम पर सवर्दा भरोसा रखे। वह चाहता है कि हम प्रेम से उसकी सेवा करे न कि इस डर से कि वह हमे नर्क में भेज देगा।

हम विस्थ्था नहीं बल्कि अनुग्रहि के अधीन हैं। इस हम किसी भी तरह से आपना उद्धार नहीं खो सकते। रोमियो 6:14 क्योकि अब पाप आपका स्वामी नहीं होगा क्योकि शरह नहीं बल्कि अनुग्रहि के अधीन हो।

परमेशवर वफादार हैं अपने वादों के प्रति हमे बचाने को परमेशवर वफादार है यदि हम यकीन करे। यहाँ एक कि अगर हम बेवफा भी हो जाये तो भी वह अपने वादे पुरे करता हैं। (2 तीमुथियुस 2:11-13) यहाँ पर एक विश्वास योग्य कथन हैं : अगर हम उसके साथ मरेंगे तो उसके संग जियेंगे भी अगर हम सहन करेंगे तो हम उसके साथ राज करेगे ,अगर हम उसका इंकार करेंगे तो वह भी हमारा इंकार करेगा ,अगर हम विश्वास हीन हो जाये तो भी वह विश्वास योग्य रहेगा। क्योकि वह अपने आपको त्याग नहीं सकता।

परमेशवर हमे सुरक्षत रखता हैं।

जब हम कमजोर और लड़खड़ा रहे होते हैं। जब हम पाप और बहकते हैं तो वह हमे एक तरह नहीं फेकता। मत्ती 12:20 एक कठोर सरकंडा वह नहीं तोड़ेगा ,एक सुलगती हुई बती वह बाहर नहीं झाड़ेगा जब तक वह न्याय को विजय तक न ले जाये। भजन सहिता 37:24 चाहे वह ठोकर खाये पर गिरेगा नहीं क्योकि प्रभु उसे अपने हाथ से सभालता हैं।

परमेशवर हमारे पापो को हमारे खिलाफ नहीं लाएगा।

क्योकि उन सब का भुगताव सलीब पर कर दिया गया था। इसलिए अब कोई पाप नहीं जिसके लिए हम से कीमत मांगी जाएगी। रोमियो 4:6-8 दाउद भी यही बात कहता हैं जब वह उस व्यक्ति के बारे बात करता है जिसे परमेशवर उसके कामो के अलावा उसकी आशीष भरे जीवन कि बात करता हैं। धन्य हैं वह जिनके पाप क्षमा हुए है और जिनके अपराध ढाप दिये गए हैं, धन्य है वह व्यक्ति जिसके अपराध प्रभु नहीं गिनेगा।

कुछ भी ऐसा नहीं है जो हमारे और परमेशवर के बीच आ सकता हैं।, हम भी नहीं। यूहन्ना 10:20-29 मैं उन अनंत जीवन देता हूँ और वो कभी नाश नहीं होंगे : उनको कोई मेरे हाथ से नहीं छीन सकता। मेरा

पिता जिसने उनको मुझे दिया हैं सब से बड़ा हैं , कोई उनको मेरे हाथ से नहीं छीन सकता। रोमिय 8:37-39 इन सब बातो में, हम उस में, जिसने हमे प्रेम किया हैं , एक विजेता हैं। क्योकि मुझे यकीन हैं कि न जीवन , न मृत्यु , न स्वर्गदूत और न दानव , न उचाई न गहराई, न वर्तमान और न भविष्य , न तकते कोई भी वसतु जी सृष्टि में हैं हमे परमेशवर के प्रेम के जो प्रभु यीशु मसीह में हैं उससे दूर कर सकता हैं।

इसलिए जब कभी भी आप इनमें से किसी भी बीमारी तुम को ठोकर मारे तो ख़ुशी करो कियोकी तुम्हारे पास ना तो उद्धार पर संदेह का कोई करण है और ना ही उद्धार खोने का कारण है।

परिशिष्ट -3

<u>सामयिक सूचकांक</u>

<u>गर्भपात एक हत्या हैं</u> : निर्गमन 21:22-25 , भजन सहिता 139:13-15 , रोमियो 14:22-23 ,यिर्मयाह 1:5 ,उत्पत्ति 2:7 , 9: 6 ,

विरोधी हार जायेगा : व्यवस्थाविवरण 32:43 , फिलिप्पियों 1:28 , व्यवस्थाविवरण 33:27 ,

वादा किया हुआ स्वर्गदूतो का हस्तक्षेप : 2 राजा 6:17 , भजन सहिता 34:6-7 , 91:11, दानिय्येल 6:22 ,10:5-14 , प्रेरितो के काम 12:15 ,

स्वर्गदूत, रचना : कुलुस्सियों 1:16 , अय्यूब 38:6-7 , यहूदा 6 , इब्रानियों 12:11,

स्वर्गदूत , आज विश्वासियों के लिए सेवकाई : इब्रानियों 1:14 , प्रेरितो के काम 12:7, 27:23-24 , 1कुरिन्थियों 4:9 , 1तीमुथियुस 5:21, लूका 15:10 , 16:22 , प्रेरितो के काम 8:26 , यहूदा 9 ,

स्वर्गदूत , प्रकृति : इब्रानियों 1:14 , मरकुस 12:25 , लूका 20 :36 , भजन सहिता 8:4-5 , 2 पतरस 2:11,

मृत्यु के बाद होने वाला विनाश नहीं होगा : मत्ती 17:1-3 , 22:32 , यूहन्ना 11:25, उत्पत्ति 35:18 , 2 कुरिन्थियों 5:8 , फिलिप्पियों 1:21-23 , यूहन्ना 3:36 , लूका 23:43 ,।

उद्धार का आशवासन : यूहन्ना 3:16 , 5:24 , 6:37-44 , 10:28-29 , रोमियो 8:1, 29-39 , इफिसियों 1:13-14 , कुलुस्सियों 1:12-14 , 1पतरस 1:3-4 , 1यूहन्ना 2:1-2, 5:13 ,।

हमारे विरोधियो पर अंतिम विजय का आशवासन : प्रेरितो के काम 2:39 , ।

पाप के लिए प्रायशिचत्त : निर्गमन 12:13 , मत्ती 26:28 , 28:5-7 , लूका 24:39 , युहन्ना 1:29, 19:33 , रोमियो 5:6-8 , इफिसियों 1:7 , कुलुस्सियों 1:20,।

विश्वास , इसका का क्या मतलब हैं ? इफिसियों 2:8-9।, यूहन्ना 1:12 , 1कुरिन्थियों 15:1, कुलुस्सियों 2:6 , 2 थिस्सलुनीकियों 2:10 ,।

बाइबिल , इसका अध्यन करने का महत्व : लूका 6:40 , यूहन्ना 5:39 , प्रेरितो के काम 20:32 , इफिसियों 6:17 , 2 तीमुथियुस 2:15 , याकूब 1:21-22 , 1पतरस 2:2 , 2 पतरस 1:2 ,।

बाइबिल , परमेशवर का प्रेरित वचन : 2 तीमुथियुस 3:16 , 2 पतरस 1:19-20 , 1कुरिन्थियों 2:13 , 2 पतरस 3:15 , इब्रानियों 1:1, 2:3 , 4:12 , 1पतरस 1:10-12 ,25 , 2 शमूएल 23:1-2 , मत्ती 24:35 , यूहन्ना 10:35 , 17:17 ,।

बाइबिल , भरोसेमंद और विश्वासनीय : यूहन्ना 19:35 , 1:1, 2 पतरस 1:16 , लूका 1:1-4 , प्रेरितो के काम 2:22 ,।

वादा की गई तस्ल्ली : भजन सहिता 23:4 , विलाप 3:22-23 , मत्ती 5:4 ,11:28-30 , यूहन्ना 14;16 ,18, रोमियो 15:4 , 2 कुरिन्थियों 1:3-4 , 2 थिस्सलुनीकियो 2:16-17 ।

पाप - स्वीकरण मतलब सफाई और क्षमा : 1यूहन्ना 1:8-9 , 1थिस्सलुनीकियो 5:23-24 , 1तीमुथियुस 4:5 , लूका 11:13 , 2 तीमुथियुस 2:21, यहूदा 1, रोमियो 8:33-39 , तीतुस 3:4-5 ,।

विवेक -परमेशवर द्वारा उपयोग किये गया **:** प्रेरितो के काम 24:16 , रोमियो 14:14 ,23, 2 तीमुथियुस 1:5 ,तीतुस 1:15 , मत्ती 6:22-23 , रोमियो 1:14-15 , 9:1, 1कुरिन्थियों 10:27-29 ,।

वादा किया हुआ साहस : नीतिवचन 38:1, 1कुरिन्थियों 16:13 , 2 तीमुथियुस 1:7 ,।

सृष्टि परमेशवर के द्वारा हैं : उत्पत्ति 1:1,26-27 , नहेमायाह 9:6 , भजन सहिता 24:1,8:3 , निर्गमन 20:11, 1शमूएल 2:8 ,भजन सहिता 33:6 , 146:6 , यशायाह 40:12 , यिर्मयाह 51:15 , प्रेरितो के काम 14:15 , इफिसियों 3:9 ,।

सृष्टि परमेशवर को दिखाती हैं : रोमियो 1:19-20 , भजन सहिता19:1-2 ,।

मृत्यु जिसका विश्वासियों पर कोई भय नहीं : भजन सहिता23:4 , 49:15 , 116,15, यूहन्ना 14:1-3 , 6,-19,27 ,

दानवो की गतिविधि : दानिय्येल 10:10-14 , प्रकाशितवाक्य 16:13-16 ,12:3-4, इफिसियों 6:11-12 , मत्ती 4:24,9:33, लूका 3:11, 16, मरकुस 5:13 , कुलुस्सियों 2:15, 1तीमुथियुस 4 ,।

दानव पकड़ और छुटकारा : मत्ती 4:1-11,17:19-21,18:20,28:18-20 , मरकुस 5:9 , लूका 8:30 , 10:17 , 18:1यूहन्ना 14:14, 15:17 , इफिसियों 5:18-20 ,6:10-18 , कुलुस्सियों 1:20 ,3:16-17 , 2 तीमुथियुस 3:16-17 , इब्रानियों 4:12 , याकूब 6:14-16 ,1यहुन्ना 1:9,4:1-8 ,

तनाव , हारे हुए : भजन सहिता 42:11, यशायाह 26:3 , फिलिप्पियों 2:5,4:8 , निहमिया 8:10-11, भजन सहिता51:12 , 1पतरस 5:7 , यशायाह 26:3

दूसरो पर दोष मत लगाओ :रोमियो 14:3-13,2:1-6, 1कुरिन्थियों 2:14-15 , 4:5, लेकिन मल्याकन करे : मत्ती 18:15 -18,6:2,5,16,7:1-12,16-17 , 1कुरिन्थियों 5:12-13 , यूहन्ना 7:24, लूका 12:57 ,

अन्नंत जीवन : मरकुस 12:25,लूका 16:19-31, यूहन्ना 11:25-26 , 1थिस्सलुनीकियो 4:16-18 , याकूब 2:26 , 1यूहन्ना 5:11-13 ,

हर चीज़ अंत में सही साबित होगी : रोमियो 8:28 ,

बुराई और पीड़ा क्यों हैं ; यूहन्ना 9:1-3 , 2 पतरस 3:9 , प्रकाशितवाक्य 21:1-8 , रोमियो 8:28 ,।

विश्वास , इसका क्या अर्थ है : भजन सहिता118:8, नीतिवचन 3:5 , यशायाह 26:3 , मरकुस 11:22 , यूहन्ना 3:16-17 , रोमियो 5:1, 4:3-5 , गलतियों 2:16 , इफिसियों 2:8-9 ,।

झूठे शिक्षिक : मत्ती 7:13-27 , यिर्मयाह 23:16, 32 , विव्स्थाविव्रण 18:20-22, मति 24:4-5,11,24, 2 पतरस 2:1-3 ,।

विश्वासियों के लिए मृत्यु का भय जा चूका है : भजन सहिता 23:4,49:15,116:15, यूहन्ना 14:1-3,6-19,27 ,।

डर , दावा करने का वादा : नीतिवचन 3:25 , यशायाह 14:3 , भजन सहिता 34:4 , यहोशू 1:9,10:8, 23:9-11, लैवेवेस्था 26:8, निर्गमन 14:13 , 1शमूएल 17:45-47 , 2 शमूएल 22:33-35 , 40-41,

डर , विश्वासी को किसी चीज़ का डर नहीं : नीतिवचन 3:25 , यशायाह 14:3 , भजन सहिता 34:4 , यहोशू 1:9 ,10:8,23:9-11, लैव्यवस्था 26:8 , निर्गमन 14:13 , 1शमूएल 17:45 -47 , 2 शमूएल 22:33-35,40-41

परमेशवर से क्षमा प्राप्त करना : 1यूहन्ना 1:9 भजन सहिता19:12,139:23-24,32:1-5 ,103: , यशायाह 1:18,43:25 , रोमियो 4:7-8 , इब्रानियों 8:12, 1यूहन्ना 2:12 ,।

दूसरो को क्षमा करना : मत्ती 6:12-15 , 18:23-27,18:35 , इफिसियों 4:32 , मरकुस 11:25-26 , कुलुस्सियों 3:13 , नीतिवचन 24:17-19 , रोंमियो 2:23-24 ,।

मनुष्य स्वंत्रत इच्छा : नीतिवचन 1:23 , यशयाह 31:6 , यहेजकेल 14:6, 18:32, मत्ती 18:3, यूहन्ना 6:29 ,19:1, 1युहन्ना 3:23,।

विवसथा से स्वंत्रता , विधिपरायणता :विवसथा जिसको पुरा करो या कुछ भी नहीं (मत्ती 5:19)। विवसथा केवल इजराइल को दी गई थी (लैव्यवस्था 26:46, रोमियो 2:14 , 9:4)। विवसथा मसीह के द्वारा पूरी की गई (गलतियों 3:13) विवसथा को रद किया गया (रोमियो 6:15)।

परमेशवर प्रार्थनाये सुनता और उत्तर देता है : मत्ती 7:7 , लूका 11:9 , यिर्मयाह 33:3 ,

परमेशवर हमेशा हमारे साथ हैं : मत्ती 28:20 , इब्रानियों 13:5, मत्ती 18:20 , यूहन्ना 14:16 , 21, प्रकाशितवाक्य 3:20 ,

परमेशवर उनका न्याय करता हैं जिन्होंने कभी नहीं सुना : रोमियो 1:18-25 ,2:1,14-16 , प्रेरितो के काम 14:15-17 , इब्रानियों 11:6,।

परमेशवर अपनी सुरक्षा और देख-रेख का वादा करता हैं : व्यवस्थाविवरण 33:27 , उत्पत्ति 17:1, यिर्मयाह 23:24,32:7,।

परमेशवर हमारे लिए लड़ने का वादा करता हैं : 1शमूएल 14:47 , यिर्मयाह 1:8 ,।

परमेशवर हमारे बोझ उठाने में हमारी मदद करेगा : नहेममयः 4:10, मत्ती 11:30, भजन सहिता55:22 ,।

परमेशवर तुम्हारी सब जरूरते पूरी करेगा : फिलिप्पियों 4:19 , भजन सहिता 84:11, रोमियो 8:32 , 1शमूएल 12:24 ,

एक- त्रिएक परमेशवर : मत्ती 28:19, 3:16-17 , उत्पत्ति 1:26,11:7 ,

परमेशवर सृष्टि से अलग और ऊपर : यूहन्ना 4:24 , इब्रानियों 1:3,1|

परमेशवर, सृष्टिकर्ता : उत्पत्ति 1:1,26-27 , नहेमायाह 9:6 , भजन सहिता 24:1,8:3, निर्गमन 20:11, 1शमूएल 2:8, भजन सहिता 33:6,146:6 , यशायाह 40:12 यिर्मयाह 51:15, प्रेरितो के काम 14:15 , इफिसियों 3:9,

परमेशवर उपस्थित: उत्पत्ति 1:1-3 , रोमियो 1:20

परमेशवर,अनुग्रह : रोमियो 3:2,4:2,11:5, इफिसियों 2:8, 2 पतरस 3:18 , उत्पत्ति 6:8 ,भजन सहिता 51:1, यूहन्ना 1:16, रोमियो 5:2, 2 कुरिन्थियों 12:9 , इब्रानियों 4:16

परमेशवर पवित्र : निर्गमन 15:11, लैव्यवस्था 19:2 , हबक्कूक 4:16 ,1:13, प्रकाशितवाक्य 4:8।

परमेशवर व्यक्तिगत : व्यक्तिगत (यूहन्ना 4:24 , इब्रानियों 1:3) सर्मण करता हैं (यशायाह 43:25, यिर्मयाह 31:20 , होशे 8:13) बोलता हैं (निर्गमन 3:12 , मत्ती 3:17 , लूका 17:6) , जानता हैं (यिर्मयाह 29:11, 2 तीमुथियुस 2:19 , 1यूहन्ना 3:20)

परमेशवर सृष्टि में दिखाई दिया : प्रकृति : रोमियो 1:19 -20 , भजन सहिता19:1-2

परमेशवर,संप्रभु : निर्गमन 18:11,15:18, मत्ती 6:10 , 13,11:25, व्यवस्थाविवरण 4:39 , 1इतिहास 29:11, दानिय्येल 6:26 , यूहन्ना 7:17 , इफिसियों 1:11, 1तीमुथियुस 2:4, 6:15 , प्रकाशितवाक्य 19:6 , 1इतिहास 29:11, दानिय्येल 6:26 , यूहन्ना 7:17 , इफिसियों 1:11, 1तीमुथियुस 2:4,6:15 , प्रकाशितवाक्य 19:6 ,।

मार्गदर्शन का वादा किया जाता हैं : भजन सहिता 32:8, यशायाह 30:21, 58:11, लूका 1:7-9 , यूहन्ना 15:13

स्वर्ग : मत्ती 22:30 , लूका 20:34-38,23:43, प्रकाशितवाक्य 7:9,8:1, कुरिन्थियों 13:12 , 15:42 , फिलिप्पियों 1:23 , 1यूहन्ना 3:2 , 2 इतिहास 2:6 , मरकुस 16:9 , व्यवस्थाविवरण 26:15 , अय्यूब 3:17 , भजन सहिता17:15, 73:24, मत्ती 3:17 , 5:3 , लूका 16:19-3 12:32, यूहन्ना 14:1-3 , 1थिस्सलुनीकियो 4:17 ,।

नरक और सजा : सच हैं प्रकाशितवाक्य 20:15 ,14:9-11, मत्ती 5:22 , 8:11-12 ,13:42,50,22:13, मरकुस 9:44-48 , लूका 3:17

पवित्र आत्मा विश्वासियों के अंदर : 1कुरिन्थियों 1:21, 5:5 , 1यूहन्ना 2:20 ,27, यूहन्ना 3:8,7:37-39,19:16-17, रोमियो 5:5 , 8:9 , 1कुरिन्थियों 2:12 , 6:17-19 ,12:13 , यूहन्ना 7:37-39

पवित्र आत्मा : यूहन्ना 14:16-17 ,26,15:26,13:26,20:22,16:8-14 , 1कुरिन्थियों 2:10-15 , मत्ती 1:18 , 3:11, 16-17,10:20 , यशायाह 63:10, प्रेरितो के काम 5:3-4 , इफिसियों 4:30,प्रेरितो के काम 8:29,13:2 , लूका 12:12, यूहन्ना 16:7-18,

समलिंगकामुक्ता : पाप हैं रोमियो 1:26-32, 1कुरिन्थियों 6:9-10, लैव्यव्यवस्था 20:13, उत्पत्ति 2:18-23 , तीमुथियुस 1:8-10

यीशु में आशा : भजन सहिता 31:24,71:5,62:5-8 ,।

ढ़ोग :मसीहयत को रद नहीं करता मत्ती 23:23-36 , यशायाह 29:13 , मत्ती 7:23 , नीतिवचन 26:23-26 , तीतुस 1:16 , 1यूहन्ना 1:8,10

परमेशवर , इस्राएल की विशेष्य सुरक्षा : यशायाह 11:11-14 , 19:19-25 , उत्पत्ति 12:3, यिर्मयाह 48:12-15 , यहेजकेल 29:9-10 , 35:1-5 ,

यीशु , शैतान,दानवो से ऊपर हैं : मरकुस 1:21-28, 5:1-20,7:24-30,9:20-27 , 2 कुरिन्थियों 12:7-10 , इब्रानियों 2:14-15 , लूका 9:1-2,10:17-20, प्रकाशितवाक्य 12:7-11,20:7-15, मरकुस 1:21-28 ,5:1-20, 7:24-30, 9:20-27 ,।

यीशु हमारे लिए हिमायत कर रहा हैं और लगातार प्रार्थना कर रहा हैं : 1यूहन्ना 2:1, इब्रानियों 7:25,

यीशु ईश्वरत्व : यूहन्ना 1:1,34,5:17-23 , 10:30,36:38,12:45,13:20,45,14:1,9:17:11,21-22,20:24-31, इफिसियों 1:20-23 , फिलिप्पियों 2:6-10 , इब्रानियों 1:18, मत्ती 1:23 , 3:17,8:29 ,

यीशु पूर्ण से मनुष्य : गलतियों 4:4, लूका 2:52,19:10, यूहन्ना 1:1, मत्ती 26:12,4:2 , इब्रानियों 4:15 ,

यीशु-परमेशवर के पास जाने का एक मात्र मार्ग : यूहन्ना 14:6,8:24,3:16-18,10:30 , मत्ती 26:63-64 , प्रेरितो के काम 4:12, गलतियों 1:8, 1कुरिन्थियों 3:11, 1यूहन्ना 2:23 , लूका 10:16 ,।

यीशु का शारीरिक और शाब्दिक तौर से जी उठना : लूका 24:39-44, यूहन्ना 20:27-28 , मरकुस 16:14 , 1 कुरिन्थियों 15:15

यहूदी परमेशवर के चुने हुए लोग : व्यवस्थाविवरण 14:2, 7:6-7,10:14-15, यहेजकेल 22:17-22

परमेशवर यहूदियों की विशेष सुरक्षा : यशायाह 11:11-14 , 19:19-25 , उत्पत्ति 12:3, यिर्मयाह 48:12-15 , यहेजकेल 29:9-10,35:1-5

विवसथा (शरा) शरीयत :से विश्वासी आजाद हैं, एक ऐसा हिस्सा जिससे पुरा करो या कुछ नहीं (मत्ती 5:9) शरा केवल यहूदियों को दी गई थी (व्यवस्थाविवरण 26:46 , रोमियो 12:14 , 9:4) शरा मसीह के द्वारा पूरी की गई (गलतियों 3:13) शरा को खत्म किया गया (रोमियो 6:15)
मृत्यु के बाद जीवन : मत्ती 17:1-3 ,22:32 , यूहन्ना 11:25 , उत्पत्ति 35 :18,2 कुरिन्थियों 5:8 , फिलिप्पियों 1:21-23 , यूहन्ना 3:36 , लूका 23:43

जीवन: केवल परमेशवर ही बन सकता हैं , यिर्मयाह 10:16, कुलुस्सियों 1:16-17 , अय्यूब 33:4 , उत्पत्ति 1:26, भजन सहिता 8:6 ,

ज्योति : यूहन्ना 3:16-21,8:12,12:46, , 1यूहन्ना 1:5-7

विवाह :केवल विश्वासी दूसरे विश्वासियों में करते हैं 2 कुरिन्थियों 6:14-18 ,

भौतिकवाद के प्रति व्यवहार **:** नीतिवचन 30:8-9, 10:15,28:22 , मत्ती 19:23-24 , 2 कुरिन्थियों 9:8 , 2 थिस्सलुनीकियो 3:10 , सभोपदेशक 10:19, प्रेरितो के काम 8:20, यिर्मयाह 9:23-24 , मरकुस 8:36-37 ,

आश्चर्यकर्म: वास्तव में हुए, मत्ती 8:14-15,26-27,9:2,6-7,27-30, मरकुस 1:32-34, यूहन्ना 2:1-11, 6:10-14 , यूहन्ना 10:24-25,20:30-31,3:2 ।

पैसे के प्रति व्यवहार : नीतिवचन 30:8-9,10:15,28:22 मत्ती 19:23-24 , 2 कुरिन्थियों 9:8, 2 थिस्सलुनीकियो 3:10 , सभोपदेशक 10:19 , प्रेरितो के काम 8:20 , यिर्मयाह 9:23-24 , मरकुस 8:36-37 , पैसे , भौतिकवाद , पैसे के प्रति व्यवहार , पैसे को इकठा करना , पैसे का इस्तेमाल करना आदि। के लिए इस पुस्तक के अंत में आयते देखे

उदेश्य परमेशवर के सामने मायन रखते हैं : याकूब 4:2-3 , नीतिवचन 16:2 , 1कुरिन्थियों 4:5, इब्रानियों 4:12-13 ,

प्रकृति परमेशवर को दिखाती हैं : रोमियो 1:19-20 , भजन सहिता19:1-2 ,।

चिंता करने की कोई जरूरत नहीं : मत्ती 6:25, 34 , 1पतरस 5:7 , यशायाह 40:11, मत्ती 5:38-39 , भजन सहिता37:1-9 , यहूदा 24

मनोगत और आत्माओ से संचार गलत : लैव्यवस्था 19:31,20:6-7,27, निर्गमन 20:27,22:18 , व्यवस्थाविवरण 18:10-12 , 1इतिहास 10:13-14 , यशायाह 8:19-20 , गलतियो 5:20, प्रकाशितवाक्य 21:8 ,

शन्ति हर हलात में उपलब्ध है : यूहन्ना 14:27 ,रोमियो 5:1, कुलुस्सियों 1:20 , यशायाह 26:3 , फिलिप्पियों 4:6-7 , मत्ती 11:28-30 , 2 तीमुथियुस 1:7

वादा की होइ शन्ति : फिलिपीयो 4:6-7, यशायाह 26:3 , रोमियो 15:13 , भजन सहिता 85:8,29:11, इफिसियों 2:14-15 , यशायाह 53:5, कुलुस्सियों 1:20 , यूहन्ना 14:27 , रोमियो 5:1, यूहन्ना 16:33, गलतियों 5:22-24 , फिलिप्पियों 4:7 ,

प्रार्थना वादा करती है : मत्ती 18:19,21:22 , मरकुस 11:24 , यशायाह 65:24 , यिर्मयाह 33:3 , मत्ती 7:7-8 , यूहन्ना 14:13 , 1 थिस्सलुनीकियो 5:17 , इफिसियों 8:18 , इब्रानियों 4:16 , फिलिप्पियों 4:6-7 , 1तीमुथियुस 2:1,

मसीहीयों का दुबारा जी उठना : भजन सहिता 49:15 ,16:9-10, लूका 14:14 , 2 कुरिन्थियों 4:14 , अय्यूब 14:12-15 ,19:25-27, यूहन्ना 5:28-29 , प्रेरितो के काम 24:15 , 1कुरिन्थियों 15: , फिलिप्पियों 3:20-21। 1थिस्सलुनियो 4:16-18 ,यूहन्ना 11:23-26 ,

यीशु का शारीरिक और शाब्दिक तौर से जी उठना : लूका 24:39-44, यूहन्ना 20:27-28 , मरकुस 16:14 , 1 कुरिन्थियों 15:15

उदार केवल विश्वास के द्वारा यह बहुत आसान हैं : मत्ती 19:16-26 , इफिसियों 2:8-9 , यूहन्ना 20:31

उदार केवल यीशु के माध्यम से : यूहन्ना 14:6,8:24,3:16-18,10:30 , मत्ती 26:63-64 , प्रेरितो के काम 4:12 , गलतियों 1:8, 1कुरिन्थियों 3:11, 1यूहन्ना 2:23 , लूका 10:16

उदार एक मुफ्त उपहार : रोमियो 6:23 , इफिसियों 2:8-9 , यूहन्ना 1:12-13

उदार पाप के लिए प्रायशिचत : निर्गमन 12:13, मत्ती 26:28,28:5-7 , लूका 24:39 , यूहन्ना 1:29,19:33 , रोमियो 5:6-8 , इफिसियों 1:7 , कुलुस्सियों 1:20 ,

उदार हर एक जो आता हैं उसके लिए उपलब्ध हैं : यहेजकेल 35:11, रोमियो 10:13 , तीमुथियुस 2:4, 2 पतरस 3:9 , मत्ती 12:50 , 18:4, 10:32 ,

उदार कभी भी खो नहीं सकता : यूहन्ना 3:16-18 , 36,5:24,6:37-40,10:27-30,20:30-31, रोमियो 8:14-16,28,37-39,14:8, 2 कुरिन्थियों 1:21-22 , इफिसियों 1:13-14 , 3:12 , इब्रानियों 6:4-6 , 2 तीमुथियुस 2:11-12 , मत्ती 12:20 , भजन सहिता37:24, रोमियो 4:6-8, 8:37-39 ,

उदार, मनुष्य अपने आप को नहीं बचा सकता : भजन सहिता 49:7, लूका 11:24-26 1पतरस 1:18-19 , 2 पतरस 2:20-22

उदार , मनुष्य की आवश्यकता : यशायाह 64:6, रोमियो 5:12 , इब्रानियों 9:27 , 1यूहन्ना 1:10

उदार अच्छे कामो से नहीं कमाया जाता : इफिसियों 2:8-9 , रोमियो 3:20,27 ,4:4 -5 , 5:8, 6:2,32,11:6 , गलतियों 3:11, याकूब 2:10 , 1पतरस 2:24 , तीतुस 3:5

उदार, हर जन स्वर्ग नहीं जायेगा : मत्ती 25:46 , लूका 16:19-31, यूहन्ना 3:18, 36,5:28-29,6:37-40 , 1यूहन्ना 3:10 , प्रकाशितवाक्य 20:10-15

उदार यीशु द्वारा प्रदान किया जाता है : यूहन्ना 3:15-18,36,14:7,10:10, यशयाह 53:5-6 , 1यूहन्ना 4:10 , 5:12 , रोमियो 5:6-8 , 1पतरस 2:24 , 1:18-19, 2 कुरिन्थियों 5:21, 1यूहन्ना 5:11-13, प्रेरितों के काम 4:12 , इफिसियों 1:7

उदार विश्वास से प्राप्त होता हैं : रोमियो 10:13, यूहन्ना 5:24 , प्रेरितो के काम 17:31, गलतियों 3:22 , 5:6 , यूहन्ना 3:16

शैतान हारा हुआ : कुलुस्सियों 2:15 , भजन सहिता 3:4 , 6:18-10 ,72:12-14 , 82:1-7

शैतान हरा रहा है : मत्ती 4:1-11, यूहन्ना 15:7 , 17:15 , इफिसियो 6:10-18 , 2 थिस्सलुनीकियो 3:3 , याकूब 4:7 1पतरस 5:8-9 , 1यूहन्ना 4:4,5:18 , रोमियो 8:28 , 2 कुरिन्थियों 2:7 , यहूदा 8-9

शैतन का गिरना: य्हेजेकेल 28:11-19, यशायाह 14:12-20 , 1 तिमोथिअस 3:6

शैतान का सुभाव : यहेजकेल 28:12-14 , इफिसियों 6:11-13 , अय्यूब 1:12 , यहुना 8:44, 1 यूहन्ना 3:8 , 1पतरस 5:8 , प्रकाशितवाक्य 12:10 , 32 थिस्सलुनीकियो 3:3

शादी के बाहर यौन वर्जित : मत्ती 5:27-32,19:9,1कुरिन्थियों 6:9-10 ,18-20 , इब्रानियों 13:4 , निर्गमन 20:14 ,व्यवस्थाविवरण 5:16,24:1-4 , लूका 18:20 , याकूब 2:11, 2 पतरस 2:14 , 1कुरिन्थियों 5:9 , इफिसियों 5:3 , लैव्यवस्था 20:10, 1थिस्सलुनीकियो 4:3 ,

यौन , शादी में प्यार दिखाने को : उत्पत्ति 3:16 , 18:12,26:8-9, 2 :23-25 , व्यवस्थाविवरण 24:5,34:7, नीतिवचन 5:15-19 , श्रेष्ठगीत 7:6-10 , इब्रानियों 13:4 , 1कुरिन्थियों 7:3-4 ,

योन संबंधत परीक्षाओ पर विजय : 2 कुरिन्थियों 5:17 , भजन सहिता 51:10-12 , रोमियो 12:1, याकूब 4:6-8 , 1यूहन्ना 4:4 , फिलिप्पियों 4:19 , मत्ती 16:23 , भजन सहिता 139:23-24 , 2 कुरिन्थियों 5:17, 12:9-10 , 1पतरस 5:8-9 , अय्यूब 31:1मत्ती 5:27-28 ,

पाप परिभाष्त : रोमियो 3:23 ,14:23, गलतियों 5:19-21, याकूब 4:17, यूहन्ना 3:4 , पाप का दाम यीशु के द्वारा चुकाया गया, निर्गमन 12:13 , मत्ती 26:28,28:5-7, लूका 24:39, यूहन्ना 1:29,19:33 , रोमियो 5:6-8 , इफिसियों 1:7 , कुलुस्सियों 1:20 |

मनुष्य की पापी दशा : मरकुस 10:18, यशायाह 53:5-6 , 59:1-2 , रोमियो 3:10-12,23,6:23, याकूब 2:10 , 1यूहन्ना 1:8-10 ,3:4,5:17 ,

विश्वासियों के पाप सदा के लिए गायब हो गए : यूहन्ना 3:18,36 , 2 थिस्सलुनीकियो 1:7-9 , रोमियो 8:1, 2 पतरस 3:9-14 , प्रकाशितवाक्य 20:11-15

परमेशवर सब दुखो में मदद करेगा : नीतिवचन 10:22 , यशायाह 53:4 , यूहन्ना 16:22 , 2 कुरिन्थियो 6:10 , 1 थिस्सलुनीकियो 4:13 , प्रकाशितवाक्य 21:4

आत्मा नींद गलत : मत्ती 17:1-3 , 22:32 , यहुना 11:25, उत्पत्ति 35:18 , 2 कुरिन्थियों 5:8 , फिलिप्पियों 1:21-23 , यहन 3:36, लूका 23:43 ,

माध्यम , मनोगत गलत : लैव्यव्यवस्था 19:31,20:6-7,27 निर्गमन 20:27 , 22:18 , व्यवस्थाविवरण 18:10-12 , 1इतिहास 10:13-14 , यशायाह 8:19-20 ,गलतियों 5:20 , प्रकाशितवाक्य 21:8 ,

आध्यात्मिक युद्ध के वाद याद रखने को आयते इस पुस्तक के अंत में देखे **:**

बुराई और दुख क्यों हैं : यूहन्ना 9:1-3 , 2 पतरस 3:9 , प्रकाशितवाक्य 21:1-8 , रोमियो 8:28 ,

दुख सहन के प्रति व्यवहार : फिलिप्पियों 1:29,3:10, 1पतरस 2:19-21, 5:10 , यूहन्ना 15:2,13:7 , इब्रानियों 12:7,11:25 , प्रकाशितवाक्य 3:19 , रोमियो 8:18, 28 , 2 तीमुथियुस 2:12 , 1पतरस 4:12-19 , इब्रानियों 2:10 ,5:8 , 2 कुरिन्थियों 4:17 , मत्ती 5:45 ,

कष्ट का कारण : अय्यूब 1:2 , इब्रानियों 5:8, 2कुरिन्थियों 12:7 , 1पतरस 1:7-8 , यूहन्ना 16:33 , 2 कुरिन्थियों 4:8-9 , 1:3-24 , 2 तीमुथियुस 2:10-13 ,

गलत विचारो को रद करने वाले विचार : 2 कुरिन्थियों 10:5 , भजन सहिता139:23-24 , 141:3-4 , यशायाह 26:3-4 , रोमियो 12:2 , इफिसियों 4:22-24 , फिलिप्पियों 3:18-21,

कष्ट आत्मिक विकास लाने को आते हैं : भजन सहिता 119:67,61,64,94:12 , यशायाह 48:10 , रोमियो 5:3 ,

त्रिएक : मति 28:19,3:16-17 , उत्पत्ति 1:26 , 11:7 ,

सत्य : भजन संहिता 51:6 ,25:5 , यूहन्ना 14:6 , 16:13,1:17 ,8:44,14:17,17:17 , मत्ती 5:33-37 , यूहन्ना 8:31-36 , इफिसियों 4:25 ,

आध्यात्मिक युद्ध में विजय : इब्रानियों 2:14-15, लूका 9:1-2 , 10:17-20 , प्रकाशितवाक्य 12:7-11,20:7-15, मत्ती 25:41,

हमारे लिए विजय सुनिश्चित हैं : 1कुरिन्थियों 15:57 , रोमियो 8:37 , 1इतिहास 29:11, 1यूहन्ना 5:4, 18 , 2 इतिहास 32:8 , प्रकाशितवाक्य 3:5 , 21:7 ,

वादा की गई विजय : 1कुरिन्थियों 15:57 , रोमियो 8:37, 1इतिहास 29:11, नीतिवचन 21:31, 1यूहन्ना 5:4,18 , प्रकाशितवाक्य 12:11,15:2 , रोमियो 8:37 , 2 कुरिन्थियों 2:14 , यूहन्ना 16:33 ,

हम कभी भी परमेशवर से अलग नहीं किये जायेगे : रोमियो 8:35-39 , यूहन्ना 10:27-29 ,, ,3:36, 5:24

जो मांगते हैं उनके लिए बुद्धि का वादा : याकूब 1:5,3:15-17 , लूका 16:8, 21:15 , 1कुरिन्थियों 2:5 , 3:19

परमेशवर की समर्थ का वचन : इफिसियों 6:17 , इब्रानियों 4:12, यशायाह 55:11, 59:21, भजन सहिता 119:81,105,11-112 , नीतिवचन 30:5 , विलापगीत 2:17,3:37, मत्ती 24:35 , यूहन्ना 5:24,8:51,15:7 , रोमियो 10:17 ,

जो कुछ आप पमरेस्वर की मदद से संभाल नहीं सकते उसका आपको सामना नहीं करना पड़ेगा 1कुरिन्थियों 10:13 |

परिशिष्ट 4

<u>क्या परमेशवर चाहते हैं की हम आज भाषाओ में बोले ?</u>

आत्मा में बपितस्मा , दूसरी आशिष , भाषाएँ और ऐसी बाते।

यह क्या ही विशेषता भरा विषय है ! यह इतना विभाजनकारी हो जाता हैं। मुझे यकीन हैं की परमेशवर अपने बच्चो के बीच इसे नफरत की निगाह से देखता हैं। मैं इसे विभाजनकारी होने के लिए नहीं लिखता, लेकिन परमेशवर को हम में से प्रत्येक को बाइबिल पर आधारित इस मामले में अपने निष्कर्ष पर आने की आवश्यकता है। मैं यह समझाने की कोशिश नहीं करता कि अन्य लोग जो महसूस करते हैं वह क्यों और कैसे महसूस करते हैं कि उनकी अगुवाई हो रही हैं , मैं किसी भी तरह से उनकी निंदा या न्याय नहीं करता , मैं केवल इतन जनता हूँ कि परमेशवर अपने वचन से मेरी कैसे अगुवाई कर रहा है। मैंने जितना संभव हो सकता था , उतने खुले दिल से इसका पूरी तरह से अध्यन किया हैं, यहाँ तक यह कामना करते हुए की इस से ऊचे सतर आध्यात्मिकता और विजय के न हो जो मुझे इससे ऊचे सतर पर लें जाऐ। फिर भी मुझे लगता है कि परमेशवर मुझे अपने वचन से दिखा रहा हैं कि यह चीजे न तो मेरे लिए हैं और न उन लोगो के लिए हैं जिनका मैं चरवाहा हूँ। पेंटेकोस्ट और चारसमेटक दायरों में क्या हो रहा हैं, मैं नहीं जानता। मैं केवल यह जनता हूँ कि वह मेरी अगुवाई करता हैं।

बाइबिल सिखाती हैं कि प्रत्येक विश्वासी उद्धार के क्षाण **पवित्र आत्मा से भरा जाता हैं**। (1कुरिन्थियों 10:1--आगे ,12:3,6:19, इफिसियों 4:5 , रोमियो 5:5) जब तक पवित्र आत्मा उनमें वास न करे कोई भी बच नहीं सकता (यूहन्ना 7:37-39 , 14:16-17 , 1कुरिन्थियों 6:19-20) इस के आगे यह नहीं कि पवित्र

आत्मा अधिक प्राप्त करना हैं बल्कि हम पवित्र आत्मा को अधिक मिल रहे हैं। जैसे हम अपने पूर्ण समर्पण करते हैं औअर पवित्र जीवन जीते हैं वो हमें भरता है और हमरे माधयम से काम करता है।

तब प्रेरितो के काम अध्याय 2,8,10 और 19 के बारे क्या है, तब उन लोगो पर पवित्र आत्मा आया जो पहिले से विश्वासी थे ? प्रेरितो के काम 2 आधाय केवल एक बार होनी वाली और फिर दुहराए जाने वाली क्रिया नहीं हैं (यहा तक कि आधाय 8,9,10,19 में भी ऐसा कभी नहीं हुआ) ठीक त्रिएक के दूसरे व्यक्ति के संसार में प्रवेश कि तरह जो एक ही बार कुआंरी के माध्यम से तीसरे व्यक्ति में भी केवल एक बार होने वाली क्रिया के माध्यम से संसार में प्रवेश किया। जब यीशु पुन जीवत हो कर प्रेरितो के पास , पौलुस या यूहन्ना के पास पतमस के टापू पर आया तो वह कुंआरी के माध्यम से नहीं आया जैसे गौशाला की चरनी में आया था। प्रेरितो के काम 2 अधयाय भी न दुहराए जाने वाली क्रिया हैं।

प्रेरितो के काम आधाय एक संक्रमण हैं , पुराने नियम के कानून से जब पवित्र आत्मा केवल कुछ विश्वासियों को कुछ समय के लिए प्रेरित करता था , नये नियम के अनुग्रह तक जहाँ पवित्र आत्मा सब विश्वासियों को सदा के लिए प्रेरित करता हैं। प्रेरितो ने पहले ही यीशु के दावों को स्वीकार कर लिया था और पुरानी वेवस्था में बच गए थे, तब जब नई व्यवस्था शुरू हुई और आत्मा आया तो स्वाभाविक रूप से उसे प्राप्त करने वाले वो पहले व्यक्ति होंगे। यह कोई दुहराने वाली क्रिया नहीं हैं। हम प्रेरितो के काम 8 आधाय में इस सत्य को आधे यहूदियों और आधे गैर यहूदियों पर लागु होता देखते हैं , प्रेरितो के काम 10 आधाय में फिलस्तीन के गैर यहूदियों पर और आधये 19 में फिलस्तीन के बाहर गैर यहूदियों पर लागु होता देखते हैं। वह समान्य थे, यह दर्शाने के लिए के अब यहूदी और गैर यहूदी एक ही हैं क्योकि यह एक ही क्रिया दोनों पर समान्य रूप से लागु हुई थीं। प्रत्येक, पुराने नियम के कानून को नये नियम के अनुग्रह में तब्दील होने को दर्शाता हैं। परिवर्तन का निश्चित समय होना चाहिए था यह दिखाने के लिए की बदलाव किया गया हैं और उन विश्वासियों ने इसे स्वीकार किया। तो भी जो हुआ वह इतना भिन था ताकि यह मालूम हो जाये कि यह आधय 2 का दोहराया जाना नहीं हैं। वो केवल समय थे जब आधाय 2 से मेल खाती कुछ क्रियाऐ हुई किसी नये समूह के लिए और वह केवल एक बार ही हुआ जैसा सुसमाचार यरेशलम से बाहर फैलने लगा। बाकि सब को पवित्र आत्मा उद्धार के क्षण ही प्राप्त हुआ।

भाषाएँ पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का सबूत नहीं है। बहुतो ने पवित्र आत्मा प्राप्त किया परन्तु भाषाएँ नहीं : पेंतेकुस्त के दिन 3000 लोगों ने (प्रेरितों के काम 2 :38-41) शुरुआती कलीसिया के विश्वासिओं ने (प्रेरितों के काम 4 :31) सामरियों ने (प्रेरितों के काम 8 : 14 -17) पौलुस ने (प्रेरितों के काम 9:17 -18) यहुन्ना बपतिस्मा देने वाले ने (लुका 1 :15 -16) यीशु (लुका 3 :21 -22 , 4 :1 ,14,18,21) और अन्य बहुतों ने (प्रेरितों के काम 4 :8 ,31 , 6:5 , 7:55 , 11 :24, 13 :9 , 52) भाषओं में बोलना न तीतस और न तिमोथियस में कहीं बताया गया है कि ये अगुवापन के गुणों में एक है। बाइबिल ये बताती है की वफादारी पवित्र आत्मा के वास करने का सबूत है, भाषाएँ नहीं (इफिसिओं 5 :18 से आगे तक पड़े)

प्रेरितो के काम और कुरिन्थियों में भाषाएँ जिनका जिक्र हैं एक ही हैं। यूनानी भाषा का शब्द (गलोसा का अर्थ हैं जब भाषा , भाषा का बोलना, भाषा) इसका उपयोग हमेशा विदेशी झात भाषाओ के लिए होता हैं जिनका जिक्र कुरिन्थियों और प्रेरितो के काम में किया गया हैं। (प्रेरितो के काम 2:6-11) और (1 कुरिन्थियों 14:21 ,12:10) यह जाहिर हैं कि प्रेरितो के काम में सुनने वालो ने उनको उन भाषाओ में बोलते सुना जिनका उनको पहले कोई ज्ञान नहीं था। इसका कोई संकेत नहीं हैं कि कुरिन्थियों ने जो अनुभव किया वह इससे अलग था। यह केवल कुरिन्थियों की कलीसिया थी जहाँ भाषओं के उपयोग का उल्लेख किया गया हैं और फिर कई सुधार करने की आवश्यकता सामने आई क्योकि यह बहुत ही शारीरिक कलीसिया थी (1 कुरिन्थियों 3:1-3)

भाषाओँ का उदेश्य यहूदियों को दिखाना था कि परमेशवर का न्याय उन पर था। उन पर अन्य जातियों पर परमेशवर का वचन फैलाने की जिन्मेदारी थी और वह इसमें असफल रहे। परमेशवर उने दिखाना चाहता था की इसमें वह उन का न्याय कर रहा था अपना वचन गैर यहूदियों को देकर , गैर यहूदी भाषाओ में। इसकी भविष्वाणी यशायाह 28:9-12,33:19 से आगे , और यिर्मयाह 5:15 , व्यवस्थाविवरण 28:49 में की गई थी। पौलुस कहता हैं कि भाषाए ने इस भविष्वाणी को पूरा किया (1 कुरिन्थियों 14:21-22) जब यहूदियों ने इस चिन्ह पर ध्यान ना दिया और तोबा ना की तो परमेशवर ने उन पर अपना न्याय भेजा जब 70 ए.डी में हैकल बर्बाद कर दी गई। 70 ए.डी के बाद कलीसिया में भाषाओ में बोलने का कोई सबूत नहीं हैं। चिन्ह अपने मतलब से पहले आते हैं बाद में नहीं। पौलुस ने कहा भाषाए थम जायेगी (1 कुरिन्थियों 13:18-12) यूनानी शब्द पाउ माधय सवार में हैं, वह अपने आप बंद हो जायेगी और फिर शुरू नहीं होगी। इतिहास केवल बहुत कम बहुत अलग-अलग ,और बहुत मामूली रूप से प्रेरितो के काम से वर्तमान तक भाषाओँ के आरम्भ को दर्ज करता हैं। यह समूह प्राय: किसी ना किसी अन्य महानताओं में विधर्मी थे। जाहिर तौर पर भाषाये थम गई हैं। क्योकि उनका उदेश्य पूरा हो चूका हैं इसलिए ऐसा कोई संकेत नहीं हैं कि वह पुन शुरू होगी। जब योएल 2 आधाय कलेश के बाद पवित्र आत्मा के आने की बात करता हैं तो भाषाओँ का कोई जिक्र नहीं करता।

तब उनके बारे क्या हैं जिनके पास अनुवाद / व्याख्या करने का उपहार हैं ? सबसे पहले इसके लिए यूनानी शब्द किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जो किसी गायत भाषा का अनुवाद कर रहा हो जैसे अंग्रेजी से हिंदी। विदेशी भाषाओ का उपयोग उपसिथत यहूदियों को परमेशवर के निर्णय दिखाने के लिए था। और परमेशवर के संदेश की समग्री परमेशवर की खुश खबरी थी जिसे यहूदियों को फैलाना चाहिए था। क्योकि एक अज्ञात भाषा में बोलने का मतलब बैठे गैर यहूदियों के लिए कुछ भी नहीं होगा, पौलुस कहता की उपहार का उपयोग होने ऐ पहले कोई दोभाषिया उपस्थित होने चाहिये (1 कुरिनथियों 14:26-28) यह कुर्न्थियों में रहने वाले कमजोर और अपर्फ्किव विश्विसिओं के लिए जरूरी था (14: 20-22)जो परमेशवर के सत्य को नहीं जानते थे (12:13) इसे नुयूनतम (14:6-12) रखा जाना था कियोंकि यह एक काम कोटी उपहार था (1कुरिनथियों 14:4) पौलूस ने भी आपनी दोभाशी कुशलता का उपयोग गैर यहूदी अरधानालय में किया यहुदीओं की सभाओं में नहीं (14:39) ।

आज इस मापदंड को भाषओं पर लागु करना यह दर्शता है की जो आज हो रहा है उस से अलग है जो उस समय हुआ था (गयात विदेशी भाषा यहुदिओं पर परमेशवर के निर्णय को दिखाना, केवल उपस्थित

यहुदिओं के साथ पर्योग किया जाना एक काम कोटी उपहार के रूप में दीखता है, जिसे न्यूनतम रखा जाना था)।

भाषाए कोई आसमानी भाषा नहीं है। यूनानी भाषा का शब्द इसे स्पष्ट करता हैं कि वह एक ज्ञात भाषा हैं (प्रेरितो के काम 2:6-11 , 1 कुरिन्थियों 12:10,14:21) यह कराहने (आहे भरने) से अलग हैं जिसका जिक्र रोमियो 8:26 में हैं जिनके बारे में कहा जाता हैं कि वह अप्रत्य हैं (बोलने में सक्षम नहीं) स्वर्गदूतो की बोली (1 कुरिन्थियों 13:1) एक अतिशयोक्ति हैं (एक बिंदु बनाने के लिए अति प्राचीन) जैसे पहाड़ो को हिला देने वाला विश्वास। इसके आलावा जब स्वर्गदूत बोलते थे बाईबल में तो वह सुनने वालो की भाषा में बोलते थे।

भाषाए कोई निजी प्रार्थना भाषा नहीं हैं। सभी आध्यात्मिक उपहार दूसरो की खातिर दिए जाते हैं ,यह नहीं कि एक के पास उपहार हैं इसलिए कुरिन्थियों में हमेशा एक दुभाषियों के उपस्थित होना पड़ा (1 कुरिन्थियों 12:7,12,14:19,27) और (1 कुरिन्थियों 14:26-28) हर बार जब बाईबल में भाषाओँ का उपहार दिया गया तो यह समूह को दिया गया ना केवल किसी व्यक्ति विशेष को। और यह हमेशा एक समूह में उपयोग किया जाता था नाकि व्यक्तिगत तौर पर लेखो के अनुसार। भाषा बोलने वाले के वश में होनी चाहिए नाकि उसके वश से परे (1 कुरिन्थियों 14:28-33) साथ यह भी ध्यान रहे कि भाषाए गैर विश्वासियों के लिए एक चिन्ह के रूप में थी विश्वासियों के लिए नहीं (1 कुरिन्थियों 14:22) यीशु ने खुद उन शब्दों में प्रार्थना करने से रोका जिनको हम खुद नहीं समझते (मत्ती 6:7) पौलुस ने कहा कि जब उसने भाषाओ में भी प्रार्थना भी तो वह समझता था (1 कुरिन्थियों 14:15) जब पूछा गया कि हम कैसे प्रार्थना करे तो यीशु ने प्रभु की प्रार्थना दी भाषाए नहीं।

आज भाषाओँ में बोलना का खतरा। पौलुस कि शैतान नकलची योग्यता से सुचेत करता कि जैसे उसके पास अन्य पंथो और मनोगतो में हैं (1 कुरिन्थियों 12:2-3) भाषाओँ को सब से छोटा उपहार माना गया हैं क्योकि यह आत्मकेंद्रता हैं और सीधे - सीधे भावनाओं पर जोर देना है जो अन्य लोगो को रास्ते से भटकने में उपकरण बन ससकता है (2 कुरिन्थियों 6:11-12 , रोमियो 16:17-18) हमे समझ में प्रार्थना करने को कहा गया हैं (1 कुरिन्थियों 14:13-17) और अपने आत्मिक उपहारों को नियंत्रित करने को कहा गया हैं (1 कुरिन्थियों 14:28-40) परमेशवर अपनी मर्जी से चुनता हैं की कौन सा उपहार किसे देना हैं (1 कुरिन्थियों 12:7,11,18,28) हमे कहा गया है कि हम किसी विशेष उपहार की तलाश ना करें (1 कुरिन्थियों 12:31 ,14:1-4) भाषाओँ का बोलना आत्मिकता की जगह ले सकता हैं (14:26-28) सबसे नाशक यह एक झूठी सुरक्षा प्रदान कर सकता हैं , उनके लिए जो अपना विश्वास इसमें रखते हैं यह इस बात का सबूत है कि परमेशवर उन्हें प्यार करता हैं और कबूल करता हैं। अधिकंश जो अन्य भाषा बोलने का अभयास करते हैं , वे मुक्ति की अनंत सुरक्षा में विश्वास नहीं करते हैं , इसलिए उनका अन्य भाषा में बोलना परमेशवर द्वारा उनको सवीकार किये जाने का परमाणबन जाता है। हमारा विश्वास क्रूस पर यीशु के कार्य में होना चाहिए ना भाषाओँ में बोलने में हमारी क्षमता पर। वो जो उपहार रहित है समूह के बाकि हिसे के साथ फिट होने के लिए दबाव महसूस कर सकते हैं।

मुझे उन लोगो द्वरा बताया गया है जो मुझ से अधिक अन्य भाषाओँ की आत्माओ से निपटने में अनुबवी है की यह दानव अक्सर दुवार्पल (संतरी) होते हैं और अन्य दानवो को अन्दर रखते है । दूसरों को भी बुलाते हैं और उन्हें बहार निकलने से रोकते हैं ।

परिशिष्ट 5

क्या यह परमेशवर की इच्छा हैं की आज हर कोई चंगा हो जाये ?

आज ऐसे लोग हैं जो मानते हैं कि यीशु ने क्रूस पर न केवल पाप के लिए भुगतान किया बल्कि हमारी बीमारी के लिए भी भुगतान किया। वे कहते हैं कि प्रत्येक विश्वास से प्राप्त होता हैं , यदि आपके पास इसे प्राप्त करने के लिए पर्यापत विश्वास हैं। विश्वास की कमी , विश्वास के इन लाभों के हानि का कारण बनती है। उनका दवा है कि कुछ विशेष रूप से चंगाई देने के लिए उपहारित हैं और जो उनके पास आते हैं उन्हें ठीक कर सकते हैं। वे कहते हैं कि परमेशवर ने बाईबल में चमत्कार किये और वह आज भी चमत्कार करने वाला परमेशवर हैं।

इनके बारे में क्या हैं ? क्या यह सच हैं ? यह सिर्फ एक अमुख्य मुद्धा नहीं है ,बल्कि हमारे उद्धार और मसीही जीवन में बहुत केंद्रीय हैं। क्या परमेशवर की संप्रभुता या मनुष्य की स्वंत्र इच्छा अंतिम और अंतिम निर्णयिक कारक हैं ? यह परमेशवर की संप्रभुता होनी चाहिए। यीशु के लिए जीने का मकसद हमारे उद्धार को खोने का डर नहीं होना चाहिए। यीशु के लिए जीने का लक्ष्य समस्या मुक्त जीवन नहीं होना चाहिए। दर्द और पीड़ा का सामना पर्यापत विश्वास से नहीं करना चाहिए ताकि परमेशवर इसे हटा दे (या असफलता और अपराधी भावनाओ के साथ जीना अगर इसे नहीं हटाया जाता और हम मानने लगे कि यह इसलिए हुआ हैं क्योकि हमारे पास पर्यापत विश्वास नहीं हैं यह हमारी गलती हैं) विश्वास में चंगा करने वालो के इन दावों के बारे में क्या हैं ? बाईबल क्या कहती हैं ?

क्या चंगाई का उपहार आज के लिए भी हैं ? जब कि यह सच है कि यीशु ने और प्रेरितो ने लोगो को चंगाई दी , यह प्रमाणित करने के लिए एक चिन्ह के रूप में किया गया था कि वे परमेशवर की ओर से थे (मत्ती 12 : 39) यह परमेशवर का तरीका था कि लोग आसपास के नकली लोगो की बजाये उनकी बात सुने। जब वह पूरी तरह से प्रमाणित हो गए तो चिन्ह का कोई कारण नहीं रह गया था। 35 ईस्वी में सभी चंगे हो गये परन्तु 60 ईस्वी में कुछ चंगे नहीं हुए (इपफ्रोदितुस, पौलुस के शरीर में काँटा) 67 ईस्वी में बहुत कम लोग चंगाई पाते थे (मेलीटस की बीमारी पर टरोफ़ीमस रह गया था , तीमुथियुस का पेट रोग चंगा नहीं हुआ आदि) यरूशलेम जहाँ बहुत चमत्कार का द्रश्य ,सटीफनस को पत्थरवाह किये जाने के बाद वहां कोई भी चमत्कार नहीं हुआ था। लोगो के पास सबूत थे लेकिन उन्होंने ख़ारिज कर दिया। याकूब की पत्री जो बाईबल में एक पुरानी पुस्तकों में से हैं बताती हैं कि अगर कोई बीमार हो तो उसके लिए प्रार्थना करनी चाहिए (याकूब 5 : 14)

क्या हमे आज भी चमत्कार देखने चाहिए जैसे बाईबल के समय में होता था ? वासतव में अगर आप बाईबल में सभी चमत्कारों को सूचीबद्ध करते हैं तो आप पाएंगे कि उनमें से लगभग सभी तीन कालविधियो के लिए उपयुक्त हैं। वे पूरे इसिहास में समान रूप से फैले हुये नहीं हैं , लेकिन मुसा / यहोशु, एलियाह / एलिशा और यीशु/ प्रेरितो के समय में समूहबद्ध हैं। इनमें से तीन समय पर एक नई उलझन बनी इस लिए परमेशवर ने एक नया सन्देश नए संदेशवाहक के माधयम से भेजा जिसे उसने चमत्कारों और चिन्हो से प्रमाणित किया। चमत्कारों का एक और समय आ रहा हैं जिसे कलेश कहा जाता हैं।

क्या चंगाई के लिए विश्वास एक पूर्वपेक्षा हैं ?

यीशु ने चंगाई के लिए विश्वास को जरूरी नहीं बनाया। बहुतो के पास विश्वास नहीं था जिनको उसने चंगा किया। कुछ के पास , एक बीमार व्यक्ति को यह भी नहीं पता था कि वह कौन हैं। सूखे हाथ वाला व्यक्ति और जलोधर वाला व्यक्ति उपस्थित धर्मगुरुओ के लिए एक चिन्ह के रूप में चंगा किया गया था। उन्होंने चंगा होने के लिए नहीं कहा। जिस अपंग को पतरस और पौलुस ने चंगा किया उसने कोई विश्वास नहीं दिखाया। यकीनी तौर पर जिन दानवग्रस्तों को छुड़ाया गया और मृतकों से वापिस बुलाया गया उन्होंने विश्वास का प्रयोग नहीं किया। फिर कुछ ऐसे हैं जिनका विश्वास द्रढ़ था और वे चंगे नहीं हुऐ , सटीफन , पौलुस , तिमोथीयस , अय्यूब , दाऊद , एलिशा आदि।

क्या आज भी चंगाई बाईबल के समय की तरह हैं ?

आज के चंगा करने वालो को यीशु और प्रेरितो की विशेषताओं को पूरा करना चाहिए ताकि वह दावा कर सके कि वो वही कर रहा हैं जो उस समय किया गया था। यीशु और प्रेरितो ने एक शब्द या छूह लेने से चंगा किया जब और जहाँ जरूरत थी। उस समय कोई विशेष स्थान या समय नहीं होता था, कोई मंत्र या संगीत नहीं था , कोई चालबाजी नहीं थी , कुछ भी नहीं था। क्या आज के चंगाई देने वाले अस्पतालों के कमरों और हाल में जाते हैं और उन्हें खाली कर देते हैं ? यीशु ने और पतरस ने ऐसा किया था। यह भी कि बाईबल में चमत्कार तुरंत होते थे, धीरे-धीरे नहीं। चंगाई ना तो खोने वाला और ना दावा किये जाने वाला उपहार था। वहाँ चंगाई तुरंत और पूर्णता से होती थी , हिस्सों में नहीं और ना ही यह कभी खोई जाती थी। हर कोई चंगाई पाता था कोई स्क्रीनिंग नहीं होती थी। बिना किसी फर्क पड़ने से 100 % चंगाई होती थी। जैविक रोग ठीक होते थे, अंग तुरंत वापस बढ़ते थे , इतने मजबूत कि वह चल फिर सके ,आँखे खुलती थी , तुरंत चलना फिरना होता था और स्वस्थ तवचा पैदा होती थी। तब मरे (मृतक) भी जीवित होते थे। आज की विश्वास आधारित चंगाई इन विशेषताओं को बिलकुल पूरा नहीं करती।

क्या परमेशवर चंगा नहीं करता ? हाँ एक संप्रभु परमेशवर हमेशा चंगा कर सकता हैं। लेकिन वह हमेशा तैयार नहीं हैं। चंगाई आरक्षस्त नहीं हैं। चंगाई हमारे पर्यापत विश्वास पर आधारित नहीं हैं। यीशु और उसके प्रेरितो द्वारा चमत्कार एक चिन्ह के रूप में इसका प्रमाण करने के लिए होते थे कि जो दिखाई नहीं देने वाली आत्मा हैं, वह चंगाई दे सकता हैं परमेशवर चंगा कर सकता हैं ,और करता हैं लेकिन वह दूसरो को ऐसा करने का उपहार नहीं देता, और न ही वह कहता हैं कि यह उसके लोगो के लिए एक संस्तुत मानक हैं।

बीमार होने पर हमे क्या करना चाहिए ? जब हम बीमार होते हैं तो पहले यह सुनिश्चित करना अच्छा होगा कि यह पाप या अवज्ञा के कारण नहीं हैं। यदि कोई पाप हैं जिसको परमेशवर चिन्हित करने के लिए बीमारी का उपयोग कर रहा हैं तब उसका अंगीकार करें और परमेशवर क्षमा करेगा और उस बीमारी का उपयोग भलाई के लिए करेगा (रोमियो 8 : 28)। प्रार्थना करना और परमेशवर से कहना कि अगर उसकी इच्छा है तो इसे चंगा करें यह अच्छी बात हैं। हमे उसकी इच्छा के आधीन होना हैं , न कि यह माँग करना कि वह वही करे जो हम चाहते हैं। उसे हमारे विकास और उसकी महिमा के लिए दर्द और पीड़ा का उपयोग करने के लिए कहें (ताकि हम और दूसरे लोग उसके प्रावधान और शांति के माध्यम से उसकी महानता को देख सके) और (हमे उस पर और अधिक भरोसा करने और यीशु की तरह बनने वाले बनाये)। उचतम उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करें : आहार , आराम ,व्यियाम और चिकित्सा सहायता। समझे कि सभी उपचार अंततः : परमेशवर को ओर से आते हैं। हालाकि परिणाम उसकी इच्छा पर छोड़ दें।

माना , कि विश्वास और चंगाई का यह पूरा विषय एक भर्मित करने वाला और अपराधबोध पैदा करने वाला क्षेत्र हो सकता हैं। किसी भी दृष्टिकोण का समर्थन करने के लिए विशिष्ट आयते पाई जा सकती हैं। हालाकि, इन बातो के बारे में बाईबल और इसकी शिक्षाओ का अवलोकन निश्चित रूप से चंगाई के उपरोकत दृष्टिकोण की पुष्टि करता प्रतीत होता हैं। हमेशा याद रखे हमारा विश्वास यीशु में होना चाहिए। वह हमारे विश्वास का विषय हैं , नाकि कोई मानव व्यक्ति या समूह, कभी नहीं। अपना विश्वास यीशु पर रखो अपने विश्वास में नहीं। वह वो हैं जिसकी तरफ हमने अपनी आँखे लगानी हैं। और जिसकी महिमा करनी हैं। हमेशा उस पर अपनी आँखे लगाये रखे। उस पर भरोसा करें और उसकी सेवा करें चाहे कुछ भी हो।

कवर किये गए विषयो का वर्णानुक्रमिक सूचकांक

गोद लिए गए बच्चे :- 39
पुश्तैनी हमला :- 34
फ़रिश्ते हमारे मददगार :- 9
क्रोध :- 28 , 48
प्रेमशवर की कवच :- 82
यीशु से अधिकार और शक्ति :- 5
जारी जंग :- 81
विश्वासी दानवग्रस्त हो सकते हैं :- 21
सत्य की पेटी (कमर बंद) :- 56
याद करने को बाईबल आयते :- 91
उपयोग के लिए बाईबल आयते :- 90
धार्मिकता की झिलम :- 84
दानवग्रस्ति के कारण :- 32
बालक और माता - पिता :- 76
बचपन की पहुच , तोडना :- 36
बच्चे और दानवग्रस्ति :- 57
मैं कैसे सुनिश्चित करूँ कि मैं मसीह हूँ ? 102

छुटकारे में चर्च की भूमिका :- 62
समझौता ना करें :- 48
बाध्यकारी विचार :- 22
शाप :- 34
काटना , आत्म-विकृति , आत्महत्या :-28
उद्धार , इसे बनाये रखना :- 53
दानवग्रस्ति परिभाषित :-13
दानवग्रस्ति वर्णित :- 23
दानवग्रस्ति का सबूत :- 29
विश्वासियों की दानवग्रस्ति :- 33
दानव दुश्मन सैनिक :- 10 -12
व्यवस्थाविवरण 18 :9 -13 :- 32
मुक्ति का संदेह :- 69
भावनाये और मन :- 14
इफिसियों 6 : 10 -18 :- 54 -60
अनंत सुरक्षा :- 69
दानवग्रस्ति का प्रमाण
उपवास :- 46 - 47
डर :- 16 - 17
डर पर काबू पाना :- 69 -70
दानवग्रस्तों की स्वंतत्र इच्छा :- 18
पीढ़ीगत हमला :- 22 -23
परमेशवर हमारा कमान अधिकारी :- 5
आत्मिक विकास :- 52-53
आज के दिन सभो के लिए चंगाई :-80- 81
मुक्ति का टोप :- 57
दूसरो की सहायता करना :- 65 -67
पवित्र आत्मा के प्रति समर्पण :-54
घर और संपत्ति पर हमला :- 21 -22
पति और पत्नी :- 49
मूर्ति पूजा :-28
अनैतिकता :- 29
बाईबल आयतो की सूची :- 71 - 76
परमेशवर को सुनना :- 64
मार्शल आर्ट :- 57
मैसोनिक भागीदारी :- 34
याद रखने की आयते :- 60 - 61
मानसिक बीमारी :-15 -16
मन और भावनाये :- 14
नया युग :- 35
जनूनी विचार
मनोगत और दानवग्रस्ति :- 32 - 34
पिछले काम और पाप :- 24 -25
शारीरक चंगाई और छुटकारा :- 45 -46

प्रार्थना कैसे करें :- 62 -65

प्रार्थना एक शास्त्र :- 58
संपत्ति और ग्रहि हमले :-21 -22
दानवग्रस्ति की जिम्मेदारी :- 18
कमरे पर हमला :- 21 -22
उद्धार एक मूल आवश्यकता :- 3
उद्धार खो नहीं सकता :- 69
उद्धार कैसे सुनिश्चित :- 68
शांति के चपल :- 57
शैतान हमारा दुश्मन :- 7 -10
शैतानियत :- 35
मानसिक विकार (एक मानसिक रोग) :- 16
गुप्त समाज :- 54
आत्मछवि पाप :- 29 -30
यौन संध :- 24
विश्वास की झिलम :- 75
पाप जो दानवग्रस्ति का कारण होते हैं :- 27 -31
आत्मसबंद :- 26
छुटकारे का स्रोत 37 -38
आत्मिक विकास :- 52 -53
आध्यात्मिक युद्ध क्यों ? 4
पवित्र आत्मा को सर्मपित :- 54
आत्महत्या :- 17 -18
वचन की तलवार :-58
आज हमारे लिए भाषाये ? 77 -79
साममिक सूचकांक :- 71 -76
सत्य को जानना :- 14 -15
आत्मिक युद्ध में विश्वासी :- 2
परमेशवर क्यों दुःख आने देता हैं :- 52 -53
परमेशवर क्यों हमे संर्घष में आने देता हैं ? 52 -53
आध्यात्मिक युद्ध क्यों ? 4
पति और पत्नी :- 49
परमेशवर का वचन :- 60 - 61

छुटकारे के लिए प्रार्थना 30
पुश्तैनी हमले के लिए प्रार्थना 23
यौन पापो के लिए प्रार्थना 29
पापो की क्षमा के लिए प्रार्थना 30
शादी के लिए प्रार्थना 49
मैसनरी भागीदारी के लिए प्रार्थना करना 34
नये युग और मनोगत के लिए प्रार्थना करना 35
मनोगत भागीदारी के लिए प्रार्थना करना 35
गुप्त समाजो के लिए प्रार्थना करना 34
आत्मब्रबादी के लिए प्रार्थना करना 18

पुत्र या पुत्री के लिए प्रार्थना करना 48
आत्मिक युद्ध के लिए प्रार्थना करना 64 - 65
परमेशवर के कवच के लिए प्रार्थना करना 58 - 59
डर पर विजय के लिए प्रार्थना करना 17
घर या कमरे की शुद्धि के लिए प्रार्थना करना 22
दूसरो को क्षमा करने के लिए प्रार्थना करना 28 , 41 SSP 09.07.2021